MSS No. 313 Subject Hindi Kavya

Name of MSS कविप्रिया

Author N. G.

Period Folios 37

Script DEVANAGIRI Source Prithi Pal Singh

Missing Folios

कविप्रिया ; अपूर्ण
भिन्न पत्रक॥ ल०अ०१२पं०प्र०पृ०

ह० ल०

No 14

A. no. 313

12034

Missing
32, 33
38 34

64

कवि
प्र
१

विमुष को अर्थ॥ छिन्न भयो है मुष जाको यह अर्थ॥
... विना माया को होय जात है॥ ऐसो अर्थ किये
विना ... नहीं मिले॥२॥

ॐस्वस्तिश्रीगणेशायनमः ॐश्रीराधाकृष्णचरणकमलेभ्योनमः॥ सकलविघ्नविनाशकेभ्योनमः
अथकविप्रियासकललिख्यते॥ दोहा॥ गजमुषसनमुषहोतहीविघ्नविमुषह्वैजात ज्यौंपगपरतप्रियागमग
पापपहारविलात॥१॥ दोहा॥ बानीजूकेवरनजुगसुवरनकनपरमान सुकविसुमुषिकुरुषेतपरहोतसुमेरस
मान॥२॥ कवित्त॥ सत्वसत्वगुनकौकिसत्यहीकीसत्तासुभसिद्धकीप्रसिद्धकीसुबुद्धिबृद्धिमानिये॥
ज्ञानहीकीगरमाकिमहिमाविवेकहीकीकिंदरसनहीकोदरसनउरआनिये॥ पुन्यकोप्रकासवेदवि
द्याकोविलासकिधौंजसकोनिवासकेसोदासजगजानिये॥ मदनकदनसुतवदनरदनकिधौंविघ्नवि
नासनकीविधिपहिचानिये॥३॥ दोहा॥ प्रगटपंचमीकौंभयौकविप्रियाअवितार सोरहसैअठावना
फागुनसुदिबुधवार॥४॥ दोहा॥ नृपकुलवरनौंप्रथमहीअरुकविकेसववंस प्रगटकरीजिनकविप्रि
याकविताकोअवितंस॥५॥ नृपवंसवर्नन॥ ब्रह्मादिककेविनयतेहरनसकलभुवभार सूरजवंसक
यौप्रगटरामचंद्रअवितार॥६॥ तिनकेकुलकलिकालरिपुकहिकेसवरनधीर गहिरवारविख्यात
जगप्रगटभयेनृपवीर॥७॥ करननृपतितिनकेभयेधरनीधर्मप्रकास जीतसबैजगतीकयौवारानसी
निवास॥८॥ प्रगटकरनतीरथभयेजगमैजिनकोनाम तिनकेअर्जुनपालनृपभयेमहोनीग्राम॥९॥
गढकुढारतिनकेभयेराजासाहनपाल सहजकरनतिनकेभयेकहिकेसवरिपुकाल॥१०॥ राजानौनि

सुकवि जो हैं सु
गनेस जी सोई सु
कुरुषेत्र तिनके
अविवेक के मुष
के समान है
पाप दोनों है॥३॥

1A गद्योभयेतिनकेपूरनसाज नौनिधियोकेसुतभयेप्रथुज्यौंप्रथवीराज॥११॥ रामसिंघराजाभयेति
नकेसूरसमान राजचंद्रतिनकेभयेराजाचंद्रसमान॥१२॥राजामेदनीमल्लभयेतिनकेकेसवदास॥
अरिमदमरदनमेदनीकीनौयमप्रकास राजाअर्जुनग्यौभयेतिनकेअर्जुनरूप श्रीनारायनकोम
याकहैसकलभवभूप॥१३॥महांगानषोडसदयेजीतीजगदिसचारि चारयौवेदअठारहैसुनेपुरा
नविचारि॥१४॥रिपुषंडनतिनकेभयेराजाश्रीमलषांन जुद्धजुरेनमुरयौकहूजानतसकलजहान॥१५॥
नृपप्रतापरूद्रसुभयेतिनकेजनुरुद्रनरूद्र दयादानकोकलपतरुगुननिधसीलसमुद्र॥१७॥नगारञ्जो
डछोरजिनरचेजगमेजागतकिति कुल्लदत्तमिश्रहिदईजिनपुरानकीहंति॥१८॥भरतषंडतिनकेभ
येतिनकेभारतचंद देसरसानलजानजिहिफेल्योज्योंहरिचंद॥१९॥सेरसाहअसलेमकेउरसालीसम
सेर एकचतुर्भुजहीनयोताकोसिरतिहवेर॥२०॥उपजनपायोपुत्रतहिगयोसप्रभुपरलोक सोदरम
युकरसाहितवभूपभयोभुवलोक॥२१॥जिनकेराजरसावसैकेसवकुसलनिसान सिंधुदिसानहिवार
हूपारवजायनिसान॥२२॥तिनपरिचढिआयेजुरिपुकेसवगयेनिहारि जिनपरचढआपुनगयेआयेतिने
लर सेंघारि॥२३॥सवरसाहअकवरअवनिजीतलईदिसचारि मधुकरसाहनरेसगढतिनकेलीनेमारि॥२४॥
षांनगनेसुलतानकोराजाराचतवादि हाय्योमधुकरसाहसौंआपुनसाहिमुरादि॥२५॥सांध्योस्वारथ

कवि सू २ २

साथहीयरमारथसोंनेह गयोसुप्रभुवैकुंठमगवृह्मरंध्रतजिदेह॥२६॥तिनकेदूलहरामसुतलहुरे
हारिलराव रिपुखंडनकुलमंडनोपूरनपुहमिप्रभाव॥२७॥रनरूरोरनसिंहपुनिरतनसेनपुनिईस वो
ध्योप्रापजलालहीवांनोजाकेसीस॥२८॥ईद्रजीतरनपुनिसत्रुजीतवलवीर वीरसिंघ [illegible] प्रमसिंहपु जीत सो ३
निहरिसिंह [illegible] रनधीर॥२९॥मधुकरसाहितनेसके रतनेभयेकुमार रामसाहिराजाभयेतिनकेवुद्धिअ
पार॥३०॥जुरवाहिरजहिईनहांकेसवदेसविदेस सवकोऊयहईकिहेजीत्योरामनरेस॥३१॥रामसाहि
सोमरमापमिनपूजेस्रान जाहिसराहतसर्वदाअकवरसोसुलतान॥३२॥करजोरेठाढेजहांआठोदिस
केइस ताहिनाहांवेठकदईअकवरसेअवनीस॥३३॥जाकेदरसनकोंगयउंउघरेदेवकिवार उपजीदीप
तिदीपकीदेषनपेकहिवार॥३४॥ताराजाकोराजअवराजतजगतीमांहि राजाएनाराबसवसोवतजाकी
छांहि॥३५॥तिनकेसुतजारहिभयेजेठेसाहसंग्राम दछिनदछिनराजसौंतिनजीत्योसंग्राम॥३६॥भर
तषंडभूषनभयेतिनकेभारतसाहि भारथभरीरथपारथहिउनमाननसवनाहि॥३७॥सुतसोदरन्त्रपराम
केजद्यपिवहुपरिवार तदपिसवैईद्रजीतसिरराजलाजकोभार॥३८॥कल्पवृछसोदानदिनसागरसो
गंभीर केसवसूरोसरसोअर्जुनसोरनधीर॥३९॥नाहिकछोवाकेमलसोगहहीनोन्त्रपराम विधिज्यो
साधतवैठतिहकेसववामअवाम॥४०॥कह्योअवारोराजकैसासतसवसंगीत ताकोदेषतईद्रज्योंई
द्रजीतरनजीत॥४१॥वालवहिरूमवालसवरूपसीलगुनहद्द जदिपिमरयोअवरोयषटपातुरियरमप्रसिद्ध॥४२॥

रायप्रवीनप्रवीनप्रति नवरंगरायसुवेस॥ अतिविचित्रनपढतनिपुनलोचनललितसुदेस॥४२॥
सोहतसागररागकीनानानतरंगनरंग। रंगरायरंगावलिनगतिरंगमूरतअंगगअंग॥४४॥तंबी
नुवरसारकासुखसुरनसौंलीनदेवसभासीदेषियेरायप्रवीनप्रवीन॥४५॥सत्यारायप्रवीन
जुनसुरनतरुसुरतरुगेह द्रिजीननतासौंवधंकेवदासहिदेह॥४६॥नरीकिन्नरीअसरीसु
रीहहनसिरनाय नवरसनवधाभक्तिसौंराजतनवरंगराय॥४७॥हावभावसंभावनादि
लासमसुषदाय चियमनदेतफुलायगतिनवरंगनवरंगराय॥४८॥भेरवमुनगोरीसज
तसुरनरंगिनीलेषि चेद्दकलासीसोहियेनेनवचित्रादेषि॥४९॥नयननवयनरतिसयनस
मन्मथनवचित्रानाम जयनसीलपतिमैनमनसदाकरतिविश्राम॥५०॥नागरनागररागकी
सागरनानतरंग पतिपूरनससिदरसदिनवाढननानतरंग॥५१॥तानैताननतरंगकीतनुतनुवेध
तिप्रान कलाकुसमसरसरनकीअतिअयाननतनत्रान॥५२॥रंगरायकरअंगुरीसकलगुननि
कीमूरि लागतमृदमृदंगमुषसवदरहितभरपूरि॥५३॥रंगरायकरमुरजमुषरंगमूरति
पदचारु मनोपढ्यौहैमाषहीसवसंगीतविचारु॥५४॥अंगजितेसंगीतकेगावतगुनीअन
त रंगमूरतिअंगअंगप्रतिराजनमूरतवंत॥५५॥नाचतगावतपढतिसवसवैवजावतवीन॥

पर[illegible] प्रवीन कहा वीना तार है / [illegible] सम् कुचा है तिनके मनको / दुख्य होत है ॥ [illegible] / होत है तिन [illegible] ॥५७॥ रायप्रवीन है कि सारदा [illegible] के सौ है सुचिपवित्रता किंवा सिंगार ता सोभ है / कंतिमा [illegible] जो पुस्तक संगीत शास्त्र ता / ये है ॥ फेर [illegible] विषजो हंस [illegible] प्रतापकर के है ताको सुत ईंद्रजित तिनके संग मै है / सो रहत कोसी है ॥ सुचि [illegible] हंसवाहन नाम स्त्रवराज मै है ॥ सुचि की सोभा [illegible] ता सो भ [illegible] / के पुस्तक को लिये [illegible] / जह सजो वाहन [illegible] / [illegible] है ॥ जो [illegible] / चचु [illegible] / सो राजहंस ॥ ३ ॥ / शिवा भवानी है [illegible] / वीन है ॥ [illegible] / [illegible] / तहै या ते वृषभ वे / है वाहन जाको / सको भज है के [illegible] / है है [illegible] / वासुकि नाग लसत है / सो प्रवीन है शिव के [illegible] / सर्वदा सोभत है ॥ रायप्र / वीन के सी है वृषभ जो / यर्थ ताको लिये है [illegible] / के उर को हिय [illegible] जो / वस्तु के फूल की माला है / के प्रवीन है उत्तम कीने / जाके ॥५९॥

तिन मै करत कवित्त इक रायप्रवीन प्रवीन॥५८॥ रायप्रवीन प्रवीन सौ परवीननि को मुख्य । प-
रवीनके सौ कहा परवीननि मनि दुख्य ॥५७॥ रतनाकर लालित सदा परमानंदहि लीन । अमल
कमलकमनीयकर रमा कि रायप्रवीन ॥५८॥ रायप्रवीन कि सारदा सुचि रुचि रंजित अंग । वीना
पुस्तक धारिनी राजहंस सुत संग ॥५९॥ वृषभवाहिनी अंग उर वासुकि लसत प्रवीन । शिव संग सो-
है सर्वदा शिवा कि रायप्रवीन ॥६०॥ सविता जू कविता दई जाकहु परम प्रकास । ताके काज कविप्रिया
कीनी केसवदास ॥६१॥ इति श्रीमद्विविधगणविमलायांकविप्रियायां राजवंसवर्ननं नाम प्रथम
प्रभावः॥१॥ दोहा ॥ ब्रह्मा जू के चित्त तै प्रगट भये सनकादि । उपजे तिनके चित्त ते सब कुल सनोढ की
आदि ॥१॥ परसुराम भृगुनंद तब तिनके पाय पखारि । दये बहत्तरि ग्राम तब उत्तम विप्र विचारि ॥२॥
जगपावन वैकुंठपति रामचंद्र यह नाम । मथुरामंडल मै दये तिन्है सात से ग्राम ॥३॥ सोमवंस जदुकुल
कलस त्रिभुवनपाल नरेस । फेरि दिये कलिकाल रिपु नेई तिन्है सुदेस ॥४॥ कुंभवार उद्देस कुल
प्रगटे तिनके वंस । तिनके देवानंद सुत उपजे कुल अवतंस ॥५॥ तिनके सुत जयदेव जग पाये प्रथ्वी-
राज । तिनके दिनकर सुकुल सुत प्रगटे पंडितराज ॥६॥ दिल्लीपति अल्लावदी कीनी कृपा अपार । ती-
रथ गया समेत जिन अकर करे बहु बार ॥७॥ गया गजाधर सुत भये तिनके आनंदकंद । जयानंद

उद्देस का । उद्धारन जिनके कुल का ४

3A

तिनके भये विद्याजुत जगवंद ॥८॥ भये त्रिविक्रम मिश्र तव तिनके पंडितराय गोपाचल गढ दुर्गपति तिनके पू
जे पांय ॥९॥ भावसर्म तिनके भये तिनके बुद्धि अपार भये सिरोमनि मिश्र सब षटदर्सन अवितार ॥१०॥ मांन
सिंह सों रोस करि जिनि जीतो दिसचारि ग्रामवीस तिनकों दये रांना पाव पषारि ॥११॥ तिनके पुत्र प्रसिद्ध जग कीं
नै हरि हरिनाथ तूंवरपति तिन जिम्रो रसौ भ... लैन... ओ हाथ ॥१२॥ पुत्र भये हरिनाथ के कृस्नदत्त सुभ वेष
सभा साहि संग्राम की जीती गही असेष ॥१३॥ ... तिनकौं वृत्ति पुरान
कीन्ही राजा रुद्र तिनके कासीनाथ सुत सोभै बुद्धि समुद्र ॥१४॥ जिनकों मधुकर साहि नृप बहुत करयो
सनमान जिनके सुत बलभद्र सुभ प्रगटे बुद्धि निधान ॥१५॥ बालहि ते मधुसाहि नृप जिनपै सुनै पुरान तिन
सं८ के सोदर द्वै भये केसवदास कल्यान ॥१६॥ भाषा बोलि न जानई जिनके कुलके दास भाषा कवि भो मंदमति ति
हि कुलके सवदास ॥१७॥ इंद्रजीत ता सों कह्यो मांगन मध्य प्रयाग मांग्यो सब दिन एक रस कीजे कृपा सभा
ग ॥१८॥ यौंही कह्यौ जु वीरबल मांगु जु मन मैं होय मांग्यो तो दरबार मैं मोहि न रोकै कोय ॥१९॥ गुरु करि मा
न्यो इंद्रजित तन मन कृपा विचारि ग्राम दये इकवीस तब ताके पाय पषारि ॥२०॥ इंद्रजीत के हेत पुनि राजा
राम सुजान मान्यो मंत्री मित्र कै केसवदास प्रमान ॥२१॥ इति श्रीमद्विविध भूषन भूषितायां कविप्रयायां क
विवंसवर्ननं नाम द्वितीय प्रभावः ॥२॥ अथ कवि दोष ॥ दोहा ॥ समुझै बाला बालकनि बरनन पंथ अगा
ध कविप्रिया केसव करी छमियो कवि अपराध ॥१॥ अलंकार कविता निके सुनि सुनि विविधि विचार क
विप्रिया केसव करी कविता को सिंगार ॥२॥ सगुन पदारथ अर्थजुत सुबरनमय सुभ साज कंठमाल ज्यों क

कवि मू ४ ५

विप्रियाकंठकरोकविराजमा॥३॥चरणधरतचिंताकरतनींदनभावतसोर सुवरनकोंसोधतफिरतकविविभि
चारीचोर॥४॥राजनरंचनदोषजुतकविनावनिताभित्र वुंदकहालाहेनज्योंगंगाघटअपवित्र॥५॥विप्रन
नेगीकीजियेमहनकरीयेमित्र प्रभुनकृतग्रीवाहियेदोषनसहितकवित्त॥६॥अथदोषनामअंधदोषल
छन॥अथवधिरअरुपंगुनाजिनग्रन्थनकमतिमूढ अथविरोधीपंथकोवधिरसुसदूविरुद्ध॥७॥छंदविरोधी
पंगुगननग्नजुभूषनहीन मृतकहावैअर्थविनुकेसवसुनहुप्रवीन॥८॥कोमलकंजसेफूलरहेकुचदेषत
हीपतिचंदद्विमोहे वानरसेचलचारुविलोचनकोयरचेरुचिरोचनकोहै मांषनुसोंमधुरोअधिरामनकेस
वकोउपमाकहुटोहै ठाढीहेकामिनीदामिनिसीमृगमासिनिसीगजगामिनिसोहे॥९॥अथवधिरसमहूव
रोधी॥सिद्धहिरोमनिसंकररछिसंधारतमाथसमहहमरीहै सुंदरमूरतिग्रानमभूतकीजातिययरीकमैछा
इकरीहै सभ्यविरूपविलोचनसोमतिकेसवदासकीध्यानअरीहै वंदनदेवअदेवसबैमनगोत्रसताअरथं
गधरीहै॥१०॥छंदविरोधीपंगुतोलततूलरहेनज्योंकनकतुलातिलआप त्योंहीछंदभंगकौसुनिनस
केसुतिसाथ॥११॥धीरजमोचनलोचनलोलविलोकिकैलोककीलीकतिछूटी फूटिगयेसुतिज्ञानकेकेस
वआंषिअनेकविवेककीफूटी छोडिदईसरितासवकाममनोरथकेरथिकीगतिषूटी त्यौंनकरैकरतारउक
वारज्यौंचित्रवेषविहारवधूटी॥१२॥अथअलंकारहीननग्नवर्नन॥नोतिनीटकटोरिकेपोलतिजोरिरहेक
रज्यौंनरहेगी पानषवायसुधाधरपानकेपायगहेतैसेहैमनगहेगी केसवचूकसवैसहहोसुषचूमचलेयहपैन
सहैगी वैमुषचूमनदेंक्षितिमोहिकिआपनीधायसौंजायकहैगी॥१३॥अथहीनमृतकेकीलकमालकरोल
सुरीलतिसालविसालनिचालचलीहै हालविहालनिनालतमालप्रवीनकमालकवालललीहै लोलविलो

अथपंथविरोधीअर्थ॥५४

रसमेचमत्कार रूपभूषननहीं॥

लकपोलअमोलकचोलकमीलकलोकललीहैं बोलनिबोलकपोलनिटोलनिगोलकलोलगलीहैं ॥१४॥
दोहा॥अगनंनिकीजेहीनरसअरुकेसवजतिभंग व्यर्थअपारथहीनक्रमकविकुलनजोप्रसंग॥१५॥वर्नअ
योगनकर्नकटुसुनहुसकलकविराज सहूअर्थपुनरुक्तकेछाडहुसिगरेसाज॥१६॥देसविरोधनवरनियेका
लविरोधनिहारि लोकन्यायआगमनिकेनजोविरोधविचारु॥१७॥अथगनअगनवर्ननं॥केसवगनसु
भसर्वदाअगनअसुभउरआनि चारिचारिविधिचारुमतिगंअरुअगनवषानि॥१८॥मगननगनभ
निभगनअरुयगनसदासुभजान जगनरगनअरुसगनसुनितगनहियअसुभवषान॥१९॥मगनत्रिगुरु
गुनत्रिलघुमयकेसवनगनप्रमानु भगनआदिगुरुआदिलघुयगनवषानसुजान॥२०॥जगनमध्यगुरु
जानियेरगनमध्यलघुहोय सगनअंतगुरअंतलघुतगनवहैसवकोय॥२१॥आठेगनकेदेवताजानिये
अरुगनदोषविचार छंदोग्रंथनमैकह्यौतिनकेवहुविस्तार॥२२॥महीदेवतामगनकोनाकनगनकोले
षि जलजियजानहुयगनकोचंदभगनकोदेषि॥२३॥सूरजजानहुजगनकोरगनसिषीमयमान वायु
समुझियेसगनकोतगनअकासवषान॥२४॥अथगनमित्रामित्र॥मगननगनकौंमित्रगन यगनभगन
कोदास उदासीनजतजानियेरसअरिपुकेसवदास॥२५॥अथगनागनफल॥छप्पै॥ भूमभूरिसुषदेयनीर
नितआनंदकारी आगिअंगदहिनदहयसूरसुषसोषैभारी केसवअफलअकासवायुकिलदेसउदासै॥
मंगलचंदअनेकनाकवहुबुद्धिप्रकासै रहिविधिकवित्तसवजाननजहुकरताअरुजाकोकरय नजिपवं
यसवदेवगनिसदासुभासुभफलपरय॥२६॥ द्विगनजोकहूआदिककवित्तकीअगनहोयवडभाग तोतै

कवि मृ ५०

5

ह्रिगनविचारचितकीनोवामुकिनाग॥२७॥मगननमगनकेमित्र ... उदासीनका
नजानियेसत्रु ... दोसदास॥२८॥कवित्त॥मित्रनैजुहोयमित्रवाहैयहूवुद्धिरिद्धिमित्रनैजुदासत्रासजउदैनेन
जानिये मित्रतैउदासगननहोतगोनदुषउदोतमित्रतैजोशत्रुहोयमित्रवंधुहानिये दासनैजुमित्रगनकाजसि
द्धकेसोदासदासनेजोदासवसजीवसवमानिये दासनेउदासहोनधननासत्रासपासदासनैजुशत्रुमित्रसत्रुसौ
वषानिये॥२९॥जानियेउदासनैजोमित्रगननतुछफलप्रगटउदासनैजुदासप्रभुताईये होयजुउदासनेउदास
तोनफलाफलजोउदासहीनेसत्रुतोनसुषपाईये सत्रुनैजोमित्रगननाहिसोअफलगनसत्रुतेजोदासत्रासुव
नितानसाइये सत्रुतेउदासकुलनासहोयकेसोदाससत्रुतेजेसत्रुनासनायककोगाइये॥३०॥गनागनको
उदाहरन॥दोहा॥राधाराधारमनकेमनपठियोहेसाष उद्धवतातुमकौनसौकहोजोगकीराष॥३१॥कहो
कहातुमपाहनेप्राननाथकेमित्र फिरपीछेपछिताहुगेऊधोसमुकोचित्र॥३२॥दोहाद्वूदूउदाहरनआठोआ
ठोपाय केसवगननअगनके समकौवुद्धिसुभाय॥३३॥गुरुलघुभेदसंजोगीकेआदिजुनविंदजुदीरघहो
य सोईगुरुलघुऔरसवकहैसुकविमतिसोय॥३४॥दीरघहूलघुकरिपढेसुषहीसुषतिहिठोर सोईगुरुल
घुऔरसवकहेसुकविसिरमोर॥३५॥पहिलैसुषदेसवहीकोसषीहरिहीहितकेजुहरीमतिमीठी दूजेलैजी
वनमूरअक्रूरगयोअंगअंगलगायअंगीठी अवधौंकिहिकारनऐउठिपायेहेउद्धवलैकरिकूठीवसीठी॥
माथुरिलोगनिकेसंगकीयहवैठकितोहिअजोंनउवीठी॥३६॥संयोगीकोआदिजुनकवहूकिवरनविचारि॥
केसवदासप्रकासवसलघुकरितामहिनिहारि॥३७॥अमलजुन्हाईचंदमुषिठाढीभईअन्हाय सौतिनकेमु
षकमलज्योंदेषगयेमुरझाय॥३८॥अथहीनरसवरननं॥वरननकेसवदासरसजहांविरसहैजाय तांकवित्त

सुगत राधा राधारमन पठियो उद्धवसाष कहो य कहोक प्राननैप्र फिर पीछे जू ऊधो स

॥अथ॥ दीरघ भीलघुकरिपढे लघुहोजहे सो वाही न रहे सो लघु भी चरण केअंतमें गुरुहोतहै॥ औरसवउंक विसिरमत हैतेकेहितहै

सु

छंदकेवल २

चांदनी चंद की

दूतपन्ना४

... नेहवहीसदाही ...
सत्रुहोतीनहीहै

की

हितहोकविवैरये

5A सोहोनरसकेहिनसवैकविराय॥३९॥रसिकप्रिया॥देद्दायिद्दीनौउपारहोकेसवद्दानकहाअ्रहमोललैवैहै दीनेवि
नातौगईजुगईहौगईनगईग्रहीफिरजैहैगोहितवैरकियौवरनीकेहैरहै वैरकैगोरसवेचोगीअहोवेच्योनवैच्यो
नैछाारिनदैहै॥४०॥अथजतिभंग॥औरचरनकेवरनजहिऔरचरनमेलीन सोजतिभंगकवितकहिकेसकेदास
प्रवीन॥४१॥हरिहरिकेसवमदनमोहनव्यनसामसुजान ज्योंब्रजवासीहारिकानाथरटतदिनमान॥४२॥अथ
व्यर्थ॥एककवित्तप्रबंधमेअर्थविरोधजुहोय पूरवपरअनमिलसदाव्यर्थकहेसवकोय॥४३॥छंदमरहटा॥सब
मतुसंघारहुजीवनमारहुसजिजोपाउमराव वहुवसुमतिलीजैमोमतिकीजैदीजैअपनोदाव कोउनरिपुतेरो
सवजगहेरोतुमकहियततुअतिसाप कछुदेहुमगावहुभूषमगावहुहोपुनिपनीअगाप॥४४॥अपार्थ॥लछेन
अर्थनजाकोसमुझियेनाहिअपारथजानि मतवारेउनमत्तसिसुकेसेवचनवषानि॥४५॥पियेलेमनरसिपुकटु
हैअतिसज्वरदेहु अरावतिहरिभावतीदेख्योगजितमेहु॥४६॥अथएकमहीन॥कमहोगुननिववानिकैगनीग
नेकमहीन सोकहीयेकमहीनजगकेसवदासप्रवीन॥४७॥जगकीरचनाकहिकौनेकरी किहिराषनकीजि
यपैजयरी अतिकोयकेकौनसंघारकरै हरिजूहरिजूविधिविधुद्धिररै॥४८॥अथएकदुवर्णप्रयोग॥कहिनेत
नेनीकोलागईसोकहीयेकदुकर्न केसवदासकवित्तमेभूलननाकोवर्न॥४९॥वानरनवन्योवनावनतनसुव
रनवलीविसाल चढियराजमगायकेमानोराजनकाल॥५०॥अथपुनरुक्त॥एकवारकहियेकछूवहुरजु
कहियसोय अर्थहोयकेसबदहूअवससुनिपुनिरुक्तसुहोय॥५१॥मयवायनअरूढईइप्राजअतिसोहिये॥
ब्रजपरकोप्यामूढमेठदसोहिसदेषियै॥५२॥दोषनहीपुनरुक्तकोएककहितकविराज छाडिअर्थपु

गिर ११

कवि
मू
७
7

दीयेयं भैगजुकलसमसागरसिंहप्रमान॥१९॥गुनिमति वैरागर धीरजकोसागरउजागरयवलपरियमगुरपायेज
पलनतरु ज्ञोरवेकौराजेगजराजसमग्रदिगजराजनिकोसिंहसमगायेजू वामनवामदेवकामिनिकोकामदेवरनजयथंभ
रामदेवमनभायेजू कासीसकुलकलसजेबूदीपदीपकेसोदासकोकलपतरुईदुजीतआयेजू॥२०॥वृषभकंधसु
रमेरुसमभुजभुजगग्रहिपरमान उरसमसिलाकपाटअरुगग्रवरत्रियानिसमान॥२१॥कवित्त॥मेरुज्योगंभीरवानी
सुनतसघाप्तिकीनिसुषग्रतिउरनिजवासज्योजरतहे जाकेभुजदंडभुवलोकके ग्रभयभुजदेवदेवदुरजनभुजंगज्यो
डरतहे तोरिवेकोगढतरुहोततहेसिलासरुपरापिवेकोद्वारनिधिवारज्योग्ररतहे भूतलकोईद्रईद्रजीतराजोजुगभु
जकेसोदासजाकेराजराजसोकरतहै॥२२॥इतिश्रीकविप्रियाकविवरस्यालंकारवर्ननंनामचतुर्थप्रभावः॥४॥

ग्रथकविनालंकारवर्ननं॥दोहा॥जदपिसुजातसुलछनीसुवरनसरससुहेत भूषनविननविराजईकविताववनिता

मित॥१॥कविनकहेकविनानिकोलंकारद्वैरूप एककहेसाधारनैएकविशिष्टसुरूप॥२॥समान्यालंकारवर्ननं॥सा
मान्यालंकारकोचारप्रकारप्रकास वर्नवर्न्यभूराजश्रीभूषनकेसवदास॥३॥ग्रथवर्नालंकार॥स्वेतपीतकारेग्र
रनधूमरनीलेवर्न मिश्रिनकेसवदासकहिसातभांतसुभवर्न॥४॥ग्रथस्वेतवर्ननं॥कीरतहरिहयसरदघनज्योन्हज
रामदार हरिहरहरगिरसुरसरसिसुधापयनसार॥५॥वलवकहीराकेवरोकोडीकरकाकांस कुंदकाचुरी

कमलहिमफटिकताभसमकपास॥६॥पांडहाडनिर्यिरचुवरचंदनहंसमुरार छत्रसत्यजुगदूपवुपसषसिहडडमार॥७॥
मेघसुकृतसुचिसतजननसननकेमनिहास सीपचूनमोडरफटिकषटिकाफेनप्रकास॥८॥सुकमुदरसनसुरसरितवा
रनवाजसमेत नारदपारदग्रमलजलसारिहादिसेन॥९॥कवित्त॥कीनेछत्रछितिपतिकेसोदासगनपतिद
सनवसनवसमतिकेयोवाहहे विधिकीनोग्रासनसरासनग्रसमसरग्रासनकोकीनोपाकसासनतुषारहे हरिक
रीसजहरिप्रियाकेतोनामैहरकहीतिलकहराहूकतोहारहे राजादसरथसुतसुनोराजारामचंद्रराववेसुजससवज

मुजात सुंदर जा
मैतरहिहे
जोअनुप्र
स.ले के चले
नाको भंग
ना होय ८

अधीनेसमुदतत्व
स्वपानकरी हसगा
रावती मअमकामहें

हय दि सुकिवाकपल
देव॥कोईसोरनमेति
नकोभीसितकहोहै॥६॥

सेलधरी॥इसीकोसुदरपाकसासनईद्रनेआपनेग्रासनको
दानीहै

जगकर ब्रह्माने वा[illegible]धारनकै। हे जिसका विचार है ?

विलासमहित जो विल[illegible] जासम मैनायक[illegible] विलासकारै है। नायि[illegible]
मैमाविसैसकुरकेलसहै सो हे है सुष मैमुषमै मंद हास को उदय विलासनीके
[illegible] लासी है उदार है निपुन है विलासमैप्रवीन हैं॥ है ममे उदार नाम॥ प्रवीनके ओदात

श्रीलल देव

गको श्रृंगार है॥१०॥ देहदुति हलधर कीने निसकर रकरजगकरवानीवर विमल विचार है मुनिगनि मति मानि हि
जनजनेऊ जानसंषसेषपानिपानि सुषदअपार है केसोदास सविलास विलसै विलासिनीनि सुषमुष मंद हुहा
सउदय उदार है एजा दसरथसुतसुनो राजा रामचंद्र रावरो सुजस सवजगको सिंगार है॥११॥ नारायनिकी

उजल नीमति उरअवदात गतिकमलाकी वीना मनि सोभासुभसार है केसवसुरभिके ससारदा सुदेसवेसनारद
केउपदेस विसदविचार है सोनकरिषी विसेष सीरष सिषानिलेषि गंगाकी तरंग देषि विमलविहार है राजा — सिर
दसरथसुतसुनो राजाराम चंद्र रावरो सुजसु सवजगको सिंगार है॥१२॥ विलोकसिरोरुहसेतसमेतनतनूरुह
केसवयौं गुनगायो उठे किधौं आयुकी औषधिके अंकुरसलकि सुष्य समूलन सायो लिष्यो कि यौं रूपके पा
नीपराजयरूपकोभूपकुरूप लिषायो जरासरपंजरजीवजस्यौं कि जराजरकंवर सौपहिरायो॥१३॥ अथज
रावरननलतन रूप॥ अमिरामसुचिक्कनस्यामसुगंधके पामहूने जे सुभायककै प्रतिकूलभये दुगसूलसवे कि यौ मा
लसिंगारके वायककै निजदूतनअंभनजराके कि यौं अवनालिजराजन लायककै सितकेस हिये इहि वेसले — चोपदार
सै जनु सायक अंतक नायक कै॥१४॥ लसै सितलोमसरीरसवैंकि जराजसरूपके पानी लिषायो सुरूपको
किं देसउदासको कीलनिकी लिनकै कुरूपवसायो जरै कि यौकेसवव्याधिनिकी कि यौं आग्रधिके अंकुर अन
नपायो जरासरपंजरजीवजस्यौं कि जराजरकंवरसौं पहिरायो॥१५॥ अथपीतवरनन॥ हरिवाहन विधिहरज
टाहरगहरदहरिनाल चंपकदीपक वीररसमुरंगरमंपुसुरपाल॥१६॥ सुरगिरि भूगोरोचना गंधकगोधनमू — व्रहस्पत ४ दूरा [illegible] सुमेरपर्वत
न वककाकमनसिलसदा द्रापुरवानरसत॥१७॥ कमलकोसके सवसनके सरिकनकसभाग तारे सुष
वपलादसवपीतरपीतपराग॥१८॥ सवैया॥ मंगलहीजु करी रजनी विधि याहीतें मंगलीनामयरयो है दु
सरैदामतिदेहिसवारि उडाय दई इन जायवसौ है रोचनकोरवकेनकी चंपक फूलमै मंगमुवासभरयौ है॥

मधु महुवा [illegible]

जरजरकंवरसोपहिरायो॥ याको अर्थ कि जरा
ने जरीका कंवलपहिरादियाहै॥ किंवा जराने जर
का कंवलपहिराद्दियाहै॥८॥

कवि
मू
८४

रोमराजि कौ मैल मिलै केरहाटके कै करहाटके सो है ॥१९॥ अथ कृसवर्नन ॥ विंध्य हृदयाकास अग्नि प्रजुन पंजन
साप नीलकंठ को कंठ मनि त्रास विसी पाप ॥२०॥ साक सम्ब्र रलंगर मुष राहु मद रोर रामचंद्र दुर्योधन द्रोपदी
सिपु अस्र तम चोर ॥२१॥ जामि जमुना तेल तिल षल मनि सर सिज नीर भील कलि वन नरक मसि मृगमद कज्ज
ल नीर ॥२२॥ मधुप निसा शृंगार रस काली कृष्ण कोल अपजस राहु कलंक कलि लोचन तारे लोल ॥२३॥
मम ग अग्नि कि सान नर लोम कोम दुष मोह विरह यमा दागा पिका कोकिल महिषी लेह ॥२४॥ काच की
वक चकाम मलके की काक कुरूप कलह कुहू कल्माष आदि दै कारे कल्मस रूप ॥२५॥ कवित्त ॥ वैरनि के वह
भानु देषत ही लागि ज्याति कालिमा के मल मुष सब जग जानी है जनन अनेक करि जदिप जनम भरि पोवन हू
छूटत न के सब व षानी हैं निज दल जागै जोति पर दल दूनी होत अचलाचल ति यह अकह कहानी है पूरन
प्रताप दीप अंजन की तजै रेष राजत श्री रामचंद्र पानि कृपानी है ॥२६॥ हंसन के अवतंस रचे रवकी वके
रि सुधा सो सु धारे मठ का वके कलस सो गंगा जू के अंग संग जमुना तरंग बलदेव को वदन रस्यो वारुनी के
रस सो केसव कपाली कंठ कालकूट कट जैसे अमल कमल अलि सोहे ससि ससु सो राजाराम चंद्र जू के
त्रास वस भारे भय भ्रमक हा है भाजे फिरै ऐसे अपजस सो ॥२७॥ अथ आरक्त वर्नन ॥ ईडुगोप ययो नकु जके
सरि कुसम विसेष मदिरा गज मुष विंदु रवि तांबा नख कुलेख ॥२८॥ रसना अधर इंगुर पल कुकुट सिषा
समान मानिक सा रस सीस सुक वानर वदन प्रमान ॥२९॥ कोकिल चाष चकोर पिक पारावत नषनैन पं
धु चरन कलहंस के पकी कंदूरी अैन ॥३०॥ जपा कुसुम दाडिम कुसुम किसक कंज असोक पावक पल्ल
व वीरबहूटि का रंग हरत सब लोक ॥३१॥ रातैं वदन सदुरस कुचीय यमिम जीठ अरुन महावर अगिरन पैग
रू संध्या ईठ ॥३२॥ सवैया ॥ फूले पलास विलास यलीव हि के सव दास हुलास नथोरे सेष असेष सु

लाटा दलितकुमदको सरग
मेहहे।

४१ षानलकी जनुज्वाल विसालचली दिव ओर किंसुक श्रीसुकके तुंडनकी हचि राचे रसातलमै चितचोरे च
तुनिचापवहूदिसडोलतचारुचकोरअंगारनिमेरे॥३३॥ अथ धूम्रवर्नन॥ काककंठ षरमूषिका गरहहै गो
याम निमहर करभ कपोत निश्रादिदै धूम धूमरीपूर॥३४॥ सवैया॥ रामचंद्रिकायां॥ राघव की चतुरंग
चमू सब धूर उठी जलहू थलछाई मानो प्रताप हुतासन धूमसु केसवदास अकास नमाई मेटकै पंच प्रभू
त किंधो विधि रेनुमई नव रीत चलाई दुषनवेदनको भव भारको भूमि किंधो सुरलोक सिधाई॥३५॥ अथ नी
लवर्नन॥ दूर्वा वंस कुवलयन लिन अनिल व्योम नवाल मरकत मन हय सूर के नीलवर्न सेवाल॥३६॥
दुकूल तमु आरदु हूउरधौ उरमै वलकै वलहाई केसव सरज अंसन मैं डमनो जमुनाजलधार यसाई सकर मैल
सिलातलमध्य किंधौ सुक की फिर आवलआई नारदवुद्ध विसारद हीय किंधौ तुलसीदलमाल सुहाई॥३७॥ अ
थमिश्रितसववर्नसहूकथन॥ सिंहहसमहूरिसहूगनिचेदविसखुवैनदेष अरुमकपातुआकासपुन कैलासा
मतिनलेष॥३८॥ कपूर छगनमेघ अरु नागराज गजमेष पयोरासकहिसिंधुसो अरु छिति छीरहिलेष॥३९॥
राहु सीह सिंहीजु भनि द्विविल मदु अनेत अर्जुन कही येस्वेत सौं अरु पारथ वलवंत॥४०॥ हर गज सुरगज समु
किये हरि हरि गज गजजानि कोकिल सौ कलकंठ कहि अलक लहसवषान॥४१॥ कमल नदी वर सहूसों गंगा
सिंधुवषानि नीरदनि कसे दंत सौं अरजु नीरकोदान॥४२॥ अथ स्वेतपीत सहूकथन॥ सिवविरंचसों संमुभ
नरजन रजन अरु हेम स्वर्न सरभसों कहिन हे अष्टापद करनेम॥४३॥ सोमलवंगिक हिचंद्र कलधौत रजन अरु
हेम तारकूट रूपोरुचिर पीत रिक हिकरियेम॥४४॥ अथ स्वेत अर्क सहूकथन॥ स्वेतवस्तु सुचिअग्निसुच समर
मोमहरहेमय पुष्करतीरथ सोकहे पंकज सो सववलोय॥४५॥ हंसहंस रवि वरनीये अर्क फटिक रविमान अ
नुमपमरालिज दुवाके मलकमलजलजान॥४६॥ इतिश्रीकविप्रियायां वर्णालंकारवर्ननोनामपंचम

Marginal notes:

हेमसहूकोजो गअ्र कामसो कीजिये असरसा मओसितजानो किं वाहे सरसहूकरिकै सामओ है तजो देवसभाको जानोजेसे हेमपदहोय यतीचा रधौरीतसाम

नीलकमल ६
लटकरे हाहे॥
कंठ
हाहोगे
ग्रहसयानाम कपकलीकोदसा रहै सम में किरलीक दिनहै
होयनोमसीहेम पदकोहोवेष
चतुर
वन'
सिंहीजसहूराहुका वाचक औ सिंहका वाचक॥
मेघ ५
महेमवे लेजे महा रदो

हरहरगजकथाहरयेक मतुसहूकाजोमजतासीसो स्याम ६
पंकजनाम कमलको॥२॥
कलकंठनामकोकिलाको औहंसको॥
२४३
हरगजसहकरिहरिहई॥ तिनकोगजपैरावत जानियेसोश्वेतहे॥ फेरहरगजसहूको विभागक रिकहितहेहरिसहूसोहरिइंद्र लियेसोश्वेतगज सहूसोगजलहाथीलीनोसोस्याम

...लसी ताकी हिनहे सीताजू के मुष की सोभा के समान ताताचंद्रमा है नाकमल है ... हे ... हे चलुक ... सुप्रसंग ...
जो सवि बिषे फर जल विषे है निवास जाको प्रषीजु आस में प्रकास है जाको ... आकास गंगा के कमल सुरवयु राषन है ... के समान है लक्ष्मी का घर है अरु मार्दे है मुदर है उदर जिसका सूर्य का मित्र है चंद्रमा के
सो है सूर्य की किरनों का मूसनहे सरस है दुषो के दूर करन वाला है प्रथ्वीमंडल का सीमा है वडी बुद्धेकालेक हिनहे ... प्रम मकाहै निवास जिस विषे ... प्रकास है अकास में ... वदन कामकमाहै लक्ष्मी
का भाई है जिसके गुण इस विष्नाहि मुदर है उदर जिसका सूर्य का मित्र है अरसामी है तो भी सीताजू के मुष की सुषमा सो सुभाव भाति सकी उपमा लायक नहीं॥५॥

कवि मू ५ १

अथ वालिवर्नन संपूरन। आवर्त्त। कुटिल। त्रिकोन। सुहृत्त॥ लीछन गुरु। कोमल कठिन। निश्चल चंचल
चित्र॥ १॥ अथ वनेवाह्यवर्नन॥ पीछे पंचन प्रभाव भेद त्रिगुन अन्याल कार के चार प्रकार॥ सुषद दुषद
अरु मद गति। सीतल। नम्र सुरूप॥ क्रूर स्वर सुस्वर। मधुर। अवल। वलिष्ठ। कुरूप॥ २॥ मन्य फूठ मंडल व
रनि अगनि सदागनि दानि अष्ठ विंसविधिमैक है वर्न्य अनेक वषानि॥ ३॥ अथ संपूरनवर्नन॥ इतने संपू
रन सदा वरनहु केसवदास अंबुज आनन आरती संतन प्रेम प्रकास॥ ४॥ अरेषक विनै है रिकरि मंडन स उतह्नि श्रहे दुगयी जिस विषे॥६॥ जल विषे है निवा स जिसका॥६॥
कल दुषषंडन सुकर महि मंडल के कहन अषंड मति। परम सुवास सुनि पीयूष निवास पर पूरन प्रकास
केसोदास भू अकास गति। वदन मदन केसो श्रीजू के मंदन जहि सादर सुमोदर दिनेस जू के मित्र अति ३५८
सीताजू के मुष सुषमा की उपमा को सविकोमल। कमलन अमल रजनिपति॥ ५॥ अथ मंलवरनन॥ मनि सोमा॥८
चूडि आ॥८ ल॥ के मवढुंड सुद्रिका वलया वलय वषानि। आलवाल पर वेषरव मंडल मंडल जानि॥ ६॥ कवित्त॥ मनि
तमाल हृदय ॥ अलजर विमंडल मैया की अर्थ॥ जलज स्थल मैसे से जलजे कमल रविस दीजैस आपने मंडल मैं सामत हे॥ मय आलवाल थल जजलजर विमंडल मैं जैसे मति मोहके वितान की॥ जैसे सुविसेष परिवेष में अमेष रेष वकलेचनी के सीहे प्रगटजो प्रभातेज ताकी जो तालि मुद रहु तिसो भाता सोव लित हे॥८॥
सोभत सुवेष सोम सोमा सुषदान की जैसे वकलोचन के लित करके कन निवाली तल लित दुति प्रगट प्रभा
निकी। केसोदास अरसे राजे रामसेर सिके लाल आसपास मंडलीविराजै गोपकानिकी॥ ७॥ अथ आवर्त्तवर्नन॥
। आवर्त्त वषानियै के सवदास सुजान। वकरी चके आलातन्त्र आनेपत्र षरसान॥ ८॥ दुहूं रूष सुषमातो पल
टन जानी जान देष के अलात जान जोन होन मंद लाजि। केसोदास कुसल कुलाल चक्र चक्रमन चातुरी चिने केचा
ह आनुरी चलत भाजि। चंदजू के चहूं कोद वेषपर वेष को सोदेषत ही रहे येनके हिय वचन साजि। पायष्का डिआ अलिक जुलका भू श्रिगु टिआ
पति पजान दिस दिस रघुनाथजू के छेत्र नर भ्रमत भ्रमीन वाजि॥ ९॥ अथ कुटलवर्नन॥ अलक अलिक भू कु
मुष्ठी॥ २ चिका किसुक सुक मुष लेषि अहिकटाक्ष पनु वीजुरी कंकन भन्नु विसेषि॥ १०॥ वाल चंद्रिका वाल ससि हरि कपटी कुटल अनंत
नष सूकर दंत कुदालादिक वनिय कपटी कुटिल अनंत॥ ११॥ भोरज गी हष भान सुना अलसी विलसी नि कपटीवनते कुटल हे॥

आलातन चमा टीफेरने की अगनपुत्र नाम छतरकी॥६॥ कलगीर अलिक ललाट

बलक मलगुलबेर जमीन षोदनेका॥१ अनलत के आगि॥८ ससनेकाहै सुभावजिनोका॥३

गुरु गुरु पृ ल्त्वे ८

सापुके ग्रामुजा ग्रोजे यो ८

गडा २

१A सकुंज विहारी केसव योंह्रु निअंचल ओर नि पीक सुलीक मई सिटिकारी वंक लगे कुच वी चनषछुंत देष भई १॥ ५८२
द्रिग दुती लजारी मानो वियोग वरा हहन्यो जुग सैल की संधिन द्रुगवै डुरी ॥ १२॥ अथ त्रिकोन वर्नन ॥ सकें सिंगार रेष ज्वा
हल हेर के नैन निहारि केसवदास त्रिकोन मदृ पावक कुंड विचारि ॥ १३॥ लोचन त्रिलोचन के केसव विलोक विधि पाव
क के कुंड सी त्रिकोन कि नी धरनी सो पी हेम पार पूपुर परमपुनी तन्त्य करिकरि पूरन दसहूं दिसि करनी ज्वाला सो जगत २
जेग मगत सु भग मेरु जा की जो न हो न लोकु लोक मन हरनी पिरच जीव हु विहो सि यन ज्नु ग जुग हो ना हो न कालन अं ककुदवेलकेह का यापरहे नहे
हमगोलवस्तु गत जा तिव रनी ॥ १४॥ अथ सुहृत वर्नन ॥ हूत वेल भनि गुरु अरु कुच के दसा धुके अंग कुं भकुं भकुं चअड मनि केडुकक
लसमु रंग ॥ १५॥ परम प्रवीन अति कोमल कृपाल तेरे उर ते उदित नित चित हितकारी है केसोराय की सौं अति सुंदर उ चोलीकेसपुनहे
दार सु भमल जेरु सील विधि सरन सुधारी है काहू सो न जाने हूं सिवो लन विलोक जाने कचुकी सहित साधु सूधो वे मरा
री है ऐसे हू कुचनि सकुचनि सकुचनि सकुचनि रिहिये हरन प्रकृति कोन वारी पारी है ॥ १६॥ अथ पती केन औरा सवर्नन ॥ नूप ऐनहीऐसेती केन॥ १७॥
नौद्यण २ कहा कुसर दुरव चन से ला दिक परजानि कुच निनै व रा नलाज मति रति अति गुर कर मानि ॥ १७॥ सेहु पीहु थार अंग अ
सजोप५ त्यारे अनेक कामसर हूं लेषरे ष लव चन विसेषिये चेटिन वचन औट की येहु कपाह कोट भौन मोह रहे मार भय अवरेषिये
महरेन के दुरकालनवाली लेजोहै मैं उजेउसोभी महायनाकोनहीक रहे॥५ के सोदास मंत्र गद जंत उत प्रति पक्षरक्षे लक्षे लक्षे अरक्षे कन लेषिये मेदियत मर्म वर्म उपर कसेई रहे पीर दुनी छायल
नि छाय पैन दे षिये ॥ १८॥ अथ रोमराज ॥ पहिले नत जे आर सु भार सी दे ष ये री कथ स्यो चन सार रहि लै पुन यो छि गुला
वति लोछि कुलेल अंग ओक अंग ओक न कै कहिके सब मेद जिवाद सो मो जिउत पर आजे मे अजन दे वहु त्यो डुरि
दे थ्यो न दे थ्यो कहा सखि लाजन तो लोचन ला गिये हूं ॥ १९॥ अथ कोमल वर्नन ॥ पल्लव कुसुम दयाल मन मापन मृदु ल
मुरार पाट पाम री जी भ पद प्रेम सब पुन्य विचार ॥ २०॥ मैन ऐसो मन मृदु मृदुल मृनाल का केहून के सी सुर पुनि मन

पसमीना१ पोक्कवै॥ मोम१ कस्तूरी॥ केसर२

देहजातयाकोअर्थदेहजातनाम
अंगकोहायपावरत्यादि॥सोजात
रूपतेनारूपयें॥५॥

कवि
प्र॰
१०
10

निहरतिहै दाहोंकेसेवीजदंतनपातसेअरुनहोठकेसोहासदेषदृगआनंदभरतहैं परिमेरीनेरीमोहिभावनभला ईतांनै
वृफेनहोतोहि औरवूफेनडरतहै॥मोषतसीजीभमुषकेजसोकुवरतोमेकाठसीकठेठीवानेकैसेनिकरतहै॥२१॥दाँतवर
या॥ मतुलवीनलसमानाताकेसतकेल॥अथकठोरवर्नन॥कुचकठोरभुजमृनालमनिवरनवज्रकहूमित्र पातुहाड
होराहीयेविरहीजनकेचित्र॥२२॥सूरनकेतनसममनिकाठकमठकीपीठ केमवसषेचर्मअरुहठसठदुर्जनडीठ॥२३॥
केसोदासदीरघउसासनकोमदागनआयुकोअर्थकोमहूप्रकासपापभोगीको॥देहजोनजानरूपहाडनकोरूपरूप
रूपकोकुरूपविषयवासरसजोगीको बुद्धिनकीबीजुरीहैनेननकोधारापरद्धानीकोद्यत्यारथेंनथायनप्रयोगीको॥
को उदू देवादुवाअगनगेहमाननहौजाननहोहीराही वोकाहूपुत्रसोगीको॥२४॥मतीसमरमदमसनमनपर्मअपमीति
करम॥ लव मित्रजहांनहांपवरनीयेकेसवतिम्बचित्र॥२५॥यथा॥कामनोवचकामनलोमनमोहनमोहमहाभयजेता केसव
दि वालवकेकमधुरविपन्निनहेअतिधीरजचेता हेकलिमेकहनावहनालयकोनगनेहनुसारवेता पेईहि सूरजमे
जोगीसु डलभेदनसूरसैतीअरऊरथरेनै॥२६॥अथचंचलवर्नन॥तरलतुरंगकुरंगद्युनिकानरचलदलपोन लोभिनकेम
कायरजन नस्यारजनवालककालविधान॥२७॥कुलटाकुटलकठमनसपनोजोवनमीन षंजनअलिगजश्रवनश्रीदामि
६ नुपवनप्रवीन॥२८॥यथा॥भौरज्योंभवतलोललेलिनोलननानिप्रतिषजनसोपलमीनमानोजहांजलहै सपतो
उदातकहूअपनानआवनैपमलियेनवेनग्रेनआवकेसोफलहै गहीयेयोकोनगुनदेषनहीरहीयेकछूनरूपमोहको
महलहै चपलासोचमकनसोहैचारूचहूंदिसिकाहूकोसनेहचलदलकोसोदलहै॥२९॥अथसुषदवर्नन॥पंडितपुत्र
पवित्रताविद्यावपुतिरोग सुषहीफलअभिलाषकेसपतमित्रसेजोग॥३०॥दानमानधनजोगजपरागवागदेहरूप॥
मुक्तिसोमसरवस्यतायेसुषदानअनूप॥३१॥पंडितपूतसपूतसुधीपतिनीयतिप्रेमपरायनभारी जानैसवैगुनमा

संपूर्णविद्यानविषेज्ञानहेजाना॥१

चंचलजो
इन्द्रियहै॥५

रीकहीये

10A

मनकादुष२

जग

नेमवैदेनदानविधानदयाउरधारी केसवकेसगनहीसोवियोगसंयोगसुभोगनिसौसुषकारी सोचकहेजगमांहुल
लहेजसमुकेयहैचहूवेदविचारी ॥२२॥ अथदुषदवर्नन ॥ पापपराजयकूठहठसठनामररषमित वामनक्योगीरूप
विनग्रमहनेसीलचरित ॥२३॥ आपव्यापत्रयमानरिनपरघरभोजनवास केन्यासतनिहंहनावरषाकालप्र
वास ॥२४॥ कुजनकुस्वामीकुगतिहयकुपुरनिवासकुनारि परवसदारिदआदिदैअरिदुषदानविचार ॥२५॥
यया ॥ वाहनकुचालचोरचाकरचपलचित्तमित्तमतिहीनसूमस्वामीउरआनिये परघरभोजननिवासवासकुं
पुरनिकेसोदासवरषाप्रवासदुषदानिये पापिनकेसंगसंगअंगनोअनेगवसपरजससुतसुतचिनहीहा
तिये मठनावुढाईव्याधिदारिदकुठाईआधियहईनरकेनरलोकनिवषानिये ॥२६॥ मेदगनवर्नन ॥ कुलानि
वहासविलासवुषकामकोपमहमानि मनिमुक्तासरसहेमराजनियगतिमेदवषानि ॥२७॥ यथा ॥ कोमल
विमलमनविमलासीमषीसायकेमलाज्योलीनहायकमलमनालकै नूपरकीधुनिसुनिमोरकेलहेनकेवो
किचोकिपरेचारचेटवामरालके कचनिकेभारकुचभारनसकुवभारलेविकलचिकजानकेटिनटवाल
के हरैहरैवोलनविलोकनहसनहरेहरेहरेचलतहरनमतिलालकै ॥२८॥ अथसीनलवर्नन ॥ मलयजदा
षकलिंदसुवस्रोरेमिस्रीमीत प्रियसंगमयनसारससिजलजलतहहिमसीत ॥२९॥ रसिकप्रिया ॥ सीतल
तमिरटारिचंद्रचंद्रकानिवारकेसोदासवैसेहीतोहरषिहिरातुहे फूलनिफैलायडारिफारडारयनसारचंद
नकोटारिचितचोगुनोपिरातुहे नीरहीनमीनमुरफातजीवेनीरहीयेछीरकेछिरकेकहाधीरजपिरातुहे पा
रहेनेपीरकियोयाहीउपचारकेरेआगकेतोडाह्योअंगआगिहीसेरातुहे ॥४०॥ अथतमवर्नन ॥ रिपुश्रनायदु
दुवचनतपतनविरहसंताप सूरजआगिवजागिदुषदसोपापविलाप ॥४१॥ केसोदासमीदमूषर्यमउप

विजलीकिस्रत्नी॥१॥

जीरनजनमज्ञातजोरजुरह्योरथरपूरन
प्रगटपरतापक्योंकहोयपरे ४॥२॥४
प्रद्युमनर रजासुत कीरघुवीर

अग्रत सोना४

कवि
मू
॥ ११

हासम्रासदुषकेनिवासविषमुषेहूगह्योपरे वायुकोवहनवनदावकोदहनवडीवडवाग्रनलज्वालजालमेंरह्यो
परे महिहातपनतापपरकोप्रतापरघुवीरकोविरहवीरमोपेनसह्योपरे॥४२॥ सुरूपवर्नन॥ नलनलकूवरसुरसी
षकेहरिसुतमदननिहारि दमयंतीसीभादित्रियसुंदररूपविचारि॥४३॥ यथा॥ कोहैदमयंतीइंद्रमतीरतिरातिदि
नहोहिनछवीलीछिनछविज्योंसिंगारिये केसवलजातजलजातवेदेग्रोपजातरूपवापुरोविरूपसोनिहारिये म
दनतिरूपनिरूपमतोनेरूपभयेचंदवहुरूपअनुरूपकोविचारिये सीताजूकेरूपपरदेवताकुरूपसेहेरूपहीकेरू
पकतौवारवारडारिये॥४४॥ अथकुरूपवर्नन॥ कीरगुहसांपउलूकअजमहिषीकोलवषानि कालकाकश्रृंके
करमषरस्वानकुरूपरजानि॥४५॥ फिलीतेरसीलीजीलीराहेहूकीरटलीलीस्यारैतेसवाईभूतभावतीतेआगरी॥
केसोदासमेसनकीभामनीतेभासेभासेषरीतेषरीसीधुनिऊंठीतेऊजागरी मेढनिकीसीढीमेढ़आंड्न्योतनारिन
कीकोकहूतेवांकीवानीकागनिकीकागरी सूकरीसकुचिसंकिकूकरीज्योमूकभई घूघूकीघरनिकोहूमोहैना
गनागरी॥४६॥ अथसुस्वरवर्नन॥ कलरवकेकीकोकिलासुकसारोकलहंस तंत्रीकंठनिआदिदैसुमसरदुंदुभिवं
स॥४७॥ यथा॥ केकनकीकेकासुनकाकेनमथतमनमनमथमनोरथरथपथसोहिये कोकिलाकीकाकली
निकलततललितवागदेषतहीअनुरागउरअंगेरोहिये कोकिनकीकारिकाकेहितसुकसारकानिकेसोदास
नारिकाकुमारकाहूमोहिये हंसमालावोलनतहीमानकीउतारमालावोलेनंदलालसोनग्रैसीवालाकोहिये॥४८॥
अथमधुरवर्नन॥ मधुरप्रियाधरसोमकरमाषनदाषसमान वालकवातैतोतरीकविकुलउकेप्रमान॥४९॥ मधु
वासिग्रीदूधयूनअतिसिंगाररसमिष्ठ ऊषमहूषपियूषगनिकेसवसाचेइष्ट॥५०॥ रसिकप्रियायां॥ षारेकैपात
नदास्यौईदावनमाषनहूसहूमेटिइठाई केसवऊषमहूषहूदूषनआईहोतोपहिछाडुजिठाई तोरदनछदको
रसरंचकचाषिगायकगरेकेहूहिठाई तादिनतेउनरापीउठायसमेतसुधावसुधाकीमिठाई॥५१॥ अथअवलवर्नन॥

कुवेरकेपुत्र२ जात४ मीठा सूरद चतुरहै७ मरजात८ घूघूकीरत्री मयुरयुत महितर कुहारार अधर
फाल्गुनी कुमारर वेभीसु दरनहीं४ सुरहजोपदारथ सेसोनिरूपहोगा येहन॥५॥ दीठा७ कालनीजेती हैसुवाजति सदीग्र आवाज

मित्रता वदपनर

व६

पंगु गंगु गरे रोगी वनिक भीन भक्त जुतजान स्वंयं अनाथ अजादि सिसु अवला अवलव षान ॥५२॥ षातन अषात सब
जगत षवावत है द्रौपदी के सागपात षनहीं अघाने हो केसोदास नृपत सुता के सत भाय भये चौरने चतुर भुज चहूं
चक्र जाने हो मांगने उ द्वारपाल दासदून सतसुनौ काठ मांहि कौन पाठ वेद न वषाने हौ औरहै अनाथनि कौ
नाथ कौ ऊ जदुनाथ न मनो अनाथन के हाथही विकाने हौ ॥५३॥ अथ वलिष्टवर्नन ॥ पवन पवन को पूत अरुप
रमेश्वर सुरपाल काम भीम वाली हली वलि राजा पृथुकाल ॥५४॥ सिंह वराह गयंद गुरु सेष सती सवनारि गरुड
वेदमाता पिता वली अष्ट विचारि ॥५५॥ यथा ॥ वाल वध्यो वलि रावनै ध्यो करसूली के सुलवणालय लीहै काम
जरयो जगकाल पत्यौ वदि सेष धरै विष हाला हली है सिंधु मथ्यो कलि काली नथ्यो कहि केसव ई दुकु चाल चली है॥
राम हू की हरि रावन वाम चहूं जग एक अदृष्ट वली है ॥५६॥ अथ सत्य झूठ वर्नन ॥ केसव चारि हूं वेद को मन क्रम वच
न विचारि सांचो एक अदृष्ट है हरि झूठो सव संसारि ॥५७॥ हाथी न साथी न घोरे न चेरे न गांव न ठांव को नाम विलैहै॥
तात न मात न पुत्र न मित्र न वित्त न अंग हू संग न रैहै केसव काम को राम विसारत और निकाम न काम हि ऐहै चेति
रे चेत अजौं चित अंतर अंतक लोक अकेले ही जैहै ॥५८॥ अनहीं ठिक कौठ गजानेन कुठौर ठौर न ताही पै ठगावै ठलि
जाही कौ ठगत है याके तोडर तेडरडु गगतु डगतु डरिडरि के डर निडग डौ गी ज्यौ डिगतु है ॥५९॥ अथ अगनसदागति
वर्नन ॥ अगति सिंधु सिता लतरु वापी कूप वषान महानहीन दपैय जग पवन सदागति जान ॥६०॥ रसिक प्रिया यां
षधन थकित पल मनोरथ रथिन के केसोदास जग मगा जैसे गाय गीतन मैं पवन विचार चक्र चक्र मन चित्त चहि भूतल
अकास भ्रम मै ग्राम जल होत तु मैं कौ लै रा षौ थिर वपु वापी कूप सर समहर विन कीने वहुवास वितीन मैं ज्ञान गीरफार
नो रल्य जतरु जाय मिलै आय हौं ते आय गौ ज्यौं आपतिनि धिप्रीतमै ॥६१॥ अथ पदान वर्नन ॥ गोर गिरीस गनेस विधि गि
राय हनि को ईस चिंतामनि सुरतरु हू गोज गमाता जगदीस ॥६२॥ राम चंद हरि चंदन ल पारसु राम हुपहने केसव

कवि मू. १२ 12

दास द धीच रु युवलि सिव भीषम कर्न ॥६३॥ भोजविक्रमाजीत नृपजगदेव रनधीर दानिन्हिहूं को दान दि
नेई द्रजीत वलवीर ॥६४॥ गौरी को दान ॥ पावक फनि विष भस्म मुष हूरे वर्गमय मानि देतमुदै अपवर्ग के
हू पारवतीय निजानि ॥६५॥ गनेसजू को दान ॥ कवित्त ॥ वालक मृनालन ज्यों तोरि डारै सव काल कठिन कराल वे
अकाल दीह दुष्य को विपति हरत हठि पदम के पात सम पंक ज्यों पताल पेल पठिवै कलुष को दूर कै कलंक
रंक भव सीस ससि सम राषत है केसोदास दास के वपुष को सांकरे की सांकरनि सनमुष होत नहीं तौं दसमुष मु
ष जोवै गजमुष मुष को ॥६६॥ श्रीमहादेवजू को दान ॥ कांपउ ठियो आप निषियत पन हिताय चढी सी रीये सती
वैसी रंगति भई रजनी स की अजहूं न ऊंचो चाहे अनल मलिन मुष लागि रही लाज मनि मानो मनवीस की ॥

लक्ष्मी

केविसो छवी लीलछि छाती मैछपाई हरि छूटगई दान गति कोरहूं नेतीस की केसोदास नेही काल का
राई हू आयो काल सुनत अवनवक सो सपकरै सकी ॥६७॥ विधि को दान ॥ आसीविष राकस निदै यतनि

आकास

दै पताल सुर निनर तिदियौ दिव भू नेके तहे थिरचर जीवन को दीनी हैतके सोदास दीवे कहूं और कहा को ऊक
हांदेतुहे सीतवात तोयतेज आवनस मय पाय काहू पै न नाषी जाय ऐसी वांधी सेत हे अवनवे जेकेव जेहांत हांजा
नियतु विधिही को दीनो सव सवही को देत है ॥६८॥ गिरा को दान ॥ वानी जगरानी की उदारता वषानी जाय ऐसी म
तिके सव उदार कौन की भई देवतापसिद्ध सिद्ध रिषराजतप हेरु कहेता की वात कहि काहू न काहू लई भावी भूत
वर्तमान जगत वषानेहे केसोदास क्यों हू न वषानी काहू पै गई वर्ने पितु चारि सुष वर्ने सूत पंच मुष नाती वर्नै षट मु

पुरानर

ष तदपि नई नई ॥६९॥ सूरजजू को दान ॥ वाधक विवाधि व्याधि त्रिविधि अधिक आयवेद उपवेद वपु वंधन विधा
नहे जगपारवार पारकरन अपार नर सूजक परम पद पावत प्रमान हे पुरष पुरानन कहे पुरष पुराने सव पुरान पु

वेदां के कार नहे ॥१॥

राननसुनि निगम निदानहे भोगवान भागवान भगत निभागवान करिवे को केसोदास भाने भगवान हे ॥७०॥

जगत रूप समुद्र ने पार करदेहन अपारन रांको ॥२॥

पुराने रिषी परमेश्वर कहदेहन सूर्य को ॥३॥

वयवं धन विधानहै याको अर्थ संसार रूप जो मनुष्य को वंधन है ताको जो वंधना स ताको जो विधान क्रियाहै जाको ॥ वेदां के करतवाला है

कमलाप्रसादकें मीका
नाखवनावनहारहै॥ ७।

१२म श्रीपरसरामजीकोदान॥ जो धरनी हिरनाक्ष धरीवर जज्ञवराह छिनाय लईजू । जाके लीये सब भारत भौ भवपार
य जीव निवीज वईजू । मानव दानव देवन के जुत पावलकै हू न हाथ भईजू । सातसमुद्रनि मुद्रित राम सु विप्रनवा वेष्टितकरी होईहै॥२
र अनेक दईजू ॥७२॥ अथ श्रीरामचंद्रजी को दान॥ पूरन पुरातन अरु पुरष पुरान परपूरन बतावै न बतावै और
सात्वकोनही समुझदे॥४॥ उक्ति को । दरसन देत जिनै दरसन समुझै न नेति नेति कहै वेद छाडि भेद जुक्ति को । जानय है केसोदास अनुदिन राम
राम रटत रहत न डरत पुनरुक्ति कौ । रूप देय अनिमाहि गुन देहि गरमाहि भक्ति देय महिमाहि नाम देय मुक्ति को ॥७॥
स॥ जो सत जज्ञ करै के रीर्द्दा सो सो प्रियनाक पिभुज सो कीनी । ईस दई जु दयद्दस सीस सु लंक विभीषन अ सेहो दीनी॥
दान कथा रघुनाथ की केसव को वरनै रस भूहुन भीनी । जोग ति डूरथ रेतन की सुता आयके सूकर कू कर लीनी॥
॥७३॥ वलि को दान॥ रामचंद्रिका मे॥ कैटभ सो नरकासुर सो पल मै मधु सो मुर सो जिहि मार्यो । लोक चतुर्दस
दायकेसोहै॥ कमलाके कुचकुंकमसो भूषितहै॥ श्री लक्ष्मीजी जाकी दुखी सो मागवदो जाके आयो॥८॥ र छिकै केसव पूरन वेद पुरान विचार्यो । श्री कमला कुच कुंकुम मंडित पंडित देव अदेव निहार्यो । सो कर मा
गन को वलि पै करतार हू के करनारय सार्यो ॥७४॥ अमर सिंह जी राना को दान॥ कारे कारे तम के सप्रीत सु
किंवा थान सुनइति गनेसजीने वलजिनो विषयक्यो है॥७॥ धारे वि धि वार वार डारे गिर के सोदास भाषै है । घारे घारे मदन के पोल फूले पूले डोले जल थल बल थान फूटे मिनेनेदूरकी नेहै वलकरके॥७॥
मुनना षै है । वंदायन नात छेन नात ऋनै जूथ राति भोर भन नात भुवपति अभिलाषै है । दुर्जन दरि दुद्दल दल
ने अमर सिंह के सोदास हाथी ये ह थ्यार कैराषै है ॥७५॥ वीरवल को दान॥ पाप के पुंज पषावज के सब सो कके
सोमामैयहन४ सष सुनै मुष मांमे । झूठके ताल रफांफि अलोक के आवज जू थन जानो जमामै । भेद के भेगिवडे डरके डफ
कौ नगि भौ कलवे कुरमामे । जूकू नहीं वरवीरव जे वहु दारिद के दरवार दमामे ॥७६॥ इति श्रीमत विविध
भूषण भूषितायां कविप्रियायां षष्ठम प्रभावः ॥६॥ अथ भूमि भूषन वर्ननं ॥ देस नगर वन वाग गिर
आश्रम सरिता ताल । रवि ससि सागर भूमि के भूषन रितु सब काल ॥१॥ अथ देस वर्ननं ॥ रत्न

कौनकभआकल केकुटंवमै॥३॥ आपजसकेफाफ वाजनेलगी॥४॥ आवजकीजमानहीजानदामै॥४॥

जानपालकी
देसोकी मनी है प्रथ्वी के मध्य देस मे
कन्टदेस विषे कांचीकोर रत्न है यहि मानिये ४
पन

कवि प्र १३ 13

षानिषसुपदिवसवसनसुगंपसुदेस दानमानवहुवरनीये भाषाभूषितवेस॥२॥कवित॥ आछे आछे अ
पतर सनवसनवसुवासुपसुदानसनमानजानवाहनवषानिये लोगभोगजोगभागवागरागरूपजुतभूषनि
भूषितसुभाषासुषजानिये सातोपुरीतीरथसरितसवगंगादिके केसोदासपूरनपुरानगुनगानिये॥
लव गोपाचलऐसेगढराजारामसिंहजूसेदेसनकीमनिमहिमध्यदेसमानिये॥३॥अथनगरवर्नन॥बाई ग
केवनीआप कोटअटापुजावापीकूपतडाग वारिनारिअसतीसतीवरनहुनगरसभाग॥४॥यथा॥चहूंभावाग
की२ वनमालहूसघनघनसोभाकीसीसालाहंसमालासीसरितवर ऊंचेऊंचेअटनपताकाअतिऊंचीजनुको
बेकाआकाकासविषे देवलहैं अनसेकके२ सिकेकीनीगंगाषेलेषेनरलतर आपनैसुषनआगेनिंदतनरिंदऔरघरघरदेषियतदेवनासेनारनर॥ हाथी
केसोदासत्रासजहांकेवलअदृष्टहीकोवारियेनगरऔरओडछेनगरपर॥५॥वननर्नन॥सुरभीइभव
लोग नजीववहुभूतप्रेतभयभीर भिल्लभवनवल्लीविटपदववनवर्नहुधीर॥६॥यथा॥केसोदासओडछेकेआस
पासतीसकोसतुंगारन्यनामवनवैरीकोअभीतहै विंध्यकेसेवपुवरवारनवलितवाघवानरवराहवहुभि
ल्लकैंअभीतहै॥जमकीजमातिसीकेजामवंतकेसोदलमहिषसुषदसवछगैकनकोमीतहै अचेलअन
लवंतसिंधुसोसरितजुतसंभुकैसेजटाजूटपरमपुनीतहै॥७॥गिरवर्नन॥तुंगनंगतुंगदीरघदरीसिद्धसुंदरीधा
तु सुरनरजुतगिरवरनियेऔषधनिरकरपातु॥८॥यथा॥रामचंद्रकीनैतेरेअरिकुलआकुलायमेरकेसमा
नआनअचलवरीनमै सारोसुकहंसपिककोकिलाकपोतमृगकेसोदासकहूयेहैकरभकरीनिमैं डारेकहूं
हारटूटेरातेपीरेपटछूटेंफूटेहैसुगंधघटअवतरीनिमैं देषियतसिषरसिषरप्रतिदेवतासेसुंदरकुंवरअरुसुंदरी
आ दरीनिमैं॥९॥अथअवनवर्नन॥होमधूमजुतवर्नियेब्रह्मघोषमुनिवास सिंहादिक[illegible]मृग
मोरअहिद्रुमसुमवैरविनास॥१०॥रामचंद्रकोयथा॥केसोदासमृगजवछेरूचूमैवाघनीनिचाटतसुरभिवाघ वेलनादिआ
वालकवदनहै सिंहनिकीसटाऐचैकलभकरनिकरिसिंहनकोआसनगयंदकोरदनहै फनीकेफननिपर

न४ वेद सहू॥हाथी नेउमयुत
जोवसे॥२ सिंहमृगज योगनीर

... हे जमुनाजी जग लोचन जो ... नेतलालित
कालडाई है ॥ वेतवे के सी हे जगत के जो पतराहेमकेस मेलियो है ॥१॥
नेत्र तिनो कर के लालित है ॥४॥

लीये लीये

नरमदानदी २

13A

नाचत मुदित मोर क्रोधन बिरोध जहां मदन मदन है कानर फिरत डोरे डोरे ग्रंथ तपसन रिषको निवास कि धौं शिव को सदन
है ॥११॥ सरितावर्नन ॥ जलचर हय गय जलजात दज ग्य कुंड मुनिवास स्नान दान पावन नदी वर्नियेके सवदास ॥१२॥ यथा ॥
श्राद्ध के तीरन तरंग निवित वैताहि नरे रिपुके सबको है अर्जुन वाहु प्रवाहि प्रबोधन रेवा ज्यौ राजिन की रज मोहे जो विजे गे ज
मुना सी लगै जग लोचन लालित पाप वियो है सूरसुता सुभ संगम तुंग तरंग तरंगित गंग सी सोहे ॥१३॥ बागवर्नन ॥ लालि
त लतातरु वर कुसुम कोकिल कलरव मोर वरनिवाग अनुराग सो भवर भवत चहुं ओर ॥१४॥ यथा ॥ सोहत सुंदर स्यन के
रूनाक लिनक मलस्मनि विलास सम धुव निमीत मानिये सो हिये अर्पन रूमंजरी पैनील कंठ के तेदास प्रगट असोक
उर आनिये रंभा सो सदंभ बोले मंजु घोष आउ रव सी हंस फूले सुमन सु सब सुपदानिये देव को दिवान सो प्रवीन राय ज
को बाग ईद्र के समान नहा ईद्र जीत जानिये ॥१५॥ तलाववर्नन ॥ ललित लहिर षग पहुप पसु सुरभि समीर तमाल ॥
कर भिके लिपंथी प्रगट जलचर वरन हु नाल ॥१६॥ यथा ॥ आय पथी मल श्रीगन के सव निर्मलकाय कै रेवहूं आरे पंथिन
के परिताप हरे हठजेत सू ल तन्न रु हनोरे देषहु एक सुभाव बडो वड भागन डागन कोवितथोरे ज्यावत जीवन हा
रिन को निज वंधन कै जग वंधन कोरे ॥१७॥ अथ समुद्रवर्नन ॥ तुंग तरंग गंभीर तार नन जल जव हू जंत गंगा संगम दे
व वियजान विमान अनंत ॥१८॥ गिरवडवानल हरि हु चंद्रोदय नैजानि पन्नग देव अदेव यह ऐसो सिंधु वषानि ॥
॥१९॥ यथा ॥ मेष परे धरनी धरनी धर के सब जीव रचे विधि जेते चौदह लोग समेत तिन्हे हरि के प्रति रोम निमे चित चेते ॥
सो वन तेऊ सुने इन ही मे अनादि अनंत अगाध है एते अद्भुत सागर की गति देषहु सागरही महि सागर केते ॥२०॥ भूति
विभूषित पियूष हू विषई सम सरीर कि पाप वियो है हे कि धौं केसव कस्यपको घर देव अदेवनि के मन मोहे संतत हि यौ
कि वसे हरि संततसोभ अनंत कहै कवि को है चंदन नीर तरंग तरंगित नागर कोउ कि सागर सोहै ॥२१॥ अथ सूर्यो

श्रमसान २

नदी ४

पुसपट सुगंधित वीना

जीवन मे श्रेष प्राणा को नाम [illegible]

सु तिसंपदा श्री भस्म ॥२॥

दयवर्नन॥ सूरउदयतें अरुनता पय पावनता होय संषवेद धुनि मुनि करै पंथ लगै सब कोय॥२२॥ कोककोकनद सोक
हत दुषकुवलयकुलटानि नाराश्रोषधि दीप ससिचुत्यूं चोरन महानि॥२३॥ यथा॥ कोकनदमोदकर मदनवदन कियौं दस
मुष मुषकुवलय दुषदाई है लोयक अमल पंजनसोयकत मोगुनि कि उदित प्रबोध बुद्धि केसोदास पाई है पावनकरन पयह
रिपदपंकज कि जगमगेमनुजग मगनदरसाई है नारायनि तेज हर नारिका को नारकि प्रगट प्रमानकर ही की प्रभुता
ई है॥२४॥ अथ चंद्रोदयवर्नन॥ कोककोकनद विरहतमभानि निकुलटनि दुष्य चंद्रोदयतें कुवलय निजल[illegible]थिकार
निसुष्य॥२५॥ यथा॥ केसोदास है उदास कमलाकर सोकरसोषक प्रदोषतापतमोगुन नारिये अमलतअसेष केविसेषभाव
वर यतकोकनदमोदचंडषंडन विचारिये परमपुरषपदविमुषपरुषरुष संमुषसुषदविदुषनिडर पारिये हरिहैरी
हियमैं नहरनहरिननैनी चंद्रिमा न चंद्रमुषी नारद निहारिये॥२६॥ वसंतवर्नन॥ वरनवसंतसपुष्यअलि विरहि विदारनवीर
कोकिलकलरविकलितवनु कोमलसुरभिसमीर॥२७॥ यथा॥ सीतलसमीरसुभगंगाकेतीरराजुत अंबरविहीन वपुवा कामदेव
सुकिलसंतहै सेवतमधुपगनगजमुषपरभृतनबोलसुनिहोतसुषीसंत औरसंतहै अमलअदल रूपमंजरीसुपदरज
रंजनअसोक दुषदेषनन संतहै जाके राजदिसिदिसि फूलेहै सुमन सब शिवको समाज कियौं केसव वसंत है॥२८॥ ग्रीषम
वर्नन॥ तातेतरलसमीरमग सूषसरितानाल जीवअवलजलयविकल ग्रीषमसमफल रसाल॥२९॥ चंडकरकलितवलि
नवरस दागनिके दमलफूलफलदलनके नास है कौवबीचवचैमीनव्याल विलकोल कुलडुरदद रौनदिनहतकोवि
लास है थिरचरजीवनहरनवनवनप्रति देसोदास मृगसिर अवननिवास है पा वनवलपतुषसोमतेनियानसरसवरसमहै
कियौ ग्रीषमप्रकास है॥३०॥ वर्षावर्नन॥ वरषावरनहु हंसवक दादुरचातक मोर केतककेजककेदवजल सोदामिनिघनघोर॥
॥३१॥ मोहैसुरचापचारुप्रमुदितपयोधरभूषनजरावजोतनतरलाई है दूरकरीसुषमुषसुषमासिसीकीनैनअमलकम
लदलदलितनिकाई है केसोदासप्रवलकरेनुकागमनहरमकेसुहंससकसवदसुषदाई है अंबरवलितमतिमोहैनील

१४म

नीलकंठ महादेवजी किवामोरकोनामहै॥१॥ अस्नानगंगीजी आदिको॥२॥ अथ ५ चंद्रमाकोभीनामजलजहै॥३॥ जलजमो तीदिवाक मल॥३॥ हारवेत सरद ऋतुमेप्रसन्नहो होतहै॥३॥ चंद्रकननाम कपूरकोह चमकर तिलकनाम हुमहिगार कोकिवातिलककोर कमलनामजलको औकमलकोनेत्रा कोदोऊ रूचैहै सरदरितुमे॥३॥

चतुरमकुंजन४ चतुरजगतकेलोककोमाईहैसरदरितु कंनिष्टाकोपुरकरहीहै सरदरितु चोरोदिसके मुख॥४ भाभासोरकारल कैपयकेहैलोचन कोरोचनरखीता कोरावलगतकेजा तहैहैमंतरितु६ हरद॥नाम ऋतिकोअंग केकलकेकेव पकेसमान हैं८॥ कवनीकेसोहै प्रयकहैकामदेव जिसकोविलोक देवे॥१०॥ चंचल लताकेसमानजो भुनालतलेवालक ज्यानहृद्धि

हरखदेकरनेवालीहै सजांलोगजिस सरदरितुकोसर हतहैं॥२॥ सहायताद छुषकीसम्हद्धि हैप्रीतमनेविमु षनायका॥६॥ सरदरितुमेवडेको टेएकसेहोजातहैं हैरोवलनमें॥७॥ चवललताकिस्त्रा जोसाघाहैं॥८॥ जूतनामपुराने हैं कैको॥१०॥ अथ रकयाऊपरवैठके साधुरीसकों॥८ भसरसीवितहैं हीयविवेलोगरखे जातेहैंप्रसन्नहोतेहैं सीमररितुमें॥२

कंठजूकीकालिकाकिवरषाहरषहीयआईहै॥२२॥ अथसरदरितुवर्नन॥ अमलअकासप्रकासससिमुदितकमलकुलकास पंथीपितरप्रयानन्दपसरदसुकेसवदास॥२३॥ विज्ञानगीता॥ हो भाकोसदनससिवदनमदनकरवंदेनरदेवकुवलयवलदाईहै पावनपदउदारलसतहैहंसमालदीपतिजलजहार दिसदिसपाईहै तिलकचिलकचारुलोचनकमलरुचचतुरचतुरमुखजगजीयभाईहै अमलअंवरलीननीलपीनपयोधरकेसोदाससारदाकिसरदसुहाईहै॥२४॥ अथहेमंतवर्नन॥ तेलतूलतामोलप्रियतापतपनरतिवंत द्रीहरयनिलघुद्योससुनिसीतसहितहेमंत॥२५॥ यथा॥ अमलकमलदललोचनललितगतिजारनसमीरसीनभीरदीहदुषकी चंद्रकनपायोजायचंदननलायोजायचंदनचितयोजायप्रकृतिविपुषकी वहकीवहतिजातिघटनाघटीहूं रीझिनछिनछीनछविरविमुषसुषकी सीकरतुषारस्वेदसोहतहेमंतरितुकिधौकेसोदासप्रियप्रीतमविमुषकी॥२६॥ अथसिसिरवर्नन॥ सिसिरसरसमनवरनियेकेसवराजारंक नाचतगावतरैनदिनषेलतहूसतनिसंक॥२७॥ सरससमसमसरसमिजलोचनविलोकलोकलोकलाजलोपिवेकोआगरी ललितललनासुवाहुजानिजूनज्वालवालविटपउरनिलगेउमगिउजागरी पल्लवअधरमधुमधुपनिपीवतहीरचितरुचिरपिकरुतसुषसागरी इहिविधिसदांगतिवसनगलितवाससिसिरकीसोभाकिधौवारनारनागरी॥२८॥ इतिश्रीकविप्रियायांभूमभूषनवर्ननोनामसप्तमःप्रभावः॥७॥ अथराज्यश्रीभूषनवर्नन॥ राजारानीराजसुतप्रोहितदलपतिदूत मंत्रीमंत्रप्यानगयहयसंग्रामअभूत॥१॥ आषेटकजलकेलिपुनिविरहस्वयंवरजानि भूषितसुरतादिकनिकरिराज्यश्रीहिवषानि॥२॥ अथराजावर्नन॥ प्रजाप्रतिज्ञापुन्यपनपरमप्रतापप्रसिद्धिसासननासनसत्रुकेवलविवेककीवृद्धि॥३॥ दंडअनुग्रहधीरतासत्यसूरतादान कोसदेसजुनवरनियेउद्यमछिमानिधान॥४॥ यथा॥ नगरनगरप्रतिघनहींतोगाजैघोरईतिकीनभीतभीतअयनअधीरकी अरितनरीतिप्रतिकेरतअगम्यागौनभावेव्याभिचारीजहांचोरीपरपीरकी सासनकोनासनकरतएककौनगयोसनकेसोदासदुर्गतिहै

भावे॥तेतीस आषेटक भावहीव्यभि नामशिका चारीहैजहां॥तिरकौप अभूतजोसंग्रामहै जेडाअगेनहकदेहोयाप दृढप्रतिज्ञा वरननकरी

सुचि सिंगार मे जाकी रुच होय २

ऊचे मनके सहित २

कवि नू १५ 15

जीव मात्र सों प्रीत जोरके ४ स्वामी बिना हीर किसे नाहि कुछ मन वल न है ५

दुर्गति सरिरकी दिस दिस जीतके अजीत हू जदीन निसो अैसी रीत राजनीत राजे रघुवीरकी ॥५॥ राजपत्नी
वर्नन ॥ सुंदरि सुखद पतिव्रता सब चिरु चिसील समान इहि विधि रानी वर्नियें सलज सबुद्धि निधान ॥६॥ यथा ॥
माता जिमि पोषित पिता ज्यौं प्रतिपालक रै प्रभु जिम सासन करत है रिही यसो भैया ज्यौं सहायक रै देत है स
षा ज्यौं सुष गुरु ज्यौं सिषावै सीष हेत जो रिजीयसौ दासी ज्यौं टहल करै देवी ज्यौं प्रसन्न है सु पारैपर लोक लोक
नाती नाही वियैसो व्याके है अयान मदि छितके छनिक छुटु औरन सौ नेह करै छाडु अैसी तियसो ॥७॥ पुनः ॥ कछु दूनि हरहै किकांनिर्दय हन ५
कामके है आपने ही कामरति काम सागर ननर नीके जरी के से उर आनिये अधिक असाधुई दुई ढानी अ
नेक ईडु भोगवति के सोदास वेदनव षानिये विधिहू अविधि कीनी साविन्नी हूं आपदी न अैसे सब पुरुष औ
जुवति अनुमानिये राजाराम चंद्र जू से राजैन अनुकूल सीता सीन पतिव्रता नारी उर आनिये ॥८॥ अथ राज
कुमार वर्नन ॥ विद्या विवुध विनोद जुन सील सहित आचार सुंदर सूर उदार विभु वर्निय राजकुमार ॥९॥
दानिन के सील परदानके प्रहारी दिन दानवारि ज्यौं निदानि देषिये सुभायके दीप दीप हू के अवनीपनि के अव
नीप पृथु सम के सोदास दास हु जगायके आनंद के कंद सुरपाल के वालक से परदार प्रियसाधु मन वच कायके ॥ कं ५ पदारबुगार प्रियाको पिआरे हैं ६
दे हिय मेधारी पै विदेह राजजू से राज राजन कुमार अैसे दसरथ रायके ॥१०॥ अथ पुरोहत वर्नन ॥ श्रोहित न्ह
पहित वेद वित सत्य सील सुचि अंग उपकारी ब्रह्म रिजु जीत्यो जगत अनंग ॥११॥ कीने पुरहत मीत लोक लो
क गाये गीत पाये जस अभूत पूत अर उर त्रास है जीते जन अजीत भूप देस देस वृहु रूप औरकौन के सोदास वलकै
विलास है तो स्यौ हूर को पनु षटपनानि गोविसुष है ओजव पके मुष सुष माकौ वास है हूँ गये प्रसन्न राम वा
सौ यन धर्म धाम के वलवसिष्ठ के प्रसाद को प्रकास है ॥१२॥ अथ दलपति वर्नन ॥ स्वामि भक्त श्रम जित सुधी

लक्ष्ना करदान ना मपराये जसके दूर करनवाले हैं ७

न्य ४ किं वाप र अेसे जो विवाह लाइ स्त्री ना के पीय है ॥६॥

वेद को जानता है ४ सत्य ॥ सतवादी होवे पिजु को हृदय होवे मल

परमेश्वर की तरह ॥७॥

निदान नाम उपादकारण को अप्रीप्रनको ॥ सुंदर जो भाव क्रिया देवपूजन आदिका के निदान अनहे सो सा है ॥७॥

जयंत ईन्द्र के पुत्र जैसे ॥६॥

इंगित पराये
की चेष्टा कों जानैय

पारस नाम सेन संग को
किंवा है ममसैनिक टकों भी
कहित है ॥१॥

15A

सेनापतिसुअभीत अनालसीजनप्रियजसीसुषसंग्रामजीत॥१३॥यथा॥छाडदीयोअतिप्रारतपारसकेसवरा
यसाथसमूरो साहससिंधुप्रसिद्धसदाजलहूथलहूंबलविक्रमपूरो सोहियेएकअनेकनमाहिअनेकनएकवि
नारनसूरो राजैहैतिहराजकोराजसुजाकीचमूमैचमूपतिसूरो॥१४॥अथदूतवर्नन॥तेजवहैनिजराजकोअ
रिडरउपजेछोभ इंगितजानैसमयगुनवरनहुदूतअलोभ॥१५॥यथा॥स्वारथहितहितसहितविहितमतिकाम
क्रोपलोभमेमहछोभमदहीनेहै मीतहूअमीतपहिचानवेकोदेसकालबुद्धबलजानवेकोपरमप्रवीनेहै आयनो
उकतिअतिरूपरीहैआरनकीदूरदुरीदुरीमतिलैलैवसकीनेहै केसोदासदेसदेसअरिदलरामदेवराजकोदे
षिवेकोदूतहगकीनेहै॥१६॥अथमंत्रीवर्नन॥राजनीतरतराजरतसुचिसर्वज्ञकुलीन छमीसूरजससीलजुत
मंत्रीमंत्रप्रवीन॥१७॥केसवकैसेहूवारिधिबांधिकहांभयोरीछनिसोछितछाई सूरजकोसुतवालकोवालक
कोनलनीलकहौहमठाई कोहनुमानकितोकवलीजमहूपैजोरलईनहिजाई भूषनभूषनदूषनदूषनिलंक
विभीषनिकेमतपाई॥१८॥जेइतरेहुजीधनिसोकहिकोनकरीजमलोकवसीत्यो कर्नक्रपाद्विजद्रोनसोवैरके
कालववैरकीजेप्रतीत्यो भीमवहावकरोअरिअर्जुननारिनिराखतहीवलरीत्यो केसवकेवलकेसवके
मंत्रमहूतलभारयपारथजीत्यो॥१९॥अथमंत्रीमतिवर्नन॥पंचअंगगुनसंगषटविद्याजुनदसचारि आगम
संगमनिगममतिअसेमंत्रविचारि॥२०॥यथा॥केसवमादककोपविरोधनजीसवस्वारथवुद्धअनेसी भेद
अभेदअनुग्रहविग्रहनिग्रहसंधिकहीविधिजेसी वैरनिकोविपदाप्रभुकोप्रभुताकरैमंत्रिनकीमतिअसी॥
राषतिराजनिदेवनिज्योदिनदिव्यविचारविमाननिवैसी॥२१॥अथप्रयान॥चवरपताकाछत्रछविदुंदुभीपु
नवहुजान जलथलमयमकंपरजरंजितवैनिप्रियान॥२२॥यथा॥राघवकीचतुरंगचमूचयकौगनैकेस

जुद्ध कैदकमलेगा मंपिमैत्री २ करनी ॥३॥ मदरा४

हितविपदार

कोटीवातनिंदा
जोमछोडदीनी है ४

सजेहेये

के॰ वि॰ मू॰ १६ 16

वराजसमाँनि सूरतुरंगनिकेउरकैपगतुंगपताकनिकेपटसाजनि टूटपरैतिनकेमुकतावरनीउपमावरनीकवि लाजनाम फुलियाया नेक्रियाकाहेर

राजनि विद्रुमनीमुषफेननिकेछ्विपौराजसिरीअवैमंगललाजनि॥२३॥रामचंद्रिकायां॥नादपूरपूरिपूरि

तूरिवनचूरगिरसोषिसोषिजलभूरिभूरिथलगाथकी केसोदासआसपासठौरठौरराषिजनतिनकीसपतसव न

आयनेहीसाथकी उन्नतनवायेनतउन्नतनवनायभूपसत्रुकीजीवकासोमित्रनकेहाथकी मुद्रितसमुद्रसा

तमुद्रानिजमुद्रितकैआईदिसदिसजीतसेनारघुनाथकी॥२४॥हयवर्नन॥तरलतनताईतेजगतिमुषसुषल विद

तौनौनौतैत्त्याति कावित्ताथुड नान लावन्यताट काकीतराहे

हुदिनदेषि देससुवेससुलछैनैवर्नेहुवाजि सेष॥२५॥यथा॥वामनहिहुयदजुनोव्यानमताहिकहानाषैपद

चारिथिरहोतरहिहेतहे छैकीछिनिछीरनिरियकाडिपाथछैउतरकेडलीकरनलोलचितमोललेतहे मन

केसेमीनवीरवाहनसमीरकैसेनैननिज्योनैनीनैननेहकेनिकेतहे गुनगनवलितललितगतिकेसोदासअैसे

वाजरामचंद्रदीननिकोहनेहै॥२६॥अथगजवर्नन॥मत्तमहावतहाथमैमंदचलनिचलकर्न मुक्तामयरमकु है

भमुभसुंदरतरसुवर्न॥२७॥यथा॥जलकेपगारनिजदलकेसिंगारपरदलकेविगारकरपरपुरपारैरोरे टा गडुजैसे

वनभटज्योभिरतरनदेनदेषिआमिषभागनेसजूकेभोरैगोरि विंधिकेसवंपथवकलिंदनंदसेअमदेवदनकीसुडिभ कलिंदपरवत केपुत्रजेसेहैं॥७॥

रैचंदनकीचारुषोरि सूरकेउदोतउदेगिरसेउदितअतिअैसेगजराजराजैराजारामचंद्रपौरि॥२८॥अथसंग्रामव

सन्नाह५ सन्नाहकवच

र्नन॥सेनासवैनसन्नाहरजसाहससस्त्रप्रहार अंगभंगसंचहभटअपकर्वथअपार॥२९॥केसववरनहुजुद्धमैजोगनिगन अमंद॥उज्जलहै

भुजनरुद्र भूमिभयानकरुथरमयसरवरसरितसमुद्र॥३०॥सोनितसलिलनरवानरसलिलचरगिरिहनुवंतविषविभीष मकरकछ

नडारयोहै चवरपताकावडीवाडवाअनलसमरोगरिपुजामवंतकेसवविचारयोहै वाजसुरवाजिसुरगजसेअनेकगज भ

रतसवंपुरुईडअमृतनिहारयोहै साहतसहितसेषरामचंद्रकुसलवजीतिकैसमरसिंधुसांचेहूंसुपारयोहै॥३१॥अथआषे

टकवर्नन॥जुरराववहिरीवाजवहुचीनेस्वानसिचान सहरवहुलीयामिलजुननीलनिचोलविपान॥३२॥वानर

जलकेपगारयाकोअर्थ॥अैसेऊचेहैकेतनोजलऊचोहोयगहरोहोय फिकरा स्याहगोषु

ताकोपगारकरनवलेहै॥नावनहीचाहियेपावतिसेउतरजातहै॥८॥

चटपटक्याकुलनाप

फेलपकडलैवो

16A

वाह्यवराहमृगमीनादिक वनजंतु वषवंपनदेषनवरनमृगयाषेदअनंत॥२३॥मीतरकृयोनपिक केकीकोकपारा

वतकुररकुलंगकलहंसगहिलापहै केसवसरमसाहसीहगोसरोसगनिकूकरनिपाससमासकरगहायेहैं॥

मकरनिकरवेधिवांधिराजराजमृगसुदरीदरीनभीलभामिनीनिभापहै रीफरीफगुजनिकेहारपहिरायेदेषोका

मअैसरामकेकुमारदोऊआयेहैं॥२४॥वलनिकेपैलमैलमनमथमनअैलसैलसैलजाकेसैलगैलगैलप्रतिरोकै

है सेनानीकेसटपटचंदूचितचटपटअतिअतिअटपटअंतककेओकहै ईद्रजूकेअकेपकप्रानाज्यकेपकपकसंभु

जूकेसकपककेसोदासकोकहै जवजवमृगयाकोरामकेकुमारचढेनवनवकोलाहलहोतलोकलोकहै॥२५॥

अथजलकेलवर्ननं॥सरससरोजसुभसोभभनितिंहियसैंपियमनफेलि गहिवोगतिभूषननकोजलचरज्योंजलके

लि॥२६॥यथा॥पकदमयंतीअैसीहरैहसहंसवंसपकहंसनीसीविसहारहीयेरोहिये भूषनगिरतपकलेतिवूडि

वीचिवीचमीनगतिलीनहीनउपमानटोहिये पकहरिकंठलागलागवूडिवूडिजातजलदेवतासीदृगदेवतागिसो

हिये केसोदासआसपासभवतभवरजलकेलिमैजलजमुषीजलजसीसोहियें॥२७॥अथविरहवर्ननं॥स्वा

सनिसाचिंतावढैरूदनपरैषैवान कारेपीरेहेतहैसताबेसीरोगान॥२८॥भूषप्यासमुपिवुद्वियदेसुषनिद्रादुतिअंग॥

दुषहोतहैसुषदसवकेसवविरहप्रसंग॥२९॥रसिकप्रिया॥वारवारवरजीमैसारससरसमुषीआरसीलैदेषमुषयासरमैं

वैप्रहै सोभाकेनिहोरेतोनिहारनितनैकुहूंनहारीहैनिहोरसवकहाकाहूषोरिहै मुषकोनिहोरेजोनमान्योसोभली

करीव केसोरायकीसोंतोहिजोतूमानमोरिहै नाहकेनिहोरैंकिनमानैहोनिहोरतिहोनेहकेनिहोरैफिरमोहिजोति

होरहै॥३०॥पुनःरसिकप्रिया॥हरितहरितहारहेरतहिंयोहिरातहारीहौहरिननैनीहरनकहूंलहौं वनमालीव्रजपर

वरसनवनमालीवनमालीदूरदुषकेसव कैसैसहौ हृदयकमलनैनदेषकेकमलनैनहोऊंगीकमलनैनअैरहौकहा

मकरग्राह

कार्तिकेयकों भी मैहोयघ्या हैा सटपटनाम भयकोहै ५

हरैक्यापकडदीहै हंसकेवालककोट

तिसकीध्यानकों सषीपरैषैक्या वालतीहै॥ ८

पैलमैलक्या हरवलापरजानहै अैलनामसोरकोहै

अकपकक्या अककका॥५॥

कुटेभूसनाको पकरलेनहै॥७

गातसगद

नायकैकोमानहै तहांसषीवचननय कासो॥५॥

दृगदेवताविसोहियेयाके अर्थ॥दृगदेवतानेत्रकीम ध्याजीदेवता॥नेत्रमेजो देवतारहितहेसोविमोहत होतहै॥८॥

वनमालीव्रजपरयाकोअर्थ॥वनकि

विसनामभिसको॥ सोहियेक्यासोभितहै॥८ याहेमालापानिआसितदियेअैसाजो

होऊंगीकमलनैनयाकोअर्थव्रज॥२५

कमलजलनासोजकहैनैनजाको

अैसीहोऊंगीहमासोव्रजमैअसरसपरहैसो॥२५

वनमाली हैह मेघ सोव्रजपर वरसदहो॥१

वनमालीश्री कृष्णचंद्रसोदूर रहे॥१॥

अपजल

लहरकी अहरत

सुमानकहीयेनायकाकोमानअहंकार दुकहेस्वामी सजसे भाकेसजके करजनषके प्रहारके सहारतहे भूषनके सबदअहार बुरे लागत हे हार से अतरिय होत हे मिलापमेयाते बुरो दूसन है ॥

साची

चढ्हीतेपीय रंगनिज्योतनगाहीयाकौ अ नअजिसकोचढ हेतरतिकीन दीकेसमान तनताईर विषेगाहीनकहै ॥४४

कहौ अपनेछन स्याम वैनहीसें होतयन स्याम तिके दोस छन स्याम बिन कौरहौ ॥४१॥ सलगयौ सब सौरसरोसमि
टे मनके भ्रम रैन बिमानौ कौ अपने परिकौ पहिचानत जानत नाहत नेसीतलनतौ नीके हिमे भूषभानललीकौ भई सुनजा
की कहीं परेवातौ एकहि वैरन जानियै केसव काहे तें छूटे री ऐसुष सानौ ॥४२॥ मेहके हो सिव अ्रास उसासन साथ निसा
स विसासन वाही हांसगयौ उडि हंसनि ज्यौं चपला समनी दमई गति काही चातक ज्यौं पिव पी वरटै वनीतायन रंग
निज्यौ तनगाही केसव वा कीदसा सुनहौ अब आगवि नाअगअंगनिडाही ॥४३॥ अथ स्वयंवर बर्ननं ॥ सची
स्वयंवर राति ये मंडल मंचबनाव रूपराक्रम वंस गुन वर्नि ये राजाराव ॥४४॥ मंडली मंचनकी न्रपमंडल मंडित देषि
ये देवसभासी दंतिनकी दुति देहकी दीपत भूषन ज्योति समेत प्रभासी फूलनिकी कि विश्व वरकी कि विछै रचनकी
कवित छिनु भासी मोहत है अति सीय स्वयंवर आनन चंद प्रवेष प्रभासी ॥४५॥ अथ सुरत वर्ननं ॥ सुरत सात्विकी
भाव भनि मनै नरू नित मंजीर हाव भाव बहिस्त्रत रति अलज्ज सलज्ज सरीर ॥४६॥ केसौदास प्रथम ही उपजत भ
य भोर रोमरूचि स्वेद देह कंपन गहनहे ॥ प्रानप्रिय बाजी कै नवारन पहाति क्रमविविध सबद दुजदान निलहत
हे कलितकूपानकरसन्हे सुमान ज्ञान सजि सजि करज प्रहारन सहत नहे भूषन सुदेस हार दूषन सकल होन सषि
न सुरत री तिसमर कहत है ॥ इति श्री केसवदास विरचितायां कविप्रियायां अष्टमः प्रभावः ॥८॥=॥४७॥=॥
अथ विसिष्टालंकार ॥ जाति स्वभाव विभावना हेत विरोध विसेष उत्प्रेक्षा आक्षेप क्रम गनिता आसिष श्लेष ॥१॥
प्रियस सूक्ष्म समेत है नियम विरोधी मान सूक्ष्म लेस निदर्सना ऊर्ज सरस बन जान ॥२॥ रसअर्थांतरन्यास है भे
द सहित व्यतिरेक फेरि अपन्हुति जुक्ति है वक्रोक्ति सविवेक ॥३॥ अन्योकति व्याधिकरन है सुविसेषोकति भावि ॥
फिर सहोक्ति कौ कहत हे क्रमही सो अभिलाषि ॥४॥ व्याजस्तुति निंदा कहे व्याजनिंद स्तुति वंत अमित सुपर्यायो
क्ति पुन जुक्ति सुनौ सब संत ॥५॥ सुसमाहित जु सुसिद्ध सुनि अप्रसिद्ध विपरीत रूपक दीपक भेद पुनके हि प्रहेलका
मीत ॥६॥ अलंकार पर हतनकहु उपमा जमक सुचित्र भाषा इतने भूषननि भूषित कीजे मित्र ॥७॥ अथ जाति

विस्वासघाती जो नि सासो वही ॥४

प

तिसछिनविषे भासी है ॥५॥

वहिकयावाह्यरत ८

मननना मससंभोगकरनमेजोसब्द निसको ८ मंजीरचरणका भूसन ॥ सेफूनन नामवजैहै ॥८॥

मेरुके समान आसुआको वरसनीहै ३

सचीइद्राणी ५

प्रकासी है ७

कामसोंजुतकेजो चित्तसोंसन्वनासों उपजे जो इस्त्री पुरष कोमाव क्रियाना ताकोनामसुरत ८

दुजब्राह्मणदान कोलेतहेजुद्धमे किंवा दुजपक्षी दानकों पावतहै रूपरमासईत्यादिक दान ॥९॥

सक्तव रछी सुमान ॥ गुरुरताज्ञान ताकी रक्षक है ॥८॥

हाव किलकिंचितआदि ॥ ८ भावस्वेद रोमांचिआदि ॥ ८

॥ परकीया नायका है सुरतके आरंभ विषे नायक को मे होत है ॥ भोरनायकातोंके अरही होत है ॥ रोमरूच ॥ रोम खडे होत है परसीना आवत है नायकाकों ॥ वाजी कत तस्त मनअरु जो पसीपगा कौ व्याधि है वा हनु नायकाको सुभाव रेकत है पव चलत है ॥ दुजदांतसे अधर षंडनकों पावत है ॥ कर कौ न मरयद याजु कैत ही निर्दय होके कुचको पकरत है ॥

अवरोहिये
क्यासो मेहै

कपूर…पूरनकी येजो पानेहै ॥८॥

17A

नाह्नीनाह्नीक्या
छोटीछोटी॥२॥

कपूरपूरवस्त्रहै
उपजीहै

फलक
केविमार
तें

सभावलछनं॥ जाको जैसो रूप गुनकहिये तैहीसाज नासैंजानसुभावसवकहिवरननकविराज॥८॥पीरीपी
रीपादकी पिछोरीकटिके सोदामपीरीपीरीपागेपगपीरीयैपनहिआं वडेवडेमोतिनकीमालावडेवडेनैननाह्नी
नाहीभ्रकुटीकुटिलवचनहिआंवोलनिहसनिहलनिमंदुचलनचितौनचारुदेषनहीवनैयेनकहिनवनहिआं॥
मारूकेतीरनीरषेलेचालेरघुवीरहाथदैदैतीरतीरनीपयनहिआं॥९॥अथसभाव॥गोरेगातपातरीनलोच
नसमानमुषउरउरजाननकीवातअवरोहिये हसनिकहिनवातफूलसेकरनजानओठअवदानरातीरेषमनमोहि
ये स्यामलकपूरपूरकीओंहनीओटैउडिपूतिऐसीलागीकेसोउपमानटोहिए कामहीकीदुलहीसीकाकेकु
लउलहीमुलहिलहीललितललनासीलोलसोहिये॥१०॥विभावना॥कारजकोविनकारनहिउदोहोतजिहिठौर ता
सोवहिन विभावनाकेसोकविसिरमोर॥११॥पूरनकेपूरपानषायकैसोमुषवासअधरअरुनरुचसुधासोसुधारे है॥
विचनकेपोललोललोचनमुकरमैनअमलफलकैनिमोहिमारेहै भ्रकुटीकुटिलजैसीनैसीनकिएहूहोहिआंजी
ऐसीआंषेकेसोरायहेरहारेहै काहेकूसिंगारैतिहैमेरीआलीनेरेअंगसहजसिंगारहीसिंगारेहै॥१२॥कारन
कौनहुआननैकारजहोयसुसिद्ध जानोयहेविभावनाकारजछाडप्रसिद्ध॥१३॥नैकहूंकाहूनवाईनवानीनवाए
विनाहीसुवक्रभईहै लोचनश्रीविकुकाएविनाविकुकीसीरंगेविनरागमईहै केसवकौनकीदीनीकहोयहचंदमुषी
गतिमंदलईहै क्योलीनहैहैगईकटिछीनसुजोवनकीयहजुक्तनईहै॥१४॥हेतुलछनं॥हेतुहोतहैभांतद्वैवरननसव
कविराव केसवदासप्रकासकरवरनसभावअभाव॥१५॥अथसभावहेतु…सवचंदनहेदयनेअरविंदुनिकेमकरंदस
रीरो मालतीवेलगुलावसुकेतकीकेनकचंपककोवनपीरो रंभनिकेपुरिरंभनसभ्रमगर्भयोनावनसारकोजीरो सीतल
मंदसुगंधसमीरहस्योइनलोग्मिलपीरजपीरो॥१६॥अथअभावहेतु॥जान्योनमैमदजोवनकोउनत्योकेवका

लोचनाकी श्रीजो सोमाहै सो विकुकाये विना
ही क्या कुकाये विनाही फुकेगए है॥५॥

केलाके मिलापका संभ्रमआदरकरके॥गर्भकियामैरितपवनकेहुनसार
काजीरा क्याकनकाहै॥२॥

सषीवचनसषीसों॥ मुरलीधरसोंतेहीमिलाव॥ जौवुद्धिप्रद्धुनदूतनमें षीनाकोविचारकें॥ तादिनतेजा दिनमिलायतादिनतेदिनमानदिनदिनविषेमानकहियेमनकेवढिवे॥

ताकीवानकहेहैविनआवनहै चंद्रमाआकासकोपीछेप्रकासमैं॥ अर्थयहचंद्रमाकेउदयभयेविनाहीरातिभयविनाही॥ नायकनायकाकेप्रेमसमुद्रपहिलेवढिरहिनहें॥ मिल लीहततकपा निगल लेयाहै॥ १॥

वेकोंसदाआतुररहितहैकविरातहोयकविमिलै॥ चंद्रमाकेउदयमेंअभिलाषउछोहोय चंद्रमाकोजोतमेंनायकाकेअंगकीजोतमिलजायकोईदेषैनहीं अथरैमेंनायकाकेअंगकीजोतवढिजायतहांजेननसोंकेपावनहोयआगायसायन वेकेमीजायसकेहै

साधिके मिलायोसषीनें॥ सोतोप्रवलहेतुहै॥ चंद्रमाप्रेमसमुद्रवढायवेकोकारनहै ताकोउदयभयोनहीचंद्रमाउगेगोयहसुनकेप्रेमसमुद्रवढ्यो॥ सषीसंभावहेतुहैप्रवलहेतुहैचंद्रमाअभावहेतुहै निवहेतुहै कछुअभिसारहोयकेमीजायसकेहै सषीविनातोकुलवधूनहीमिलसकें॥ २॥

क वि प्रि १८ 18

मकोकामगयोई कोउयौनचाहतजीवकलैवरजोदकलेवरछाडदयोई आवनजाततजेरादिनलीलनिरूपज साध्य कामाय नजाहहेसोतिव लयतेअभाव हेतु॥

रासवलीलिलयोई केसवरामररोनररोअनसाथेहीसाधनसाधुभयोई॥ १७॥ अथसंभावअभावहेतु॥ जौदि

नेहविभानललीद्दिअलीमिलियमुरलीधरतेही साधनसाधअगाधसबैबुधिसोधजेदूतअभूतनिमैहीतादिनते

दिनमानहुदूनकौकेसवआवनवानकहेहीपीछेअकासप्रकासैससीवढ्प्रेमसमुद्ररहेपहिलेही॥ १८॥ अथविरो मानकहीये मनकेवढवे

धाभासलछनं॥ वनितलगैविरोधसोंअर्थसवैअविरोध प्रगटविरोधाभासयहसमुझतसवैसुवोध॥ १९॥ परमपुरष

कुपुरषसंगसोभियतदिनदानसीलपैकुदानहीसेमनहै सूरजकुलकलसरहकेरहतसमसाधुकहैसाधुपरदार

प्रियअतिहे अकरकहावतपनुषधरदेषियतपरमकृपालपैकृपानकरघनहे विद्यमानलोचनहैहीनवामलोचनन हीनवामलोचन याकेअर्थकमल नैनीपरईटहीनहै हे॥ ३॥

केसोरायराजारामअदभुतगनहे॥ २०॥ केसवदासविरोधमयरचियतवचनविचार ताकोकहतविरोधसवकविकु

लसुवुधसुधार॥ २१॥ आपसितासितरूपचितैचितस्यामसरीररंगेरंगरातै केसवकाननिहीनसुनैसुकहेरसकीरसना आपतेनेत्र स्यामअत्र ति है॥ ८

विनवातै नैनकिधौकोऊअंतरजामीरीजानतहैजियचूकतेने दूरलौदौरतहैविनपायनदूरदुरीदरसैमतिजातै॥ २२॥

सोभतसुवाससहाससुधासोसुधाकेविधिविषकोनिवासजेसोतेसोमोहकारीहे केसोदासपावनपरमहेसगतितेरीपर

हीयहरनप्रकृतकोनेपारीहे वारिकविलोकवरवीरसेवलीनिकहकरतवरहीवसअैसीवेसवारीहे परीमेरीसषी

मेरीकैसेकेप्रतीतकीजे क्रिसनानुसारीहगकरनानुसारीहे॥ २३॥ विसेषलछनं साधनकारनविकलजहहोयसा विकलक्यान हीहोय॥ ४

ध्यकीसिद्धि केसवदासवषानियेसोविसेषपरसिद्धि॥ २४॥ सापकोकेकनमालककालजटानिकीजूटिरहीजटिआते॥

षालपुरानीपुरानीईवैलसुऔरकीओरकहेविषमानेपारवतीपतिसंपतिदेषकहैयहकेसवसंभ्रमताते आपुनमांगत

भीषभिषारनदेतदईसुरहमांगीकहाते॥ २५॥ तमोगुनअरूपतेनऔपिनुविरूपनैनलोकनविलोपकरैकोपकेनिके

नं ७ तमोगुनकीसोभाकरकेसो भयमानहैतनजिनोका॥ १॥

पत्र विश्रा देहे एते मान का ... है

जे है कोई दासी वि सेका देत है
ते ते लासरज ना का देत है॥२॥

18A नहै सुबविषयरै विषपरयरै मुंडमाल भूषन विभूत भनप्रेन सभेत है ज्ञान के पिता के जुत पानकी ही को तिलक भावेगी
ने काम मही को कामनि के हेत है जोगिन की सिद्ध सब जग की सकल सिद्धि के सो दास दासिनि ज्यौं दासनि कों देत है॥२६॥
वाजन ही गज राजन ही रथ पत्त नहीं वल गान विहीनौं के सब दासक ठौर नतीछ न भूल हूं हाथ हथ्यिआर नलीनौं जोग
न जानति मंत्र न जापन तंत्र न पाठ पढ्यो न परवीनो रछक लोकन के सुगवार निरपेक्ष विलोकनु ही वसकीनौ॥२७॥ र
सिकप्रियायां॥ हृजकी कुमार कावे लीने सुक सारका पढावे कोक कारकानि के सब सवै तिवाहि गोरी गोरी भोरी भो
री थोरी थोरी वैस फिरि देवता सी होरी दोरी क्रांई चोरी चोरी चाहि विन गुन तेरी आनभूकुटी कमान तान कुटिलकटा
छ वानयह अचरज आहि एते मान ढीठ ई मेरे कों अडीठ मन पीठ दै दै मारती ये चूकती न कोऊ ताहि॥२८॥ चित्र
आवै लिषक छ देषत कौं हन वाम अंधसुनारी वेदई कैरि जान न तपति राम॥२९॥ अथ उत्प्रेक्षा॥ के सब और रहि वस्तु
मैं औरै कीजे तर्क उत्प्रेक्षा तासों कहै जिनके बुद्धि संपर्क॥३०॥ हर को धनुष नो स्यों लंका तोरि रावन कौ वसन्नोस्यो नारे जे
सहस्र वंस वान है सत्रुन के सलसलफूलत लसहै राम सुनि के सो रायकी सो हियो हहिरात है कामसर हूने तिछे तारे तरुनी
नि हूं के लाग लाग उचटपरत औसे मान है मेरे जान जानकी तू जानत है जानक छ देषत ही नेरे नैन मैं न सोहे जात
है॥३१॥ रामचंद्रकायां॥ अकेन ससंकन पत्यो थहूं कीयेकन सुअंगने नरेरं जिनर जिन निजनारी कौ नाहिने के लिक
फूलके नितमपान की निछिन्न कोंहक्क्रा उछलनां ही सुषकारी को लागन है जाय केठ नाग दिगपालन के मेरेजा
न सोई हूं न की रत निहारी कौ॥३२॥ इति श्रीकविप्रियायां विशिष्टालंकार वर्णनं नाम नवम प्रभावः॥९॥
आक्षेपालंकार॥ कारज के आरंभ ही जहां कीयत प्रतिषेध आक्षेपक तासों कहत वहु विधि वरन सुमेध॥१॥
तीन हूं काल वषानिये भयो जु भावी होन कविकुल कौतक कहत है यह प्रतिषेध उदोत॥२॥ वरज्यौ हो हूं रविगु
र हरवार कैक करि भ्रूभंग सुनौ मदन मोहन मदन है ही गयो अनंग॥३॥ तातै गोरस की जिये कोन हु विधि भ्रूभंग॥

ऐक वार धिराटी आको चहाले

अकनि सानी॥ अर्धसुनासीया को अर्थ॥ अर्धसुनारी नारी ...

जानक पाते कछु जादू जानत है

कोविद इति मषीनायक सौं कहित है नायका न ही नाहीं काज है न हां नायक को प्रेम दे विवेकोक हित है हे कोविद प्रवीनन को
कहीं कपट परेय सहा करत है नहीं नायक के वचनना हजे नायक है रसिक है सो का केलवेउ क्राह की नहीं तजत है प्रतिपल प
लक पलु प्रति नवी नेह को सल्लाहव पनर जिरहियहि रेहेउ नै नाही को कहिनो आछो लागत है नायके नायका सो प्रीत कर
लेग हित नव सषीप्रति सेयका रे है। यह वर्तमान॥१॥

केवि कोजाने हैं नायक हा प्रानना थके अंग॥४॥कोविद कपट न कार सरल गत तन जहिउ क्राह प्रतिप
प्र लनूतन नेह को पहिरे ताहे सनाहि॥५॥आछे प नाम प्रेम अपीरज धीरज तिसे सयम रन प्रकासे आसि
१९ वयरमउ पायक हि सिष्याके सवदा स॥अथ प्रेमाछे प लक्षनं॥प्रेम वषानन जहां उपजत कारज वाय॥
19 कहित प्रेम आछे प यह ना सो के सव साथ॥७॥ज्यो ज्यो वहुवर जैसे प्रानाथ मे फागन अंग न लगाई ऐजू आ
गड्ड पपायवो त्यो त्यौ हसिह सि आति सरप रड रवर कीवो की या आषन के उपर खिलायवो एको पलश त
जान उत साथ तेने दीने लीने रहे हा यही क हा लौ गनु गगायवो तुम तो कहित तिने छाड के चलन अव छाड
त पके सनु मे आगे उठायवो॥८॥अथ धीरज आछे प॥प्रेम मंगव चलन न तज हां उपजत सात्विक भाव कहित अ
धीरज को सुक वि यह आछे प सुभाव॥९॥केसव प्रात वडे ही विदा कहि आये प्रिया पहने हने हे री आवो
दि महां वन हूं जो कहे हम वोल हु ऐसे वनायक हारी को प्रतिउत्तर देय सषी सुविलोल विलोचनयो उम
हेरी सो हैके के हरि हा गिर रहै नवी सक लो अंसु वान रहे री॥१०॥अथ धैर्याछेप॥चलन रैदिन वहुत विती
त भये सकुचत कत चित चलन चलाये हो जान हे ते कहो कहां ना हिने मिलन आन जान यह छाडो मो
ह वन वटाये हो मेरी सो हित मै हरि हिहो सुष है सुष मो हू है तिहारी सो हर हो सुष पाये हो चले ही वन
त जो तो चलिये चतुर पीय सो वन ही जेय छाड जा गा गी हं आये हो॥११॥अथ संसया छे प॥उपजाये संदे
ह क छु उपजत काज विरोध यह संसै आछे प कहि वरनत जिने प्रवोध॥१२॥गुन निवलिन कल सुरन कलि
त गायल ललितायल ललित गीत वनर चाय है चित तहो चित्रन मे परम विचित्र सम चित्रनी ज्यो देष देषि नैन नि नि
वायहे काम के विरोधी मति सो गपि सो गपि साय सषी वोधवोध आग्यन के वा सर गवायहे केसो रायकी सौ
हे हय हूं इक ठिन वाकी रिस मै रसिक लालयान को वचायहे॥१३॥अथ मरनाछे प॥मरन निवारन करन

कारज कर कही येवचन काज निवारन अर्थ
धीरज को आछेप एह वरने वुद्धि समर्थ॥१४॥
त

सनेहा विवेमिले होये

चलत ८

आस लवत
सात्विक ८

19A

छोटा दरवाजा

महांकाज निवारन होत जानु हुव रनाछेपक विज्यो जियबुद्धि उदोत॥१५॥नीकै कै विचार दैहो द्वार द्वार दर
वारके मोहा मम्रासया मसरजन म्रावैगो छिनमै छिपायलैहै हेऊ परम्रटान म्राजु म्रांगन पटायलै होजैसे
मोहि भावैगो न्यारे न्यारे नारि दानिमंद है करो षजाल पायहैन पैडु यो न म्रावन न पावैगो मायव तिहारे
पीछे मोप हि म रत नम ह म्रावन कहत सु यो कोन पैडे म्रावैगो॥१६॥म्रथ म्रासिषाक्षेप॥म्रासिष पियके पंथ
को दीजै दुष्य दुराय म्रासिषको म्राछेपयह कै हित सकल कविराय॥१७॥मेंजी मित्र पुत्र जनके सव कलि म्रगन सो
दसस जन जनम तसुष सा जसो एतो सव होत जात जोपै है कुसल गात म्रवही चलौ भै प्रातन सगुन समाज सोकीनै
जोग यान वा यछे मिये मो म्रपरा पर हियेन पल म्राय वंपियेन लाज सो होन कहो कहित निगमन सव म्रवनव
राजन परम हित म्रापने ही काज सो॥१८॥म्रथ धर्माछेप॥राषत म्रपने धर्मको जहां कारज रहि जाय॥ध
र्माछेप सदा रहै वरनत सव सुषपाय॥१९॥जो हो कहैं रहिय तो प्रभुता प्रगट होत चलन कहूं तो हित हांनि का हि
म हिनो भावै सुकर हुतो उदास भाव प्रानना थ साथ लै चलहु केसे लोक लाज वहनो के सो राय की सो तुम सु
नहुछवीलै लाल चलेही वनत जो पै नाही राज रहिनो तै सीये सिषावो सीष तुमही सुजान पीय तुमहि चलन मो
हि जैसो कछू कहिनो॥२०॥म्रथ उपायाछेप॥कौनहु एक उपाय करि रोक ये पिय प्रस्थान ताही सो कहत उपायक

ह

वियं म्राछेप सुजान॥२१॥मोको सवै व्रजकी जुवती हरि गोरस मान सुहागिन जानै म्रैसी कोगोपी गोपाल
तुम्है विन गोकुल मैं वस सोउ रस्मानै मरन मेरो घडी ठकै ईठ चलौ कि रहो जु कछू मन मानै प्रेम निछेम नि

म्रारद पद ते मन
बुद्ध रत्या दिजाके

म्राद दैके सवको ऊन मो हि कहूं पहिचानै॥२२॥म्रथ सिछाछेप॥सुष ही सुष जुहि सिषिये सिष ही सिष सुष
होनि सिछाछेप कहा वरन तछे प्यै वार हवानि॥२३॥चैतछे प्ये॥फूली लतिका ललिन नरु नने फूले तेर

वियाके पंथको
म्रासिर्वाद दै दुष्य
छिपा के॥४॥

षेमकावन

त॥तरुननन का
जवान सतै

वान कयावाती करके

सुषही रति॥सीष सिषायके॥वारहछेप्येमै
वार हित रहि कीवा तीवचन है कि वानि दोष है य
ताको मीवार हिवपी केक हित है॥२॥

सिष्या सिष्या देके

दिसाचारोदिसा विदिस कोने

साष मेकया कोक की साषा मेरती नेसिषायाहै

कवि प्रि २० दाते 20

वर फूलीसरनासुभगासरसफूलेसवसरवर फूलीकामिनिकामरूपकरकंननपूजहि सुक
सारोकुलकेलफूलकोकिलकलकुंजहि कहिकेसवअैसीफूलमहिसूलहफूलनिला
इए पियआपचलनकीकाचलेचित्तनवैनचलाइये॥२४॥अथवेसाषवरनन॥[illegible]
[illegible]॥केसनऽप्रकासअविनवासितसुवासकरिवहितपवनगतमंदगातमक मकरंद पुसपको कारस
रंदविंदुधरि दिसविदिसनिकुविलागभागसरनपरागवर होतगंधहीअपवधिरमौराविदेस
नेर सुनसुषदसुषदसिषसीषपतिरतसिधईसुषसाषमै वरविरहिनवपतुविसेषकरिकामविसि कामदेवको बान
८ षिवेसाषमै॥२५॥अथजेवरनन॥एकभूजमयहोतमूतमजपंचमजनभ्रम अनिलअंवुआका
सअवनिहूजातआगसमपध्यकिनममुकतसुषितसरसिंधुरजीवत काकोदरकरको द
सउदरतरकेहरिसोवत पियप्रवलजीवइहिविधिअवलसकलविकलजलथलरहत तजि
केसवदासउदासमतिजेठमासजेठेकहत॥२६॥अथअसाढवरनन॥पवनचक्रपरचंडचलतचहुं
ओरचपलगगनभवनभामनीतजतभ्रमतमानहु तिनकीमन सन्यासीइहमाससहोतइकआसनवासी॥
पुरषनिकीकोकहैभपंपच्छियोनिकासी इहिमैसेजसोवतलीयोश्रीहिसाथश्रीनाथहू कहि
केसवदासअसाढचलमैनसुन्योश्रुतिगाथहूं॥२७॥अथसांवरनन॥केसवसरितासकलमिल
तसागरमनमोहै ललितलतालपटाततिनरूतनतनतरवरसोहै रुचिचपलामिलमेघचपलचमक
वत

निरञ्जेषकामेध्वकेसद॥ ३

पृथ्वीकौंमिलके
मेघवरसरहेहै २

20A कंतचहूँओरत मन भावनकहुँ भेटभूमिकूँ जितमिमिमोरन इहरीनरमनरमनीनिसवरमनअहलगेर
ओषक्यासह डहूँओकार मावनु वियगमनकरनकहिकोकहैगमनसुनैपेनहिसावन॥ २५॥ अथ भादोंवनन॥ घोरतघनचहूँओ
रछोषनिघोषहिमंडहि धारधरपरिपरनिमुसलधारनिजलछंडहि फिल्लीगनझंकारपव
नझुकझुकझकझोरतवाघसिंहगुंजरतपुंजकुंजरनरुनोरतनिसिदिनविसेषनि सेषमिटिजा
तसुओलीभओडुिय देसपियूषविदेसविषभादोंभौननछोडिये॥ २६॥ अथ आश्विनवरनन॥ प्र
षमपिंडहिनप्रगटपितरपावनघरआवै नवदुर्गनिनरपूजसुरगअपवर्गहिपावै छेत्रनदेछित
पतिलेतमुवलैसंगपंडित केसोदासअकासअमलजलजलजनिमंडित रमनीयरजनिरजनी
सहबिरमारमनहूरासरति कलकेलिकलपतरुकारमहिकंतनकरहुविदेसमति॥ ३०॥ कार्त्तिक
वरनन॥ वनउपवनजलथलअकासदीसंतदीपगन सुषहीसुषदिनरातजुवाषेलतदंपतिजन॥
देवचरित्रविचित्रचित्रचित्रतअंगनघर जगतजगतजगदीसजोनजगमगतनारनर दिनदाननुन्हा
नगुनगानहरिजनमसुफलकरिलीजिए कहिकेसवदासविदेसतिकंतनकार्त्तिककीजिए॥ ३१॥
फूल अथअगहनवरनन॥ मासननमेंहरिअंसकहतयासहुसवकोऊ स्वारथपरमारथनिदेनभारथमहि
दोऊ केसवसरितासरनिफूलफूलेसुगंधगुरु कूजतकलकलहंसकलितकलहंसनिकेसुर॥
हिनपरमनरमसीननगरमकरमकरमयहिपावरितु कहिप्रानननाथपरदेसकहुँमारगसिरमा
रगनचित॥ ३२॥ अथपसवरनन॥ सीततलजलथलवसनअसनसीनलअनरोचक केसवदास असनभोजन
अकासअवनसीततलअसुमोचक तेलतूलतामोरतपनतापननवनारी राजरंकसवछोडक

कितअव्रतमथुराजोकीर्त्तिहतनाहिविशेष
नाकिजोकुजितजहुँनाकिकहिनहिंजके
कनकअवकमथुरानहिंहतकेकसारे
जहाँ॥ ४॥

म • अनरोचककाचित्रकों
नहीरुचदेसीनमै॥ २॥

कवि
प्रि
२१
21

रत इनहीं अधिकारी लघु ग्रीष्म दीह रजनी रमन सोन दुसह दुष रूष मै यह मन क्रम वचन विचार वि
यं पथिन हू द्रियपूसमै ॥२३॥ अथ माघवरनन ॥ बेनु पवन के कीकयोन कोकिलकलबोलन केसव भू
ले भमर भरे बहु भायन डोलत मृगमद मलय कपूर धूर धूसरित दसो दिसि तालमृदंग उपंग सुनत
सं गीत गीत निसि षेलत नवसनसंतत सुराखसनस्रंसन अनेतगति वरनो हन क्यों उड्डिय माह मैं जो मग
नि मोहि सनेह मति ॥२४॥ अथ फागुनवरनन ॥ लोक लाज तजि राज रंक निरसंक विराजत जो ई
भावत सो ई कहत करत पुनि हारत न लाजत घर घर जुवती जुवनि जोर गहि गांठनि जोरहि वसन छीन
मुष मांड आंजि लोचन तिनतोरहि पटवास सुवास अकास उडि भुवमंडल सब मंडिए कहि केसव
दासविलास निधि फागुनफागुन छंडिए ॥२५॥ इति श्रीकविप्रियायां वर्णालंकारवरनन नाम
सप्तमः प्रभावः ॥७॥ अथ केसालंकार गनना लंकार लक्षन ॥ आदि अंत भरि वरनिए सो क्रम केस
वदास अरु गनना सो क हित है जिनके बुद्धि अपार ॥ धिक मंगन विन गुन हि गुन सुधिक सुनत न रिझिय ॥
रिझ सुधिक विन मौज मौज धिक देत जु षिझिय दीवो धिक विन सांच सांच धिक धरम न भावै धरम सु धिक
विनु दया दया धिक अरिक हू आवै अरि धिक चित्त न सालई चित धिक जिहन उदार मति मति
धिक केसव ज्ञान विन ज्ञान सुधिक विनु हर भगति ॥२॥ सो भत सोन सभा जहां वेद हैं हुन ते जुपढे
कछु नाहीं ते न पढै जिन साधु निसाधित दीह दया न हिये जिन मांही सो न दयाजु न धर्म धरै पर धर्म न सो
जहां दान वृथा ही दान न सो जहां सांच न के सब सांच न सो जु वसै छल छांही ॥३॥ नजहु जगत विन भोग
भवन तज त्रिय विनु कीनो त्रिय तजु जु न सुष देय सुष सु तजि संपति हीनो संपति तजि विन दान दान तजि
जहां न विप्र मति विप्र तजहु विन धर्म धर्म तजि जहां न भूपति तजि भूप भ्रम विन भूमि तजि दीह दुगि दि

घर पटवासकी अमीर २

न

दनेते विना

नष

तीन नाम है ग्राधि भौतिक॥ ग्राधि दैवक॥ ग्राध्यात्मिक॥ ५ पद १४ वा है॥ ५ मे ग्रर्थ कामभोग॥

गंगा जी स्वर्ग मे पाताल मे मरतलोक मे॥ ४ मंदाकिनी स्वर्ग मे भागीरथी भूमि मे भोगवती पाताल मे॥ ८

सिषा का ग्रलक ४ बलती न है॥ तन को मन को ग्रौ धन को ५

तीन परताप है मन परताप बल परताप ग्रौ वीर्य परताप ५

भुजो बमे नज दुर्ग के सवदा सक विजहा नजे ल परन लसे॥ ४॥ ग्रथ पनननं॥ एक ग्रान माच करवि एक मुक्की हृष्ट एके दसन गनेस के जानत सकली सृष्टि॥ ५॥ नदी कूल है रामसुत एक षड्ग की धार है लोचन द्विजजेन्म पद भुजग्रश्विनी कुमार॥ ६॥ लेषन डंक भुजंग की रसना ग्र यनि नजान ग्रजर दम बचुक रैडु केकजा सिषा वषान॥ ७॥ तीनवुरनन॥ गंगा मग ग नेस हंस ग्रीव रेषगुन लेष पावक काल त्रिसूल बलि सषा तीन विसेष॥ ८॥ पुष्कर विक्रम राम विधि त्रिपुर त्रिवेनी वेद तीन ताप परिताप पद ज्वर केनी तिस षेद॥ ९॥ ग्रथ चारवननं॥ वेद बदन विधि कार निधि हरि बाहन भुज चार सेनाग्रंग उपाय जुग ग्राश्रम वरन विचार॥ १०॥ सुरनाय कवारन रदन के सब दिसा वषान चतुरव्यूह रचना चमू चुरन पदारथ जान॥ ११॥ ग्रथ पांचवरनन॥ पदुपूत ई दुयिक बल हदु बदन रा जि कांत लछे न पंच पुरान के पंच ग्रंग ग्रर्थ प्रान॥ १२॥ पंचवर्ग तरु पंच ग्रह पंच सबद परमान पंच सत्यि पंचाग्नि मनि कन्या पंच समान॥ १३॥ पंच भूत पातक प्रगट पंच जन सजीय जान पंचगव्य माता पिता पंचामृत निवषानि॥ १४॥ ग्रथ षटवरनन॥ कुलसि कोन षट तर्क षट दरसन मतिनु ग्रंग वक्र ऋतु सिवपुत्र मुष सुन षटरा ग्रसेंग॥ १५॥ षट माता षट वदन की षट गुन वरनहु मित्र ग्रानन ताइ रेनेषट गनहु षटपद मधुप कवित॥ १६॥ ग्रथ सातवरनन॥ सातरसातल लोक मुनि द्वीप सूर हय वार सागर सुर गिरताल नरु ग्रन्नई तिकरतार॥ १७॥ सात छंद सातो पुरी सात त्वचा मुष सात चिरंजीव मुनिसा तनर सप्तमात कानात॥ १८॥ ग्रथ ग्राठवरनन॥ जोग ग्रंग गदि गपाल वसु सिद्धि कुल्लाचल वानु ग्रष्टकुली ग्रहि व्याकरन दिग्गज नितरु निविचार॥ १९॥ ग्रथ नववरनन॥ ग्रंग द्वार भू षंड रस वाहिनि कुंचनिधि जान सुधा कुंड ग्रहि नाडिका नव पा भक्ति वषानि॥ २०॥ ग्रथ दसवरनन॥ रावन सिर श्रीराम के दस ग्रवतार वषानि॥ वि

हरि के वाहन चार है गरुड पुष्य॥ बलाहक॥ ग्रौ सैन्य॥ ग्रौ सुग्रीव॥ ६ कवल का गाम से पंच है॥ ... जन स मय करने है॥ ... पुष्कर तीरथ तीन है एक वृहत पुष्कर दूसरे मधु पुष्कर ... विक्रम बल तीन है तन को मन को ग्रौ धन के विष क्रिया से तीन है॥ ५ मुष ग्रसम ग्रौ मित्र तनय त्रिपुर ... हरि के बाहन चार है॥ मेघ पुष्य बलाहक ग्रौ सैन्य ग्रौ सुग्रीव॥ ६ इंद्रिय पांच है॥ त्वचा श्रोत्र नेत्र घ्रान जिह्वा॥ ७ ... पातीत नल है॥ ग्रतल वितल सुतल तलातल रसातल महातल पाताल ये सात तल है॥

प्रान पांच है

मनुष्यके दस दोष है ॥ चोर जुवारि जत्र अरु कायस्थ ककरूप ॥
अथ पंगु अरु बधिर पुनि क्रीडो बदस रूप ॥१॥

अनेकनको नायक ॥५॥ स
अथ नायका ॥ बिरहनी बंडिता कलहंतरा ॥५॥

...द जीत जो है सो भूतल में... मे अभूत ... पंच भूत अभूत
जे ॥ पृथ्वी अपतेज वायु आकास ताकी प्रभूत है ता से उपज्यो है यह अर्थ
मव हे सार मेजे भूत उज्यो है ताकी सरन है ... के है ॥३॥

कवि
२२
22

वै
पालकै सात ही
पुरी सो पूरे प्रेम
पायय तु है ॥५॥

...दे ताहो षदस दिमाद मादसजान ॥२१॥ विरोधाभासालंकार ॥ एक पल थिति येव सत प्रतिजन जीव हि कर
पै दै मदसकर को परन है त्रिगुन कलिन वहु वलित ललित गुन गुननि के गुन तनु रुफलित करन है चारहीय
दारथ को लेत चित नित नित दीवे को पदारथ समूह को परन है केसोदास दूजी न भूत अभूत नपंच भूत की
प्रभूति भव भूत को सरन है ॥२२॥ दरसैन सुरसेन रस सिरनावे नित षट दरसन ही को तिदर्नै ये यन है केसो
दास पुरी पुरहु पुंजनि को नायक नै ... नव असुनायका निही सो मन लायय तु है तव पाई है सिको भजन रे
जीत जूको दस अवतार ही को गुन गाइयतु है ॥२३॥ अथ आसीर्वाद वर्नन ॥ माता पिता गुर देव मुनके हु
तनु के छु सुष पाय नाही सो सव कहित है आसिष कविक विलय ॥२४॥ मलयमिलन वास कुंकुम कलित
जुत जावक कुसुमन धूप जत ललित कर जटित जराय की जंजीरी वी चनीलमनि लागर है लोकन के नैन
मानो मनहर पन्नग पतंग अरु किन्नर असुर सुर मसक गयंद सम चाहत अचर चर हूय परग यपर पलि
को सु पीठ परअरु उर परअवनीस निके सीस पर ॥२५॥ होय पो को ऊ चराचर मध्य म उत्तम जात अनुतम ही को ॥
किंनर के नर नार विचार कि वास करै थल के जल ही को अंगी अनंग कि मूढ अमूढ उदास अमीन सही को ॥
सो अथ वो कव हूजिन के सव जाके उदोत उदोस व ही को ॥२६॥ अथ प्रेमालंकार ॥ कपट निपट मिटि जाय
जे हाउ पजे ए रन छेम नहीं सो सव कहित है के सव उत्तप्रेम ॥२७॥ कछु वात सुनै सपने हू वियोग की होनच
है दुघट कही यो मिलि बेलि पजा सहु कालक तेक हि ता सों अवो लो कैं जात कियो कन्हैए कहा के सव नै
नति सौं वितकाज हि पावक पुंज पीयो सषीतें वरजे अरु लोग हसै सव का है को प्रेम के भ्ने मली यो ॥२८॥ अथ
श्लेषालंकार ॥ दोय तीन अरु भांत वहु अंन जजां मैं अर्थ श्लेष नाम तासो कहित जिन की वुद्धि समर्थ ॥२९॥

वे सव न ... जो
जो सन्यासी जंगम
सेवरा ॥४॥

नय

न

श्रीसा
श्री रास ... के
चरन कोव रनम
पलिका पलंग पर

किमीताय

...के देस मेरा जिनके ...दकको सीस में राषत हैं ईश्वर ...के मानत हैं ॥१॥ 22A

...गन ... नहि है भगवानजी द्रव्य में जो रहे सो गुन श्रेसो लछन व्या करन को लीजिये ॥२॥

राजा अमरसिंह के से हैं ॥ हिरन्यस्वरूप ... कसिप पलियो से ज्या ॥ तिनो के दानकारनवा ला है २॥ फेर कैसा है राजा ॥ प्रहिलादहित ...

नृसिंह भगवानजी ...से है ॥ हिरन्य कस ...व्यसना के दान कारी है क्या मारन वाले है ॥२॥

...सरन थर निर्दूसती सचरनोदक निगावत चतुर मुष सव सुषदानिये कोमल अमलपदकमला कर क
मल कलित विलित गुनकौन उरश्रांनिये हिरन्यकसिप दानकारी प्रहिलाद हित द्विजपद उर धारी बेद न बषा
निय केसो दास दारिद दुरिदके विदारिवेको पकैनरसिंह किअमरसिंह जानिये ॥२॥ अथ षष्टी ॥ परम विरो
धी अवरोधी हूर हित सव दानिन के दानक विके सव प्रमान है अपिक अनंत आप सो हूत अनंत संग अस रन हर
न निरछक निधान है हुनभुक हित मति श्रीपति वसत हिय भावत है गंगाजल जगको निदान है केसोराय
की सौं कहे केसोराय देषि देषि रुद्र कि समुद्र कि अमरसिंह दान है ॥२॥ अथ चतुर्थी ॥ दानवार सुषद जनक जा
नना नुसार करवत पनुगन सरसमुहाये है नरदेवछेयकरक रमहरनषर दूषन के दूषन सु केसोदास गाये है ना
गपर प्रियमान लोकमाता सुषदान सोहर सहायक न वल गुन भाये है ऐसे राजा राम बृजराम कि परसरा
म केसोदास राजाराम सिंह उर आये है ॥२॥ अथ पंचमी ॥ भावत परमहंस जान गन मुनसुष पावत से गीत मीत
विवुध बषानिये सुषद सकति परसमरसने ही बहु वदन विदित जस केसोदास गानिये राजै द्विजराजपद भूषन
विमल कमला मन प्रकास परदार प्रियमानिये ऐसे लोकनाथ कै त्रिलोकनाथ रघुनाथ के थो नाथ नाथ राजा
राम सिंह जानिये ॥२२॥ अथ श्लेष भेद ॥ तिन में एक अभिन्नपद और भिन्नपद जान श्लेष सुबुद्धि दुवेषके के
अ५
सोदास वषान ॥२४॥ अथ अभिन्नपद ॥ सोहत सके सीस में जु जेयो धार ति उरवसी राजा राम मो हि वे को सूरन सुहा
ई है कलरव कलित सुरभि राग रंग जुत वदन कमल षटपद छवि छाई है भकुटी कुटिल धनु लोचन क
टाछ सर मेहिय न तत मन आति सुषदाई है प्रमुदित पयो पर दामिनी मे ... साथ साथ काम की सी सेना

क वि
म २३
23

कामसेनावनआई है॥२५॥ अथ अभिन्नपद॥ पदही सौ पद का ही पेना हि भिन्नपद जानि भिन्न भिन्न पु
नि पदन के उपमा श्लेष वषानि॥२६॥ हृषभवाहिनी अंग उरवासु किल सननवीन शिव संग सो है स
दा शिवा कि राय प्रवीन॥२७॥ अथ उपमा श्लेष॥ रजे रजे के सोहा सहटत अरुन लार प्रतिभट अ
कनते अंक पसरत है सेना सुंदरीन के बिलोक मुष भूषन निकि लक किलक जाही ताही को परतु
है गाहे गाह षेल ही षिलौनि निज्यौं तैसे रारै जगजय जस चारु चंद्र को अरतु है चंद्रसेन भुवपाल
अंगन विसारन ते रंक रवाल वाल लीला सी करत है॥२८॥ बहुरौ एक अभिन्न क्रिया विरुद्ध
कियआन सुन विरुद्ध कर्म अवर नियम विरोधी मान॥२९॥ अथ अभिन्न क्रिया श्लेष॥ प्रथम प्रयोग कि
बतु वाजि द्विज राज प्रति सुवरन सहित नविहित प्रमान है सलज सहित अगाविक्रम प्रसंग रंग को सते
प्रकास मान धीरज निधान है दीन को दयाल प्रतिभटन को साल करै कीरति को प्रतिपाल जानत जहान
है जात है विलीन है दुनी के दान देष राम चंद जू को दान कि पोके मवह कृपान है॥३०॥ अथ विरुद्ध क्रिया॥
कछु को हू सुनो कलवोलित को किलका मकी कीरत गावत सी पुन वातें कहे कलभाषिन का मिनि के
लि कलानि पढावत सी सुनवाजि तवीन प्रवीन नवीन सुरा गही वेउप जावत सी कहि के सवदास प्रका
स विलास सवै वनसो मवढावत सी॥३१॥ अथ विरुद्ध कर्म॥ दोऊ भगवंत ते नजवंत वलवंत अति दुहू नि
की वेद नवषानी वात ऐसी ही है दोऊ जाने पुन्य पाप दुहूनि के रिषवापदु हूनि की देष यति भूरत मुदै सी है॥
सुनो देव देव वलदेव कामदेव प्रिय के सौ राय की सौ नुमक हो जैसी तैसी है वा हू नी को राग होत सूरज

रहां क्रिया प्रयोगियत यह दान सो औ क्रिपान सो लागी फल विरुद्ध दान पान को पोषे त रवार प्रान को षैचे है ७ एगनाम रंगका
सूर्य को पिता कस्यप रिषी   पश्चिमदिसा   औ प्रेमका १
चंद्रमा को पिता अत्रि रिषि   औ मदिरा

रहाब्राह्मणकोउदय प्रकासुथुहि विरुद्धकर्म उदयमेंलेष॥१

जे हे एक अर्थमें दूसरो अर्थ तिनको अर्थ नियम है पहियाकेसल केहे॥ सुवरन मे दुर्गति मे एक दूसरो अर्थ निकरेसो॥१ ... हो॥४

स

23A करतब्रह्मउदोहिं जराजकोजुहोतयहकैसोहे॥४२॥ अथ नियम॥ वैरीगायवामनकौकालेवकालज हांकविकुलहीकोसुवरनहरकाजहे गुरुतेजगामीएकवालकैविलोकमनुमातंगनिहीकोमत वारेकोसोसाजहै अरिनगरीनप्रतिकरतअगम्यागौनदुर्गनहीकेसोदासदुर्गतसीश्राजहै राजा दसरथसुतराजारामचंदतुमचिरविरराजकरेजाकोऐसोराजहै॥४३॥ अथ विरोधीश्लेष॥ कुल हरेहरयेहरेसंपतिसमुविपतह्हेअधिकाई जातककामअकामनिक... हितह्यातककाम सो

सकामसहाई कालीलकदुरावनवैनौफिरावतपसवकेसगपाई जह्यपकेसवपकतऊहरितेहरसेवक कोमतभाई॥४४॥ अथ पर्तत्समालंकार॥ कोनहुभावप्रभावतेजानेजीयकीबात इंगितते आकारतेकहिसदमअवदान॥४५॥ रसिकप्रिया॥ सषीसोहतगोपसभामहिगोविंदुबैठेहुतेदुति कोथरिकै जनुकेसवपूरनचंदलसेचितचारुचकोरनिकोहरिकै तिनकोउलटोकरिआनदियोकि हुनीरजनीरनयोभरिकै कहिकाहेतेनेकुनिहारमनोहरफेरदीयोकलिकाकरिकै॥४६॥ अथ लेसालंकार॥ चतुराईकैलेसतेचतुरनस...लेस वरनतकविकोविदसवैताकोकेसवलेस॥४७॥ षे लनहेहरिवागेवनेजहांवैठीप्रियारतिसोंअतिलोनी केसवकैसेहूपीठमेनीठपरीकुचकुंकुमकीहरवरो नी मानसमीपहुराईभलेतिनसात्विकभावनिकीगतिहोनी पूरककूरकीपूरविलोचनसूत्र... हस्योहअबोनी॥४८॥ अथ निदर्शनालंकार॥ कोनहुएकप्रकारतेसमअसमसमात करिएअ टनिदर्शनानामसुफलनसकलसुजान॥४९॥ तेईकरेविरराजराजतिमेराजेराजतेनहीकेलोकलोकलो

श्रृंगार रस जानहे॥ नायक नायका आलंवन विभाव एकांत स्थल उद्दीपन विभाव अनुभाव सात्विक संचारी सब मिल्यो रसमय यो॥ ७॥
श्री नम्र स्थाई

कवि कनअटतु है जीवन जनम तिनहीके यन्य के सोदास आरेनके पसु निज्यो दिन निघटतु है तेरे प्रभु परम प्रसि
सू द्धपुहमीके पति तिनहीकी प्रभु प्रभुताई कौरटतु है सूरज समानु सो मरूमित्र हू अमित्रक हू सुप दुक्ख आपुने उ
२४ देही प्रगटवु है॥ ५॥ अथ ऊर्ज अलंकार॥ तजेन निज अहंकार को जद्यपि घटैसहाय उर्ज नाम तासों क
24 है के सवक विकसाय॥ कोवपु रजो मिल्यो है विभीषन हू कुलदूषन जीवे गोकौलौ कुंभकरनम
मद्यवा रिपुतैसुकहानइरौ जमसों लै अरघुनाथ के गात निसुदरि जानहु ते कुसलोन ननौलौ॥
सालसवै दिगपालनकौ करै रावन के करवाल है जौलौ॥ ५१॥ अथ रसवत अलंकार॥ रसमैं होय य
सु जानियेरसवत के सवदास नवरसकौ सर्छे पहीसमुफौ करत प्रकास॥ ५२॥ अथ श्रृंगार॥ आनतिहा
रीन आनक हौनन मैं कछु आनन आनहीके सो केसव कान्ह सुजान सरूप न जायक ह्यौ मन जानत
जैसो लोचन सोभ हिपीवत जात समान सिहान अद्यातन तै सो ज्यौन रहान विहान तु मैं वलि जान सुवा
तेव हौ नेक वैसा॥ ५३॥ अथ वीररस॥ रामचंद्र चंद्रिका मैं जिह संरम पुमदमर्दि महासुर मर्दन कीनो॥
६५ मारयौ ककसनरक संषहतिसय सुलीनो निकेटक सुरकेटक कस्यौ कैटभ वपु पंडयौ षरदूषन त्रिस
राकेवंपन षंडवि हंडयो कुंभकरन जिम दहल्यो पलन प्रतिज्ञा तेटल्यो तिहिवान प्रान दसकंठके कं
ठदसो षंडन कस्यो॥ ५४॥ अथ रौद्ररस॥ करि आदित्य अदृष्ट नष्ट जमकरौ अष्टवसु रुद्रनि वोरि समु
द्रकरो गंधर्व सर्व पसु वलित अवेर कुवेर वलिहि गहि देउँ इन्द्र अव विद्याधरन अविद्यक रौ विन सिद्धसि
द्ध सव लेकरो अदिति की दास दिति अनिल अनल मिल जाहि जेलल सुन सरज सूरज उगन

उतसाह स्थाई भगवान ओ असुर आलंवन॥ ६

अवेरनाम सीह ग किंवा संभात र

कोप स्थाई उग्रता संचारी वचन अनुभाव रावण विभाव
सीताजी का वियोग प्रलाप निरपराध देव जन को मारना उन्माद
[illegible] संचारी ३॥

सिगृनासो नगारे
नहीं वाजते २

दुंदुभी आदिका अनुभाव उद्दीपन इष्ट दर्सन पथ ओर
सोक स्थाई करुना रस पूरन भयो २

२५A हौं कहे तो असुर संसार खल ॥५५॥ अथ करुनारस ॥ दूरते दुंदुभी दीह सुनी नगनी जनु पुंजकी गुंजन गाढी तोरें काहू रक्का दरवाजा २
नेत रनंत रवं जे नर भाव न भाट न गावत ही विप्रन मंगल मंत्र पढे अरु देषें न वारवधू ढिग ठाढी केसव नात
२ के गात उतार निआ ति आरत मात हिवाढी ॥५६॥ अथ भयानक रस ॥ राम की वाम जु ल्याय चुराय सु लंक सीता विभाव वचन अनुभा
मैं मीच की वेल वई जू क्यों रन जीत हु गे तिनसों जिनकी धनुरेष न नाषी गई जू वीस विसे वल वंत हुते ई हु व भय स्थाई
तो हृग केसव रूप रई जू तोरि सरासन संकर को पिय सीय स्वयंवर क्यों न लई जू ॥५७॥ पुनः वालि वलीन मंदोदरी को भया
वचो वच्यो परषो ग्रीसु क्यो वच हौं तुमको निज षोर रहि केसव छीर समुद्र थ्याक हिकै सेनवारच्ये हे सागर षोर रह्यो ॥ नक रस ॥ ३ ॥
श्री रघुनाथ गनो असमर्थ न देषि विना रथ हाथ हियो रहि तो स्यो सरासन संकर को जिहि सो वक हा तुव
लेके न तोर रहि ॥५८॥ अथ वीभत्सरस ॥ सिर ऐन रस्ना यक असुर विनायक रक्त स पति हिय हार राय का हुन
उठायो अरु नचहायो टस्यो न टारें भीत भए इ निराजकुमार न असितु कुमार निलें आपे सव लाज मरे त्रुनमं
गह मारे भयो तुम्हारो निषत पमे जनजान परे ॥५९॥ अथ अद्भुत रस ॥ आसी विष सिंधु विष पावक सो नातो क
ऐ हुतो प्रहिलाद सौ पिता को प्रेम टूटो है [illegible] की देह मे घुषी ही दुस्सासन षरोई षिसानो षे चिवस वल
कू नन टो हौ पेट मै परी ज्छिन की पैठि के व घ प्र मीच जव सव ही को वल वि वानल टूटो हौ केसव अना
१२ थन को नाथ जौं रघुनाथ हाथी कहा हाथ को हथिआर करि छूटो है ॥६०॥ के सोदास वेद विधि साथ ही
वनाई व्याध सवरी को कोने सुचि सहिता सिषाई ही वेषधारी हरि वेष देष्यो है असेष जग तार का को कौने
सिषनार कथ नाई ही वारानसी वारन कह्यो है के हूं सेव वास गनिका कव हुं मनि कनिका न हाई ही पति

पुषी नाम
षातीप

छि४

इहां जगत सौं निर्वेद सांत रस
किंवा सांती ४

कवि
म०
२५
25

तति पावन करत ज्यों मन नंद है न पूतना कुवहि पति देवता कहाई है ॥ ६१ ॥ अथ हास्य ॥ बैठ जिहैं
तिनमै हुठिकै जिनकी तुम सौं गति प्रेम पगी है जानत हौ न लरा जद मैं नीकी दूत कथा रस रंग रंगी
है ए जै गीसा धसबै सुषकी तन भाग की कै सबु जोत जगी है मोद की बात सुने तेक थे वहि मारु
कै तेमुसक्यान लगी है ॥ ६२ ॥ अथ सं[illegible] हे हूगो जीवन हूं निव हे श्रम हैं सगरे जग को जिन दैये आ
वन ज्यौ पंथ नउ धम तें मुष त्यों दुष पूरव [illegible] ये ये रज औं रंक सुराज करो सब का है को के सबकु
हू उरैये मार निहार उवार न हार सु तै सब के सिर ऊपर है ये ॥ ६३ ॥ अथ अर्थान्तरन्यास ॥ और आ
नि ऐसर्थ जहां और ऐ व सुवषानि अर्थान्तर को न्यास यह चार प्रकार सु जानि ॥ ६४ ॥ भौरै हू भोहव
ठाउ चितै डरपाइ ए कै मन क्यो हू करेरो ताको तो के सब कोर हि ए दुष होत महा सु कहो उन हेरो कैसो
है तेरो हियो हरि मेरहि क्यों रहिनी न उकूटत मेरो बूंद कदूध को मा त्यो है वांपि सु जानत हो मोई औसो
नतेरो ॥ ६५ ॥ अथ भेद ॥ जुक्त अजुक्त वषानि ये औ रि अजुक्ता जुक्त कै सब दास विचारि ए चैया
जुक्ता जुक्त ॥ ६६ ॥ अथ जुक्त लक्षन ॥ जैसो जहां जु व फिपैतै सो तहां सु ष्यान रूप सील गुन जुक्त व
लथै सेजुक्त वषान ॥ ६७ ॥ गरवो गुरु के दोष दूषन कलंक करि भूषत निसा चरीन अंक न भरत है ॥
वड करमं डुल ते लैले तैप्रचंड करकै सो दास प्रति मास मास निसरत है विष वंधु है अनाथ निको प्र
तिवंधु विष को विसेष वंधु है यो हहिरतु है कमल नैयन की सौ कमल नैपन मेरे चंद्रि सु बिचंद्रिमा तै न्या

वि ता व्याह द
मयंती को अनु
राग उद्दीपन र
स कान ते हो

जहां और स्मर
थ का कथन है
ता के पुष्ट करने
के लीय और
अर्थ आनै द
ते रि प्रीत ह रि वि
षे न ही है या वा
त के पुष्ट करिवे
के लीय कह्यो
ते रो जन्मा यो न
र ही ६

अंके नाम दुष का
किंवा पाप कार

निसाचरी नाम विभचारनी ता के पाप को भरयो है क्या यारत कर
द है यह अर्थ रात्रे मै व्यभिचार बहुत होत है ॥ ३ ॥ सिवजी का हित है र ॥

अ

25A पहीजरतहै॥६८॥अथ उंजुक्त अलंकार॥जैसोजहांनदृपिपतैसोतहांजुहोय केसोदासअजुक्तकहिवरन
हैसवकोय॥६९॥केसोदासहोतिमारसिरीपसुमारसिरीआरसीलैदेषिदेहिऐसीपहेरावरी अमलवता
सेऐसेललिनकपोलतेरेअधरतमोलयरैदृगनिलचावरी पहीछविछकिजातवनमैछवीलेलालललोचन
गवारछीनलैहैइनआवरी वारवारवजतिवारवमजानकतमैलैवारवारेअजवारीहैतूवावरी॥७०॥अ
थअजुक्तेजुक्ते॥असुभैसुभहैजातजहांक्योंहूकेसवदास इहैअजुक्तेजुक्तेक विवरनतवुद्धविलास॥७१॥
पातकहानिपिनासंगहारिनगभंकिसूलननेउरपेजू तालुनकोवंपवोवपटोरकोंनाथकेसाथचितजर मे6
पेजू छत्रफटेनैकुटैरिनकेसवकेसहैतीरयमैमरिपेजू नीकीदसोलगेगारसनेंसुकीडाडमलोजुगयामरि
पेजू॥७२॥आगेहूलीवोइहेजुचितेइतचौकेउतैइतअवलईहै मानिवेकोवहईप्रतिउत्तरमानियेवातजे
मोनमईहै सोषकीरेखवहेरसकीनपकाहेकोकेसवछाडदईहै नांहियेहांनुमनोंहीसुनीयहनारिनईनकी
रीतनईहै॥७३॥अथ जुक्तेअजुक्ते॥इष्टैवातअनीष्टजहांकेसेहूहैजाय सोईजक्ताजुक्तेक हिवरननकविसु
षपाय॥७४॥रसिकप्रिया॥सूलसेफूलसु[illegible]रासीभाकसोसेमयेमोनसमागे केसववागमहांवनसोज
रसीवदीजोहतवेअंगदागे नेहलग्योउरनैहिरसोनिसनाहवैरीकुवहूअनुरागे गारीसेगीतविरीविसुसी
सिगरेईसिंगारअंगारसेलागे॥७५॥पापकीसिद्धसदारिनहद्धिसुकीरतिआपनीआपकहीकी दुःष्यकोदा
नजुसूतनकहानिजदासीकीसंगतिसंततफीकी वेदीकोभोजनभूषनराडकोकेसवप्रीतसदापरतीकी फू
फैमैलाजदयाअरिकोअरुवांमनजातिसोजीतिननीकी॥७६॥अथ व्यतिरेक॥तामैआनैभेदकछूहोइजुव
सतमान सोव्यतिरेकसुभांतहैजुक्तसहजपरिमान॥७७॥अथ जुक्तिव्यतिरेक॥सुंदरसुषदअतिअमलसकेल

फलकालाभके सहित हेतजाई दृजीतसुभलजेकर

इदतरवरकेसाहेसंगीतसी क्याभेकहीयेसुषताकैंगीतसौ॥

कवि २६ प्र 26

विधिसदलसफलवेहमैरससंगीतसौ विविधसुवासजुतकेसोदासआसपाससाजैद्विजराजतनपरमपुनीतसौ फूले दूर हितदोऊदीवेहीकोत्रनिपालदेतकामिनानिसवमीतहूंअमीतसौ लोचनवचनगतिविनइतनोई भेदईद्रतरुवर अरुईदृदेद्रजीतसौ॥७८॥ अथसहिजव्यतिरेक॥गायवतावरयामसवैथनजातवरावरहीचलिआई केसवकेस हिवानपितानिवरावरिहीपहिरावनिपाई वैसवरावरिदैयनिदेहिवरावरिहीविधिबुद्धिवढाई पत्रालिअजुही होहुगीकेसवहीतुमआविनहीकीवडाई॥७९॥ अथअपन्हुति॥मनकीवस्तुदुरायमुषऔरैकहीपवानक हनअपन्हुतिसकलकवियासैवुद्धिअवदात॥ सुंदरललितगतिवलितसुवासअतिसरससुहृतिमनमेरेमन मानीहै अमलअषिनसुभूषितनभूषितसुवरनहरनमनसुरसुषदानीहै अंगअंगगूढभावकेप्रभावजा नैकोसुभावहीकीभावरूपपविपहिचानीहै केसोदासदेवीकोऊदेषीतुमनाहीराजप्रगटप्रवीनरायजूकी यहवानीहै॥८१॥कारेसटकारेकेसलोनीकछुहौनीवैससोनेतेसलोनीद्रुतिदेषियततनकी आछेआ छेलोचनचितौनिऔचलनआछीसुषसुषकवितावितामोहैमतिमनकी केसोदासकेहूंभागपाइयेजोवा गतहिलासनिउसासैसाथपूजेरतनकी वेटीकाहूगोपकीविलोकीप्यारेनंदलालनेंमहीलोललोचन वेदवावडेयनकी॥८२॥इतिश्रीकेसोदासविरचितायांकविप्रियायामेकादसःप्रभावः॥११॥

अथयुक्त अलंकार॥बुद्धिविवेकअनेकवलिउपजेतिनकेअपार तासोंकविकुलजुगतिकहिवरनतअमितप्रका र॥१॥अथयुक्तिभेदकथन॥वक्रअन्यव्यधिकरनकहिऔरविशेषसमान सहितसहोक्तिमेकहीउक्ति सुपवप्रमान॥२॥अथवक्रोक्ति॥केसवसूधीवातमेवरनतटेढोभाम वक्रोक्तितासोंकहितसदासवैके विराव॥३॥रसिकप्रिया॥ज्योंज्योंहुल्लाससोंकेसवदासविलासनिवासहियेअविरेष्यो त्योंत्योंवठ्योउ

हिरेपाऊ अधिकहै

देवीकैसीहै अकृतिसंगीदि कैमेप्राप्तिहै ८ सुंदरचतुरस्री मतीहैजाकी ८

नरहितरहिके ठग्य ने जोभावघे धाताकोजोप्रमा वसन्ति अकेसोचे छाकरहैनेताके मन मैयहवात है मनोरथकी जाननवालीहै हीकीहृदयको भावरूपआत्मा रूपहैपछिकेनप छाकरकेलोगन नेपहिचानीहै

ज्यौं ज्यौं हुलास सो सोइ इति
षंडता को वचन सषी सों १

संपति है तौ न राजा को कोई देषत है तन्हि सुनायके
कहतर हैं दूपपे वे क्यों हैं सुकतासो कहित है २

26A

एकपकऊ भ्रम मीत न भयो क्यों सीत विसेष्यो मुद्रित होत न सषी वरही मैं रैन सरोज निसा चिके लेष्यो तेंऊ कहो मुषमो हन को अरिविंद सो है सो तो चंद में देष्यो ॥४॥ अथ अन्योक्ति ॥ और है प्रति जु वषानिये कछु और की बात ॥ अन्य उक्ति यह कहित है वरनत कवि न अघात ॥५॥ दलदेष्यो नहीं जड जाडो वडो अरु ग्राम मध्य नो जल क्यों गहरि हे कहिके सव कायु वहे दिन दाव दहे परि पीर जक्यो थरि है फल है फूलना हि किंतौ लौ तुहीं कहि तोप हि मूषस हीपरि है कछु छांहि न हीं मुमसो भके हि कीरक रीरक हा क सिहे ॥६॥ अंगअली परिए अंग तिआऊ न आ जु तेनी दोनआवन दीजें जानत हो जियनाते सषीनि के लाज हु तो अवसा पन दीजे प्यारे हि प्यास तेषेल न तेऊ लगी उन सौं जिन देषत जीजे नाहके नेहके मामिले आपु नी छाह हु की परतीति न कीजे ॥७॥ अथ व्यापिकरनोक्ति ॥ और हि में की जे प्रगट और हि को गुन दोष उक्ति है व्यापिकरन की सुनत होय संतोष ॥८॥ जानुके हि ना भि कूल कंठ पीठ भुजमूल उरज करज रेष देषी वहु भांति है दलिन कपोल रद ललित अधर रह चिर सनार सतिर सरस मैं निसा तिहै लेटलेट लोट पोट लपटाति वीच वीच हा हा हूं हूं नेति नेत वानी होत जात है आलिंगति अंग अंगपोड यन पद्मिनी के सौतिन के [illegible] पीडति पिरातु है ॥९॥ राज भार साज भार लाजि भार भूमि भार भव भार जय भार नीके ही अटतु है प्रेम [illegible] न भार के सव संपति भार पति भार जुति अति जुद्ध निजदतु है दान भार मान भार सकल सयान भार भोग भार भाग भार हटनाव्हदव हू व्हेने भार फूल नि ज्यौं राजे राजाराम सिर तिहि दुष्टि सत्रुनि के सीर षफ टतु है ॥१०॥ एत भयो दसरथ को के सव देवन के घर वाजी वधाई फूल है फूलनि को वरषे तरु फूलफलै सव ही सुषदाई औरव ही सरता सव मंजु तली पीर समीर सुगंध सुहाई सर्व सलोक लुटावत देषके दानि दहे हद रार सीधाई ॥११॥ विसेषोक्ति ॥ विद्यमान कारन सकल काज है होय न तिहि सो ई उक्ति विसेषमय

नहीं
तिहारूप सषी
को भीनाआउन
दीजे

नायकाके अंग
पीडनेषते सौ
तनको पीडादे
षजातियेह

न ३ ५
नायक सोंछुपि
के प्यार करि आई
है सषी ताहि सुना
यके अन्य स
भोग दुषिता ह
त है ॥५ अनिआ
रूपसषी

इहां राम हि हके गुन सौं सत्रु
नके सीस फाटवो दोष २

इहां राजा दसरथ के वधाई गुन ते
दरिद्र की देह मे दरार दोष १

कर्नआदिअंगउघारवेकरनेहे
अंगउघारवोकारजनहीभयो॥२

कवि केसवपरमप्रसिद्ध॥१२॥कर्नसेदुहूनैपुहुहूनेभटपायसोपुहुनसासनदारै सोदरसैनदुस्सासनसेसवसाथसम
प्र. र्थभुजाउसकारै हाथीहजारनकेवलकेसवअैचपकेपटकोडरडारै द्रौपदीकोदुरजोधनपैनिलज्जगनऊउघे
२४ र्योनउघारे॥१३॥रसिकप्रिया॥सिषेहारीसषीडरपायहारीकादंबिनीदामिनीदिषायहारीद्विसअधिरातकी॥
27 कुकि हारीरतिमारहारहारयोमारहारीफककोरतिद्विवियगतिक[illegible]की दईनिरदईदईवाहिअैसीव्याहेमति
राजनजुरेनदिनदाहअैसेगातकी अैसे[illegible]नैहोमनायहारी[illegible]सवोलहारीकोकिलावुलायहारीचा
नकी॥१४॥कर्नकृपाद्विजद्रोननहा॥ [illegible]काहूपैजायनदास्यो भीमगदाहिपरेपनुअर्जुनजुद्धजुरेजि
नसोजमहास्यो केसवदासपितामहिभीषममीचकनीवसलैदिसिचास्यो देषतहीतिनकेदुरजोधनद्रोपदी
ऐसवदुर्योधनके रोकवेकारनहेरो कवाकारजनाम यो८
सामुहेहाथपसास्यो॥१५॥वेईहैवानविथानतिथानअनेचमू जिनजोरतईजू वेईहैवाहुवहेपनुधीरजही के
हदिसाजिनजुद्धजईजू वेईहेअर्जुनआननहीजगमेजसकीजिनवेलवईजू देषतहीतिनकेनवकावनि
तीकहिनारीछिनायलईजू॥१६॥सहोक्ति॥हूंतिहहूसुभअसुभककूकेहिएकप्रकास होयसुहोक्ति
सुसाथहीवरननकेसवदास॥१७॥सिसुतासहितभईमंदगतिलोचननिगुननिसोवलितललितगतिकाईहै॥
भौहनिकीहोडाहोडहैगईकुटलअतितेरीवानीमेरीरानीसुननसुहाईहै केसोदासमुषहासहीसिषेहीकट
नटछिनछिनसूछमछवीलीछविछाईहै वारबुद्धिवालनिकेसाथहीवढीहैवीरकुचनकेसाथहीसकुच
उरआईहै॥१८॥अथव्याजस्तुतिनिंदा॥स्तुतिनिंदामिसहोतजहांउस्तुतिमिसिनिंदाजानि व्याजस्तुतिनि
दावहैकेसवदासवषानि॥१९॥रसिकप्रिया॥सीतलहूंहीतलनुमारेनवसनवहनुमननतजतनिलनाकोउरना
पगेहू आपनेज्योंहीरासोपरायेहाथहजनाथदैकै तोअकाथसाथमैनअैसेमनलेहु एतेपैकेसोदासनुमे
नवाहिवाहवहेजेकलागीभागीमषसुषमूलकेरोहू मांडयौमुहहमाडोछिनछेलनिछवीलेलालअैसे

अैसोअरजनिरछाकरवेकोकारनेहे
रछाकारजनाभई८

२७A

सीतोगवारनसैतुमहीनिवाहोनेहू॥२०॥व्याजनिंदास्तुति॥केसरकपुरकेजकेनकीगुलाबलालसूचनननचं
पकचंबेलीचारुजोरीहैंजिनकीतुपासकानबूकिएतेआसपासठाहीकेसोदासकीनीभयभ्रममोरीहै तेरोको
नोकृतनकियौमहिजसुवासहीनेवनिगईहरिचितकेहूचोराचोरीहै सुनहिअचेतआईरहहेननहीतरूनोली
ग्वालगोकुलगवरहारीथोरीहै॥२१॥जानिएजाकीमायामोहतमिलेहूमोहिएकहायपुन्यएकपापकोनि
वारिए परदाराप्रियमतमातंगसुताभिगामीनिसचरकोमोमुषदेषोदेहकारीए आजुलोंअजादराषैबर
दविनोदमावैपनेपैअनाथअनिवेसवनिहारिए राजनकेराजाछाडिकीजतितिलकताहिभीषमसो
कहाकहौपुरषनिनारिए॥२२॥अमितलछन॥जहांसाधनेभोगवेसाधककीसुभसिद्धि अमितनाम
तासोंकहितजाकीअमितप्रसिद्ध॥२३॥आननिसीकरलीककहाहियनोहितनेअतिआतुरआई पी
कोभयोसुषहीमुषरागकैयोनेरंगपियाबहुवारवकाई प्रीतमकोपटकैयोपलटयोअलिकेवलनेरंग्रतोत
कोल्याई केसवनीकेहीनायकसोरमिनायकावानिहीवहिराई॥२४॥कौनगनैकैतेजगमांतिसेन्दिए
साथसवैदलराजनिहीकोजानेकोषां[illegible]लतानसौंआयोमहावदीसाहदिलीको औडछेआनि
जुरयोमकहिकेसवसाहमयुद्धकेरसोमक[illegible]दोरिकेदूलहुराम[illegible]जीतिकस्योअपनेसिरकौरतिटीको
॥२५॥अपपर्यायोक्ति॥कौनहुएककअटष्ठतेअनहीकौएजुहूएकमिष्ठिआपनेइष्टकोपर्यायोकतिसो
य॥२६॥षेलननहीमतरंजअलीनिमेंआयहितेनहांहुरआपकियौकाहूकेवुलाएरी लागेमिलषेलनेनमि
लकैमनहरैदेनलागेदावआपरैमनभाएरी उठिगईमिसमिसहीजिनहीतिनकेसमायकीसोदोऊर
हेछकिछापरी चोकिरैतिहिछिनरापांजहूकेमेरीआलीजलजसेलोचनजलदसेह्वैआएरी॥२७॥

ने
मातंगनामचं
डालकाताके
पुत्रकेपीछेफि
रेहै॥यहितो
तिदापदअर्थ

मातंगअसी
ताकेपुत्रकी
रछाकरीप्रा
हतेकुडाया
यहिउलुसिप

इहांसाधनसबी
सेसाधकजोना
यकाताकीसि
द्धसंभोगरूपता
कोभोगकीयोस
षीने॥८
मयुकरसाहकी
सिद्धदुलहुराम
नेभोगी

हरैरवोक१ आपर२ उहिर२

कामके मुषकी उपमा इस्त्री के मुषको कवि नहीं देत हे
याते ओर सो अर्थ लजको सदु ननेरा मुष है षके मदनमो
वदनके कथनको ग्रहन करत हे तासे एक रवे लागत है किवा

कवि रू २८ 28

अथ जुक्ति ॥ जैसो जाको बुद्धिबलि कहि पतै सो रूप ताको कवि कुल युक्ति यह हवरनैं बहु तन सरूप ॥ २८ ॥
मदनवदनलेतलाजको सदन देषि जदपि जगतजीव मोहवे को है छमी कोटि कोटि चंद्रमानवारषार वा
रडारे जाके काज ब्रजराज आज लोहे संजमी के मो दास सविलास तेरे मुषको सुवास सषी सुन आर
सरीहा रसनि लेरमी मित्र देव छिति दुगि दंड दलको सकु लु ... जाके ताके कहों कोन वात की क
मी ॥ २९ ॥ इति श्रीकविप्रियाके सबदा ... विनायां द्वादश: प्रभाव: ॥ १२ ॥ अथ समाहित ॥ हेतन क्यौ
हू होत जहां देव जोग तें काज ताहि समाहित ... कहि वरनत कवि सिरताज ॥ १ ॥ रसिकप्रिया ॥ छं दविसोछ
की लीषु षभानुकी कुवरि आजु रही है नी रूप मदमान मद छकिके मारहू तें मुकमार नंद के कुमार ताहि आए परि
मनावन सयान सब तके कै हलिहसिसोहै करिक रिपांयपरि परिके सो राय की सो जवर है जीय ज कि के तिहू
समै उठे घन घोर घोर दामिनी सी लागी लोटस्याम उर नितुरसो लपटिके ॥ २ ॥ सात हू दीपनिके अवनीपति
हारर हे जीय में जवजानें वीस विसे हन भंग भयो सुक ह्यो अब केसव को धनु तानें सोककी आगलगी परि
पूरन आय गए घनस्याम विहानै जानकीके जनकादिकके सव फूलउठे न रूपुंन्य पुराने ॥ ३ ॥ सुसिद्धालं
कार ॥ साधि साधि औरै मरै औरै भोगें सिद्ध तासो कहत सुसिद्ध सव जे हैं वुद्धि समृद्धि ॥ ४ ॥ मूलनु सो फल फूल
सवेदलजैसी कछू रसरीत चलीजू भाजनभोजनभूषनभामिनिभौन भरी भव भांनभलीजू उ सन आस	वकैउना
नवासन वास सुवासन जान विमानथलीजू केसव कै कै महाजन लोग मरे सुव भोग वेलै लै वलीजू ॥ ५ ॥ जैसे ॥
सष्यासं चिसंचिमरैसहर सपुपानकरत सुष षनिषनिमरत गवारकूपजलपथिक पीयत सुष वागवानवहि
मरत फूलवांधत उदार नर पचिपचिमर हि सुवार भूप भोजन निकरत वर भूषनसुनार गढ़िगढ़िमरहिभामिनी
सवकल्यान सो भरीहुई ५

28A

भूषितकरननन कहिके सबलेषक निषिमरहिपंडितयह हिपुरानगनि ॥ ६ ॥ अप्रसिद्धालंकार ॥ साधनसाधे
पक भुव भुगवे सिद्ध अनेक तासोंकहित प्रसिद्ध सबके सब कहित विवेक ॥ ७ ॥ मातके मोह पिता परितोष
नेकेवलराम भरे रिसभारे औगुनएक ही अर्जुनको छितिमंडल के सब छत्रीय मारे देवपुरीकहिओ
यपुरीजनके सबदास बडे अरुवारे रूकरखान समेत सबै हरिचंदके सत्य सनेह सिधारे ॥ ८ ॥ अथ विपरी
तअलंकार ॥ कारज साधककेजहांसाधन वाधकहोय तासों सब विपरीत कहि कहित सयाने लोय ॥ ९ ॥
नाहते नाहर जिवजे वरीते साधक रिझालैट्य रिवीथिकाव साव तिवननकी सिवहिसिवाहूमेदपारति
जिनकी माया माया हूनजाने छायछल नितननिकी राधाजू सोकहाकहौ औहिनिकी सुनैसिषसा
थिनसहित विषरहितफननिकी कौंनपरै वीचवीच आगि औनसहिसके वीचपारीअंगनाअनेक अंग
ननिकी ॥ १० ॥ साधनसयानो कोऊ हाथन हथिआर रघुनाथजूकी जस्यकोनुरंगगहिराख्योई काकूनेक
छोटी सिरछोटी छोटीकाकपछ पांचहीवरसके नजुद्ध अभिलाख्योई नीलनलअंगदसहितजामवंतहैं
नुमंतहेअनंत जिननीरनिधनाख्योई [illegible] सदीपदीपभूपनिसों रघुकुलवजीतिकै विजयरस
चाख्योई ॥ ११ ॥ अथ रूपक ॥ उपमहि [illegible] मिल्योवरनियरूप ताहीसो सब कहित हैं केसवरूपक
रूप ॥ १२ ॥ वदनचंद्र लोचनकमलवाहुपासजैयोजानि क [illegible] अरु भूलताविंवापरनिवषानि ॥ १३ ॥
ताकेभेदअनेकमैंतीनैकहेसुभाव अदेभुतपक विरुद्ध अरु रूपकरूपकनाव ॥ १४ ॥ अथ अद्भुतरूपक ॥
सदाएक रसवर्निय औरनिजाहिमान अद्भुतरूपककहितहैंतासोंवुद्धिनिधान ॥ १५ ॥ सोभासरवरमा
हिफूल्योईरहितसषीरजोराजहंसनिसमीपसुषदानीय केसोदासआसपाससोरभकेलोभयनेआ

उपमाकेरूपसोंउपमेयको
वरननकरीयेजहां ५

Margin notes (left): छायानामसूर्जकी स्त्रीकोअोकांतिको अोप्रतिविंवकोंअो शद्दको ७४ — मा ५
Margin note (right): कुम

रूपओ भावैमनकाविकार
जहांवरनियेद का

प्रथमदरसननायककोनायककोतनको
बचनसषीसोतुलसीवनवृंदावनमे ३

कवि
मू
२६
29

ननिकेदेवभोरभ्रमनवषानिए होतजोतद्दिनदूनी निसमैसहिसगुनी सूरजसुहृदचाहचंद्रमानमानिए श्री
नकोसदनछूईसबैनमदनमैसोकमलवदनजगजाहकीकोजानिए ॥१६॥ अथविसदरूपक ॥ जहांक
हीएग्रनमिलकछुमिलसकलविधिअर्थ सोविसदरूपकहैकेसवबुद्धसमर्थ ॥१७॥ सोनेकीएकलता
तुलसीवनकोवरनोसुनिवुद्दिसकैछू केसवदासमनोजम[illegible]ाहिफलेफलश्रीफलसेंदै फूलस
रोजरह्योतिनऊपरमरूपनिरूपितचि[illegible] तापरएकसुओसुभतापरषेलनवालकषंजनकेदु ॥१८॥
अथरूपकरूपक ॥ रूपभांवजहांवनि[illegible]हुबुद्दिविवेक रूपकरूपककहितकविकेसवदासअने
क ॥१९॥ काछेसितासितकेसबपातुरज्योपुनरीनिविचारो कोटकटाछचलैगतिभेदनचावनन्नायक
नेहनिनारो वाजनेहैमदुहासमृदंगसुदीपनिदीपनिकोउजियारो देषतहोहरिदेषनुमेयहहोनहै
आषनहीमेअषारो ॥२०॥ अथदीपक ॥ वाचक्रियागनद्रव्यकोवरनहुकरइकठोर दीपकदीपतिकही
तहैकेसवकविसिरमोर ॥२१॥ दीपकरूपअनेकहैमैवरनेदैरूप मनिमालातासोकहैकेसवसवकविभू
प ॥२२॥ अथमनिदीपक ॥ वरषासरदवसंतससिसुभतासोमसुगंध प्रेमपवनमषनभवनदीपकदी
पकवेधु ॥२३॥ इनमैएकजुवरनियेकौनहुबुद्धिविलास तासोमनिदीपकसदाकहियतकेसोदास ॥२४॥
अथमहरिननैनहेरिहेरिहरिकीसोहरषिहरषितमनेजिनहरतुहै केसोदासआसपासपरमप्रकाससो
विलासनिविलासककछूकहिनपरतुहै भांतिभांतिभामिनीभवनकहूभूषेभवसुभगसुभायसुभसो
भाकोधरनुहै माननिसमेतमानिमानिनी[illegible]वसकरिमेरोमनतेरोदीपदीपतकरतुहै ॥२५॥ दछिन
पवनदछि जछिनीरवनिलगिलोलनकरतलोगलवलीलनाकेफरु केसोदासकेसरकुसमको

दछिनदिसाकोजोपवनहै
सोदछिसामर्थ्यहैकुवेरतकमलियागिरतेलैके
कुवेरतको

न सुमताकल्यानपनद

मूबतरकल्यानर

पवनइत्यादिद्रव्यलोलकरनोक्रिया सीतलसुगंधगुनपवनकेप्रसंगसम तिदीपक॥१॥

२१A

मिलेइत्यादिक्रियाश॥२॥अकासइत्यादिगुनश॥३॥दीपकदेहइत्यादिद्रव्य सोभादेसुमनताहैप्रेमसोमिलापकेवरन्यो॥ओजोवनकोकालहूयांतेमाला दीपकर॥

तरसकननतनुतनुतिनहूंकोसहिनकरतमरु क्योंहूंक्योंहूहोतनहठिसाहसदिलासवससचंपकचंवेलीमिलमा
लतीसुवासहारु सीतलसुगंधमंदगतिनंदनंदकोसोपावनकहांतेतेजतोरिवेकोमानतरु॥२६॥ अथमा
लादीपक॥सवैमिलैजहिवरनिएदेसकालवुध्यिवंत मालादीपककहितहैताकेभेदअनंत॥२७॥दीप
कदेहदसासोमिलेसुरसामिलतेजहिजेभजगावै जागिकेजोतसवैसमुफैतमसोपिसुतोसुमनादरसावै॥
सोसुमनारचैरूपकोरूपकरूपसुकामकलाउयजावै कामसुकेसवप्रेमवढावतप्रेमलैप्रानपियाहिमि
लावै॥२८॥वैननिकीघोरसुनिमोरनिकेसोरसुनिसुनिसुनिकेसवअलापआलीजनको दामिनिदमिक
देषदीपकीदीपतिदेषदेषिदेषिसुमहेजदेषदसनसुवनकौ कुंकमकीवासघनसारकीसुवासमईफूल
नकीवाससमनफूलकेमिलनकों हसिहसिमिलेदोऊअनहीमनापमानछूटगयोपहीले राधिकारवन
कौ॥२९॥अथप्रहेलिकावरनन॥वरननवस्तुदुरायजहांकौनहुएकप्रकार तासोकहितप्रहेलिकाक
विकुलवुद्धि[illegible]र॥३०॥सोभितसतताईसमिरउनसठिलोचनलेषि छप्पनपदजानौतहांवीसवाहुवरदेस
षि॥३१॥अभाकरमंडल॥चरअअठारहि[illegible]पालोचनसततईस मारतिहैप्रतिपालकैसोभवग्यारहिसीस
॥३२॥तोयसुनवहीदेवताहैपछीजिहगे[illegible]साईआषिहैंबिचकेचजसदेह॥३३॥अर्कमंडलदेषैसुनेन
षायकजूपायनजुवतीजाति केसवचलततेहारईवाम[illegible]॥३४॥रसताहै॥केसवताकेनामके
आषरहीयदोय स्पैभषनमित्रकेउलटेदूषनहोय॥३५॥राजा॥जातिलतादुहआवरहितामकहेसवको
य सुयेसषसुषभछिएउलटेअवरहोय॥३६॥हाथ॥सवसुषचाहेमांगयोजोप्रियएकहिवार चंदगहे
जहांराहुकोजैहोतिहिदरवार॥३७॥वीरवलकोदरवार॥असेसामूरदिषायससषिजीयजानतसवकोय॥

वहर॥१९कमस्तकहरिकेसिवकेपांच५चारमस्तकब्रह्माके४एकलछमीजीके एकपारवतीकेएकगरुडकोएकवृषभकोएकहंसकोएकसूरजकोओरतीन [illegible] सूर्यकीस्त्रीहैभवानीकोवाहनवेलदोलीजे॥असनकोसिर१अस्वके [illegible] पदावलविसेषहेर

लो देहइसीजोदीप कहैदसाताम्र नअवस्थाकोओ वत्तीकोतेजता मवलकोओप्र भावको४

भगवानलछमी गरुडमहादेवपा रवतीइनकेचरन सेरकेवेलके८चार भुजायगवानल छमीमहादेवपार वतीतीनोकीइस जालंधर भग वानलछमीगरुडदो हादेतेत्रमहादेव के१५वेलपर्वती सिहदोदोइनकेसी सभगवानलछमी ॥विसुमहादेव हैसहिवाहनओ गरुड [illegible]

॥ढुवमिलाप॥

कवि
स
३९
30

पीठलगावनजातुरसकलानीसीरीहोय॥ १५॥परहतिजहांकरनकछुऔरहीउपजपरतकछुऔर नाहीपरिहतिजानयहकेसवकविसिरमौर॥१६॥रसिकप्रिया॥हसिबोलतनहीसुहसेसवकेसव लाजभगावतलोगभगे कछूवानवलावतयोहचलेमनआननहीमनमत्यजगे सषिनंजु कहेसुहनीमनमेरहेजानइहेनहियेउमगे हसिस्योनेव[illegible]सारतहीअंगुरीनपसारनलो गलगे॥४०॥हायगह्योवृजनाथ[illegible]कूटगई धुरयोरजनाई॥पानमधेमुषनैनरचौल

हमनेसाचीकही
कपोल

चित्रारसीदेषिकहेहसठाई देषपरि[illegible]मोहनसोमनमोहिलियेसजनीसुषदाई लालगोपा लेनषछतनेरेदियेजेमहाछविछाई॥४१॥जीवदीयोजिनजन्मदीयोजगजाहीकीजोतिवडीजग जांनै ताहीसोवैरमनेवचकायकरैकितकेसवकोउरआनै मूंषकनेरिषिसिहकस्योफिरताही कौमूषिबरोबवितानै ऐसोकछूयहिकालिहैजाकोभलोकरियसुवुरोकरिमानै॥४२॥ इतिश्रीकेसोदासविरचितायांकविप्रियायांत्रयोदशप्रभावः॥१३॥अथउपमालंकारवरनन॥ रूपसीलगुनहोयसमज्योक्योहूंअनुसार तासोउपमाकहितकविकेसववहुतप्रकार॥१॥नामसंस महेतुअभूतअतिअद्भुतविक्रयाजान दूषनभूषनमोहमयनियमगुनाधिकआन॥२॥अतिशय उत्प्रेक्षितोकहोश्लेषधर्मविपरीत निर्नयलाछिनकोपमाअसंभाविनामीत॥३॥वुद्धिविरोधीमंा लोपमाऔपरस्परईस उपमाभेदअनेकहैमेवरनैइकवीस॥४॥जहांनहीतिधीरकछुसवसंदेहस रूप सोसंसयउपमासदावरननहैकविभूप॥५॥षंजनहैमनरंजनकेसवरंजनुनैनकियोमतिजोकी॥ संसोपमा
लछिना१२

सषीसोनायकानाककीसुदंता पूछेहै॥१

30A मीठीसुधाकिसुधाधरकीदुतिदंतनिकीकियोदाडिमहीकी चंदमलोमुषचंदकियोसखिसूरतिकाम
कीकाहूकीनीकी कोमलपंकजकैपदपंकजप्रानपियारेकीमूरतिपीकी॥६॥अथहेतोपमालछन॥
होतजुकोनहूहेतुतेअतिउत्तमसोहीन ताहीसोहेतूपमाकेसवकहतप्रवीन॥७॥अमलकमलकुलके
लितललितगतिवेलिसोवलितमधुमाधुवीकोपानीय मृगमदमरदिकपूरधूरचूरियगकेसरकोकेस
वविलासपहिचानीय फेलिकैचंवेलीकरिचंपकसोकेलिसेईसेवतीसमेतहेतुकेतकीसोजानीये ह्रिल
मिलमालतीसोआवतीसमीरजवनवतेरोमुखवाससासतोवषानीये॥८॥अथअभूतोपमा॥उपमा
जायकहीनहीजाकोरूपनिहारि सोअभूतउपमाकहीकेसवदासविचारि॥९॥रसिकप्रिया॥दुरिहैक्यो
ही भूषनवसनदुतिजोवनकीदेहकीजोन्हहोतत्योंसऐसीरातिहै नाहकोसुवासलागैहूहैकेसीकेसवसु
भावहीकोवासभोरभीरफारैषातहै देषितेरोसूरतकीमूरतिविसूरतिहोलालनकेदृगदेषिवेकोलालि
चातिहै चलिहैक्योचंदमुषीकुचनके ... कचनकेभारतेलचिककेदिजातहै॥१०॥अदभुतोपमा॥
जैसीभईनहोतअवआगेकहेनकोय ... ऐसेवरनियसु ... तोपमाहोय॥११॥प्रीतमकोउपमा
न ननमाननिज्ञानस्यानविरीफरिफावै ... विलोकनि ... निवोलतोकेसवमोद्वहावै॥
हावहूभावप्रभावसुभावकेभावनिभामिनिचित्तहरावै ऐसेविलासज्योहोहिसरोजमैसोउपमामुष
नेरेकीपावै॥१२॥अथविक्रियोपमा॥क्योहूक्योहूवरनियैकोनहुएकउपाय विक्रियउपमाहोततहां
वरनतकेसोराय॥१३॥केसोदासकुंदनकेकोसतेप्रकासमानचिंतामनीओपनीसोओपकेउतारीसी॥

कवि
मू
२१
अ

इंदुके उदोततैं उकीरऐसी काढी सवसार ससरससो भासारतें निकारीसी सोधैंकीसी सोधीदेहसुधासोंसु
धारीभावधारीदेवलोकतें निकिसिपुते उधारीसी आजुयासौंह सिषेलिवोलचाललेहुलालकालयकवा
लत्याबोकामकीकुमारीसी॥१४॥अथदूषनेोपमा॥जहांदूषनगनवरनिएभूषनभावदुराय दूषन
उपमाहोततहांवुधजनकहितवनाय॥१५॥रसिकप्रिया॥जैसोवदनकेसवसोमसरोजसुधामधुरंगोनि
देहदहेहै दाडमकेफलश्रीफलविद्रुम[illegible]ककैाटिकवा[illegible]कोककपोतकरीअहिकेसरिको
किलकीरकुचीलकहेहै अंगअनूपम[illegible]केउनकीउपमाकहिवेईरहेहैं॥१६॥अथभूषनेोपमा॥
दूषदूरदुरायजहिवरननभूषनभाय भूषनउपमाहोततनहांवरननकविकविराय॥१७॥सुवरनजुतसु
रवरनकेलिनपुनिभैरवसोमिलतिगतिललिलतविताननिहै पावनप्रगटदुतिदुजनिकीदेषियतदीप
निदीपनअतिसुतसुषदानीहै सोभासुभसानी[illegible]परिमारपनिधानीदीहकलुषहपानीमानीसव
जगजानीहै पुरवकेपुरेउन्यसुनिपप्रवीनरायनेरीवानीगंगाजीकोपानीहै॥१८॥अथमोहोपमा॥रू
पकेअनुरूपज्योंकोनहुविधिमनजाय नाहीसामेभ्रोपमासकलेकहितकविराय॥१९॥षेलततन
षेलककूटासीनहसितहदिसुननतनकानगाननानवानसीवहै औहतनअवरनउझलतदिगवरसोसं
वज्यौसवरागिदुषदेहकौदहै मूलहूनसूवैफूलिफूलिकुमलानजानषातवीरादुनहा[illegible]वानकाहूसोक
है देषिदेषिमुषचंदकेसवचकोरसमचंदसुषीचंदहूकेविंवसौचितैरहे॥२०॥नियमोपमालक्षन॥एके
हिसमजहांवरनियमनक्रमवचनविसेष वेसोदासप्रकासवसनियमोपमासुलेष॥२१॥कलिनक
लंकैकेतुकेतुअरिसेतगात भोगजोगकोअजोगरोगहीकोथलसो पूनोहीकोपूरनपैप्रति

ललितराग
मेरीरानी
हैन

सुतभ[illegible]हजिसगंगा
सुषकेदेनेवालीहै

कलंकैकी [illegible]
पताकाकरियुक्तहैं॥१

ध्येय परमआछेजोअर्थताकीनिधिहै भगवानकेगुनगा
वतहैयांतेदीहवडोजोपापताहिकाटिवेकोकृपानी
तरवारलोगनतेमानीहै॥१८

बर पद क्र श्री गननषतिननसमान ली मयदेसकेछहलनजोरट

33A कोटकलपनसावही कोमलग्रमलभयेकमलानिवासभयसुंदरसुकासमनजदपिभ्रमावही पायो
पदेब्रसमुतपद मतिपद मनितेरेपदपदवीकोपदपेनपावही ॥१०॥ पदांगुनी॥ अंगुलीचंपककीकलीजी
वनमूरप्रमान तारार विसरसिमुमनमनुनगगनिनषनसमान॥११॥ विछुयावांकग्रनोटकीनोहिनउपमा
पतंग आन सोभाप्रभानेरंगगनिहंस सतनुत्रान॥१२॥ चंपककीदलहुंने भलीपदअंगुरीवालकीहू परसेहैं॥
सुषसुदेसलसैनषयोजनुप्रीतमकेहगदेववसेहै वांकग्रानोटवनी विछिअ्रानवि भूषितजोतिजरायग्र
सेहै केसवसोमसरोजनऊपरकोपमनैननुत्रानकसेहै॥१३॥ [illegible] नूपररकाजेचमति लोचनगुनगनहार॥
कोमलबलज जाचक सपाठकमपुपंजामिकेवंपुनिवार॥१४॥ गतिनकेहारकि विहारकेपाहरूरूपकि पौप्रतिहाररति
पतिकेनिलयके हंसगतिनायककिगुहगुनगायक कि श्रवनसुहायके कि मायकहेमयके केसवकमलमे
लग्रलिकुलकुननत केपौ [illegible] ॥१५॥ जेहरि॥ जेहरिजयकेकनकलिनकेसवदासमुजा
न मालासालासुमसभासीमासमसोपान॥१६॥ कोमलकूमलकूलनूपरनवलग्रलिकुलनकीसालाकि
पौकेसवसुमायकी चरनसरोरुहरसमि[illegible]कि पौविछियाकुनितकलहंसनिकीवैठकवनायकी गजनिकी
हंसनिकीजीतनगतिनेरीगतिवांपीजय[illegible]सोभासुषदायकी अमिलसुमिलसीहीमदनसदनकीकि
जगमगेपगजुगजेहरिजरायकी॥१७॥ [illegible]रनन॥ उरुकरि[illegible]लितमककरभसोभसोलीनेचकेवाक
पलपुलिनसमवरननितंवनपीन॥१८॥ कोमलकमलमुषि[illegible]तजानुमेरेवलवीरजकेमनहिहरत
है तोरमसुमायसमरंभासोसदंभग्रहकेसवकरभहूकीसोभानिदरतुहै कोटरतिराजब्रजराजसिरताजकी
सोदेषिदेषि राजराजलाजनेमरतिहै मोविमोचिमदहेवसकलसंकोचसोवसुपग्रापसुंडनिकीकुंडलीकर
तुहै॥१९॥ चहूंग्रोरवितचोरवांकचकाचकमनिसुंदरसुंदरसनदरसनहीनेहै दिसिसुनसुषनिधारुवेकासुष
नषसुरनवहायवेकोकेसवप्रवीनेहै सवहीकेमननिहरनिकनिहरिहूकेमनमथवेकोमनमथहाथदीनेहै
प्रतिपुनितसुमनतिनचयके॥ हाटकवरतमनस्यामलजटतपगनूपरजुगलाकिपोवाजेहैविजयके॥१९
चमके मषनहरी

क्रामी नि॰५ ल२ ल२

के वि मू ३४ रुचिसुचसकुचिमकेलिकैनरूननेरेकाहूंनपचनुरनिनेवचकंकीनेहै ॥२०॥ कटिउदररोमावली॥ कटिग्रति
सूछमउदरदुतिचलदलदरसउनमांन रोमलतानमपमग्रसिचारू चितीनसमान॥२१॥ भूतकीमिठा
ईजैसीसापुकीकुठाईतैसीस्मारकीदिठाईश्रैसीछीनकटि हैरिनुहै धीरकोसोहासकेसोदामदासीको
३५कुचम४ सेसुषसारकीसीसंकग्रंकेरंककेसोविनुहै सूमकोसादानमनरूदकोसोज्ञानगोरीगोरकोसोमान
याहि॰५ मैंज्ञानसमदिनुहे कौनेहैसवारीहूं भानुकीकुमारी [illegible] निपटकपटकोसोहिनुहै ॥२२॥ रो
मावलीमंडउदरवरनन॥ किधौकाम[illegible]भवई है सिंगारवेल्लिसीचकैवहाईनाभिकूपमनमोहि
ये किधौहरिनैनषंजरीटनिकेषेलिवे [illegible] मिकेसोदासनषपककेरेषरोहिये किधौचलदलपरपीयको
कपटज्वरढूंढिवेकोमंत्रलिषिलोचननिजोहिये सुंदरउदरसुभसुंदरीकीरोमराजीकिधौचितचातु
वरनन रीकीचोटीचारूसोहिये ॥२३॥ कुचवरनन॥ कुचवरनिपकेसवकमलसमान सिवगिरश्रीफलमठ
म॰५ गुछफलसुभरसकुंभमांन॥२४॥ किधौमनोहरमनिहारदुतिसरषेलैजोवनकलसकुंभसोमनद
रसहै मोहिनीकेमटकिधौइंदिराकेमंदिरकिइंदीवरईदुमुषीसोरमसरसहै आनंदकेकंदकिधौअं
गहैंअनंगहीकेवाहनजुकेसोदासवरसवरसहै एरीवृषभानकीकुमारीतेरेकुचकिधौरूपअनरू
पजोनरूपकेकरसहै ॥२५॥ अथभुजवरनन॥ करपंकजपल्लववरनभुजविसलतासुपास रत्नतार
काकुसमसरनबरूवकेसवदास॥२६॥ केसोदासगोरेगोरेगोलकामसूलहरभामिनिकेभुजमूल
भाइसेउतारेहैं सोमसुषवरसतमाषनसेपरसनदरसनकेचनसेकठिनसुधारेहैं वलयवलितबाहदेषिरी
केहरिनाहिंमानोमनवारिवेकोंपातीयोंविचारेहैं मलिनसरूमलमुषपंकमेंदुरापदुषदेषेजायछांतिनिमें

ले

कवि ३६ 36

सेज कियो सकल सुजान ताकी सषी सुषदानी हे कियो सुषकंज मे कलोलको ने सेवे द्विज सम सवताकी छवताकी कविता नियानी हे ॥४८॥ वानी वर्नन ॥ वानी वीनावेन अल सुकवि वासुरससमव नीयेर

क किन्नरगान सो भन सुभ सम अर्थमय केशवदास वषान ॥४९॥ कामकी दुहाई कि सुहाई सषी माधुरी की ईदरा के मंद [illegible] फाई उपजत [illegible] कि सादरी कि मोदकी कि सो

औरसीवारु ५ दरी कि चातुरी की मात तन अजत [illegible] यानी अनुरागन की ठकुरानी मोहे दयिदा नी के रोको ककलाल जत है पेरी मे रहे जरानी तेरी वरवानी कि यो वानी हू की वीन सुष सुष मे वजत है ॥५०॥ कपोल वर्नन ॥ मुकर वधूके कपोल सम केशवदास प्रमान तिलप्र तिलके फूलसम

मह अम सम

सून तरु नीरस मय कैनास का वषान ॥५१॥ कियो हर मनोरथ रथ की सुपथ भूम मीन रथ तरकसके समान रथ हू मतन सकत छूके कियो रूप दीपन के आसन रहचर रुच मिली मृगलोचन मरीच काम नोनेकी चोचइन केसमनासका की रीच है कियो श्रुतकुंडल मकर सर केशोदास चितये ते चित चक चौंध के चलत चे गोरे वर्नीयेद

गोरे गाल अतु अमल अमोल तेरे ललित कपोल कियो मेन के मुकर द्वै ॥५२॥ नासका वर्नन ॥

सुगंधी वा लेजो केशव सुगंध स्वास सिद्धन की गुहा कियो परम प्रसिद्ध सुभ सोभन सुवास का कियो [illegible] सोहाती हे सुंदर स्वास सोई भये सिद्ध तिनकी गुहा

ओमन मीन की कुवेनी कियो कुंदन की हीवलोल लोचन विलास का मुकताले [illegible] ल सुगंधी जिसनास काकीर

कियो काम के मन मीन की कुबेनी का य र॥ ताला व नेका पात्र है॥ अथवा काम जो की वरता की कुवे नी है नायक के मन रूपी मीन को पकरके य रहै॥ २१

चंचल नेत्रो के विलास करने की कुंदन की हद है॥ २

मोतीयो वा [illegible] रीहै कि [illegible]

[illegible] का मुनन [illegible] कियो

परमलतनामसुग जिवावनवालीरै
धीकाव

35A

के

मदनजीवकासुषजननिमनमोहनीविलास निपटकिपानीकपटकीरतै...का
मुषवास॥४३॥ किधोमयोउदितअनंगजूकोअंगउरसुरभितअंगराग द्राहेदे हुकी...॥
किधोचितचातुरीचवेलीचारुफूलरहीफैल्योवासकेसवप्रकासकरसुषको॥ किधो

मनोह= फूरनप्रेमसौ करनफूल

कियेफूरनप्रेम सैांकरनफूल्ले कीगंधहै ४४

परमलप्रेमपूरनावतसनको किधोवरवानीवनमालीकेवपुषको॥ किधोपायोप्रान
पनहृदयकमलफूल्योताकोगंधवंधकिसुगंधसुषसुको॥४४॥ सुषरागवर्नन॥ अरनो

हूकेअंगकोराग रागहैकियेअनुरागहै ४६

देराजीवमैअंगरागअनुराग॥रूपभूपरतराजसोराजतसुषसुषराग यथाक॥ केशोदासरा
गरागनीनकोकिअंगरागकिधोद्विजसेवतहैसंध्यामलीमोरकी अरुनरदनवहुवदन

द्विपाठ॥रतनकी षान॥

सदनकिधोवहिईफलकफूलकतनहूअरकी किधोभाषाभूषनकीमननिकोचाक

वहुतचमक

चकचोरलेतचितचालनेरेचितनेरकिसवरसलागरह्योअनुरागकिधोनाहनैननकोकि
धोरुचिराचीनेरेतहनीतमोरकी॥४८॥ रसनावर्नन॥नका उक्तोमलवर्नीयेकोविदअल

म

रसोकीदेवीईष्व रीवर्नीये॥ अथवा रसोकीदेनवाली

अलोल केशवदेवीरसनकीसरसरसकमृदुवोल॥४७॥ यथाक॰ देषतहीआर्यीप
लवाधीजातवाथासभएथाजूकीरसनासरूपकेसीएनीहे आछीआछीवातनकी
जननीसीराजतहेरसनकीदेवीकिधोपचपहिचानीहे केशोदाससकलसुवासकेसी

अलोलक्याअलवेलीवर्नीयेंदु नायककेचित्तकी गतिकोप

लालसा करदेहै॥१ ६/५३ ५३

लतायनष

36A

नंदलालललालकरैकालके लागरही लोक लाजषंजननयनकि योपियमनरंजनकि
अंजननववालके ५९ भ्रूजुगवर्नन त्रिगुटीकुटलपल्लवअपरेषाषड्गअनूप केशा
वदासमुधामयवर्नश्रवनकरकूप ६० यथाकवित्त॥ कियोलागीपंकजकेअंकपंक
लीकहकियोकेशवमयंकअंकअंक[illegible]सुमायको जे[illegible]कोकिमंत्रअनुरागकोकि
मंत्रनकोवीजअयऊरयत्रमा[illegible]सनसिंगारकोकिकामकोमरासनहेसासन
लिख्योहैप्रेमपरनप्रभायको रोष[illegible]वषविषपियूषविसेषमयमामनीकीमोहकियो
मौनहायभायको॥६१॥ श्रवनवर्नन॥रागरवनमाजनभवनमोमनश्रवनपवित्र केशव
लोचनलाजकेमनकेमंत्रीमित्र॥६२॥रागनकेआरकेविरागकेविमोकरैमंत्रकेमंडार
हठरूढकेरवनहे ग्यानकेविवरकियोतनयकेतनके तनकनककचोराहररसअचवनहे॥
प्रुतनकेकूपकियोमनकेसुमित्ररूपकियोकेशोदासरूपमूपकेभवनहे लाजकेनयन
कियोवयनसचिवकियो[illegible]टादासरलेतेनश्रवनहै॥६३॥ कर्नफूलवर्नन॥ मनम[illegible]
यताटंकजुगललतलदपरमानरननरुनवलचक्रसेकेशवकुसमसमान ६४ क[illegible]
पहिरेकर्नफूलदेषीमेकुवरऐकसुनहोकुवरकान्हमोभासुषदानिये तिनकेतनकी[illegible]
जीनेजोतवंनसमकेशवअनंतगतकेसउरआनीये मानोकामदेवजूकेवेरका[illegible]

जेप्रेसमाव का कियोलषकीहद मेविषकावेहहै॥ ६

हावभाव काहरहै ७

कियोप्रसप्रेमके प्रभावकीप्राप्त्यहै ५

ग

दोसाकर्नफूल ३

लजाकेतेत्रा के मनके मंत्री मित्रवर्नो॥८

गीत मे रवनवाते पात्रग्रो भवन संदरकानोके[illegible]

संपूरनमुगंधीकाव्हरजोकमलताके। तीनर ... कनु ...
मद्धमैरसकाविंदुहैकमलपरश्रोसके तकेजलकातरगहेतर ...
मोतीजेसाहै॥४

सुरदेवताश्रेना सकाके ... 3

लनमुकंदजूकीकियोसुरसेयनकोएणीकप्रकासवा त्रिभुवनरूपताकोनुगनो ...॥केश
केतोयकेनुरंगकितरुनीनेरीनासका॥५३॥नाकमोतीवर्नन॥केशवञ्रनंदकेदफल ...
दुमकरंदमनपतंगकोदीपगननकमोतिजगवंद ५४ यथाक केशोदाससकलसुव ...
निवाससषीकियेंश्ररिविंदमद्धविंदमकरंदको कियोचंदमंडलमैसोहतञ्रसुरगुर ... यो मुक
गोदचंदहूकीषेलेसुनचंदको काहैगुनरूपकामदिनादिनदूनोकियोसूच्यतहैचंदफलञ्रा

बुद्ध स्वर्गकीश्रानाय काकेनाककेमो तीसवीनीकाहै ६

नंदकेकंदको नाकनायकानहूंतेनीकोनकुमोतीनाकमानोमनउरफरह्योहैनंदनंद
पपीहा
को ५५ नैनवर्नन लोचनचारचकोरसमचातेककंजकुरंग ञ्रंजनजुनञ्रलमीनस
मषंजनमुकेनकुरंग ५६ पीयमनदूतकियेप्रेमरथसूतकियोभवरञ्रभूतवपवासकेसु
रंगहै चितवनचहूंञ्रोरचितचोरचे ... सषचंदकेचकोरकियोकेशवकुरंगहै वानमदभंज
नकिषेलवेकोषंजनकिरंजनकु ... सवरस ... वकेतुरंगहै सोभासरलीनमीनकुवलरसभी
ननलननवीनकियोनैनवहुरंगहै॥ ... ॥ञ्रंजनवर्न ... चवबुन सिंगाररसतूलबत मपूरेपा
नकजोलो मनरंजनञ्रंजनसमैवर्ननहैकवराज ५८ यथाक कियोरसरंजरसरसत सिंगाररसकेरस मैरसेहूयेहै॥
ञ्रसितकियोललनवलिनविषविषसे ... मालकैं कियोजगजीतवेकोराजारननाथहाथ
बाहनबनायेकेशोदासचलचालके चितचातपातककिचितचोरवेकोतमदेषवेको

रापनो ... रसाकीदा ... ३

मोतीसम तु सु बिनामुषीके बानहैर